तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अद्भुत प्रतिमायें

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन, बड़ा मंदिर टीकमगढ़ (म.प्र.)

3. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, पपौरा चौराहा के निकट, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में काले संगमरमर में पद्मासनस्थ, नौ सर्प फणावलियों वाला जिनबिम्ब है, जिसके पादपीठ पर बैठा हुआ 'हाथी' चिह्नित हुआ है (चित्र क्र. 3)।

संकलनः निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराज, मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - www.sanskarsagar.org\knowledge

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		मार्च 2025	
16	रविवार	द्वितीया	हस्त
17	सोमवार	तृतीया	चित्रा दिन/रात
18	मंगलवार	चतुर्थी	स्वाती
19	बुधवार	पंचमी	विशाखा
20	गुरुवार	षष्ठी	अनुराधा
21	शुक्रवार	सप्तमी	ज्येष्ठा
22	शनिवार	अष्टमी	मूल
23	रविवार	नवमी	पूर्वाषाढ
24	सोमवार	दशमी	उत्तराषाढ
25	मंगलवार	एकादशी	श्रवण
26	बुधवार	द्वादशी	धनिष्ठा
27	गुरूवार	त्रयोदशी	शतभिषा
28	शुक्रवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपाद
29	शनिवार	अमावस	उत्तराभाद्रपद
30	रविवार	प्रतिपदा	रेवती
31	सोमवार	द्वितीया/तृतीया	अश्विनी
		अप्रैल 2025	
1	मंगलवार	चतुर्थी	भरणी
2	बुधवार	पंचमी	कृत्तिका
3	गुरुवार	षष्ठी	रोहिणी मृगशिरा
4	शुक्रवार	सप्तमी	आर्द्रा
5	शनिवार	अष्टमी	पुनर्वसु
6	रविवार	नवमी	पुष्य दि./रा.
7	सोमवार	दशमी	पुष्य
8	मंगलवार	एकादशी	आश्लेषा
9	बुधवार	द्वादशी	मघा
10	गुरुवार	त्रयोदशी	पूर्वाफाल्गुनी
11	शुक्रवार	चतुर्दशी	उत्तराफाल्गुनी
12	शनिवार	पूर्णिमा	हस्त
13	रविवार	प्रतिपदा	चित्रा
14	सोमवार	प्रतिपदा	स्वाती
15	मंगलवार	द्वितीया	विशाखा

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः मार्च-16,17,20,24,30,31
मशीनरीप्रारंभः मार्च-17,20,21,26,31
वाहन खरीदनेः मार्च-20,26,27 अप्रैल-5,12,14

तीर्थंकर कल्याणक

18 मार्च : भगवान पार्श्वनाथ जी ज्ञान कल्याणक
19 मार्च : भगवान चन्द्रप्रभ जी गर्भ कल्याणक
22 मार्च : भगवान शीतलनाथ जी गर्भ कल्याणक
23 मार्च : भगवान आदिनाथ जी जन्म तप कल्याणक
29 मार्च : भगवान अनंतनाथ जी ज्ञान मोक्ष कल्याणक
29 मार्च : भगवान अरनाथ जी मोक्ष कल्याणक
30 मार्च : भगवान मल्लिनाथ गर्भ कल्याणक
31 मार्च : भगवान कुंथुनाथ ज्ञान कल्याणक
02 अप्रैल : भगवान अजितनाथ जी मोक्ष कल्याणक
03 अप्रैल : भगवान संभवनाथ जी मोक्ष कल्याणक
08 अप्रैल : भगवान सुमतिनाथ जी जन्म ज्ञान मोक्ष क.
10 अप्रैल : भगवान महावीरस्वामी जी जन्म कल्याणक
12 अप्रैल : भगवान पद्मप्रभ जी ज्ञान कल्याणक
15 अप्रैल : भगवान पार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

23 मार्चः तीर्थंकर दिवस
29 मार्चः लब्धिविधान व्रत प्रारंभ
31 मार्चः लब्धिविधान व्रत पूर्ण
02 अप्रैलः दशलक्षण व्रत प्रारंभ, पुष्पांजलि व्रत प्रारंभ
03 अप्रैलः रोहिणी व्रत
06 अप्रैलः पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
10 अप्रैलः रत्नत्रय व्रत प्रारंभ, महावीर जयंती
11 अप्रैलः दशलक्षण व्रत पूर्ण
12 अप्रैलः रत्नत्रय व्रत पूर्ण
13 अप्रैलः षोडशकारण व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

16 मार्चः 06/35 बजे से 11/45 बजे तक ।
19 मार्चः 20/50 बजे से 30/31 बजे तक ।
20 मार्चः 06/31 बजे से 23/31 बजे तक ।
23 मार्चः 28/18 बजे से 30/27 बजे तक ।
24 मार्चः 28/27 बजे से 30/26 बजे तक ।
30 मार्चः 16/35 बजे से 30/20 बजे तक ।
01 अप्रैलः 11/06 बजे से 30/18 बजे तक ।
02 अप्रैलः 06/18 बजे से 30/17 बजे तक ।
06 अप्रैलः 06/15 बजे से 30/14 बजे तक ।
07 अप्रैलः 06/14 बजे से 06/25 बजे तक ।
08 अप्रैलः 06/13 बजे से 07/55 बजे तक ।

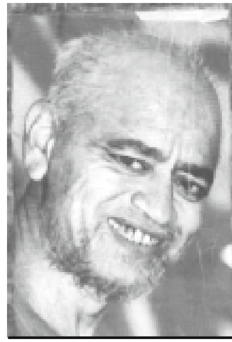

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 311 • मार्च 2025
• वीर नि.संवत 2551-52 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 2024-25 का पुरुस्कार वितरण एवं परिणाम 08
• द्रव्य और पर्याय की व्यवस्था 19
• कोटा शिक्षा के साथ बना आत्महत्या का केन्द्र 23
• पाहुडद्वय टीका और चूर्णिसूत्र 25
• दक्षिण कोरिया में आयुर्वेद को बढ़ावा दे रही 30
• जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि मूकमाटी का 38वाँ स्वर्णिम समापन समारोह 32
• आगमानुरूप अनुशासित चर्या के धनीः पं. गुलाबचंद्र जी पुष्प 46
• जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी पर सौ रूपये का सिक्का जारी 48
• जैनेन्द्र सिद्धांतकोष के कर्त्ता क्षुल्लक सिद्धांतसागर 55
• **वरिष्ठ नागरिकः** वर्तमान का आनंद लें और खुश रहें 57
• आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की प्रथम समाधि दिवस पर सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं चरण प्रतिष्ठा सम्पन्न 58
• एपेन्डेक्स स्वस्थ्य जीवन का तराजू एपेन्डिसाइटिस रोग, रोग कारण व नियंत्रण उपाय 60

बाल कहानी

• विनम्र मंत्री 63

कविता

• विनयप्रमुख 29
• अंतरिक्ष प्रभु पार्श्व निराला 31
• रहम धरम 34
• भूल जाते 35
• नई दुनिया रचेंगे 44

कहानी

• कहानी पर सवाल 50

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 18
चलो देखें यात्रा : 35 • आगम दर्शन :36 • माथा पच्ची : 37 • पुराण प्रेरणा : 38
• कैरियर गाइड : 39 • दुनिया भर की बातें : 40 • इसे भी जानिये: 44
•दिशा बोध : 45• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 57 • हास्य तरंग-पाककला : 62
• बाल संस्कार डेस्क : 63 • संस्कार गीत व बाल कविता : 64 • समाचार : 65

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–3193601
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, भारत में एक देश एक चुनाव को लेकर के काफी लम्बी बहस चल रही है सत्तापक्ष का मानना है कि यदि सभी संस्थाओं के चुनाव एक साथ हो जाते हैं तो धन समय और शक्ति की बचत होने से राष्ट्रीय विकास का मार्ग सुगम हो जाता है । बार-बार चुनाव प्रचार के लिये नेताओं को एक-एक, दो-दो महीनें तक अपना समय देना पड़ता है जिससे राष्ट्र का सकारात्मक कार्य रूक जाता है सत्ता पक्ष के इस तर्क से कई बुद्धि जीवी सहमत होते हुए दिखाई दे रहे है किन्तु विपक्ष के अड़ियल रूख से लोकतंत्र समाप्त होने का खतरा बढ़ा रहा है । इस सकारात्मक पहल को आगे नहीं बढ़ाया जा रहा है। विपक्ष को हर रचनात्मक कदम का स्वागत करना चाहिए यह समय की माँग है।

राजकुमार जैन (पुष्प), इंदौर

• सम्पादक महोदय, विगत माह प्रयागराज में महाकुंभ का मेला आयोजित हुआ जिस मेले में संतों के कई अखाड़े आये उन अखाड़ों में एक पंचअनी दिगम्बर अखाड़ा भी पवित्र स्नान करने आया इससे ऐसा लगा कि दिगम्बर साधना पद्धति को हिन्दु धर्म में आज भी अपनाया जा रहा है। क्योंकि वेद उपनिषद और पुराण में बात रसना तथा आशाम्बर गणन परिधान जैसे शब्दों से दिगम्बरों की मान्यता को संबोधित किया गया है। सन्यास के छह प्रकारों की व्याख्या मिलती है अवधूत साधना में संत साधक नग्न होकर साधना करते हैं। इससे दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति का बखूबी समर्थन होता है।

ब्र. राजेश जैन, टड़ा

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर फरवरी के अंक को देखा अंक के एक लेख ने मुझे आकर्षित कर लिया पंडित कैलाशचंद जी सिद्धांत शास्त्री के णमो लोए सव्वसाहूणं लेख ने हमारी जैन साधु सम्बन्धी सम्पूर्ण मान्यताओं को बदल दिया दिगम्बर साधु के प्रति एक नई शक्ति भीतर से उमड़ने लगी और हमने यह पाया कि दिगम्बर जैन साधु के चरित्र चिन्तन में जो आध्यात्मिक तत्त्व होता है। वह बाहर से नहीं अपितु भीतर से ही बेजोड़ होता है। इस आध्यात्मिक साधना के लिए अपरिग्रह वृत्ति से जोड़ देने पर सदैव-सदैव के लिए साधु वंदनीय हो जाते हैं ।

ऐसे परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी के प्रति पंडित कैलाशचंद जी सिद्धांत शास्त्री का वंदनीय भाव लेख में झलक उठा है अतः हम भी समाधिस्थ आचार्य श्री को अपना कोटि-कोटि नमोस्तु निवेदित करने के लिए समर्पित हो जाते हैं ।

पुष्पा जैन, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, दिल्ली चुनाव में आप पार्टी ने हरियाणा से यमुना में जहर मिलाने का सुगुफा छोड़ा था यह कहा था कि भाजपा दिल्ली में जहर फैलाकर लोगों को बीमार करना चाहती है यह मुद्दा चुनाव आयोग तक भी गया परंतु अरविन्द केजरीवाल अपनी बात को सिद्ध नहीं कर पाये इससे ऐसा लगता है कि कभी कभी ईमानदारी को चोला ओड़ने वाले झूठ फैलाने में माहिर होते है इनसे सावधान रहना चाहिये तथा अपवाहों से प्रभावित होकर भीड़वादी नहीं बनना चाहिये।

नीरज जैन दिगम्बर, दिल्ली

भक्ति तरंग

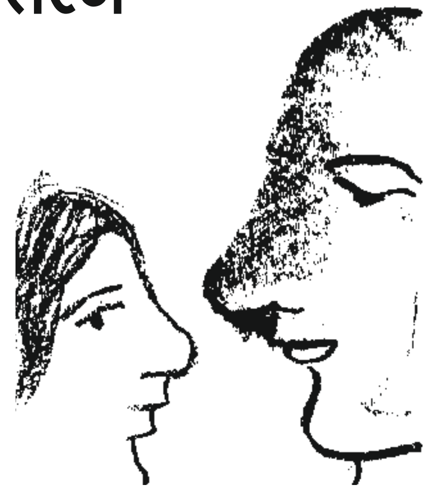

हम शरण प्रार्थी

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी, नेमि जी ! तुम ही हो ज्ञानी ।। टेक ।।
तुम्हीं देव गुरु तुम्हीं हमारे, सकल दरब जानी ।।
तुम समान कोउ देव न देखा, तीन भवन छानी ।
आप तरे भवि जीवनि तारे, ममता नहिं आनी ।। ज्ञानी ।।1।।
और देव सब रागी द्वेषी, कामी कै मानी ।
तुम हो वीतराग अकषायी, तजि राजुल रानी ।। ज्ञानी ।।2।।
यह संसार दुःख ज्वाला तजि, भये मुकतधानी ।
द्यानत-दास निकास जगत तैं , हम गरीब प्रानी ।। ज्ञानी ।।3।।

हे नेमिनाथ भगवान ! आप ज्ञानी हो।

आप ही हमारे देव हैं, आप ही गुरु हैं। आप सभी द्रव्यों को उनके गुणों और पर्यायों सहित जानते हैं।

तीन लोक में आपके समान वीतरागी कोई देव नहीं है यह सत्य भली प्रकार जान लिया है। आप स्वयं इस भवसागर से तिर गए, यह औरों को भी इस भवसागर से पार हो जाने में निमित्त (बनते) हैं, सहायक हैं परंतु इससे मोह-ममता नहीं है। आप वीतरागी हैं।

अन्य सभी देव राग-द्वेष सहित हैं। या तो वे कामनायुक्त अथवा मान से पीड़ित हैं। परंतु आप वीतरागी हैं, आपने अपनी होने वाली रानी राजुल को छोड़कर तप किया है।

आप इस संसार के दुःखों को अग्नि को छोड़कर मोक्ष के वासी हो गये।

द्यानतराय कहते हैं कि भगवन् ! हम दीन हैं, असहाय हैं, बेबस हैं, हमें इस जगत से बाहर निकालिये, जगत से मुक्त कीजिए।

संस्कार प्रवाह

हम सबक कब लेंगे

धार्मिक आयोजन होते हैं होना भी चाहिए और धार्मिक आयोजनों में श्रद्धालुओं का समूह अगर नहीं होता है तो आयोजन की सफलता भी हमेशा नहीं मानी जाती है जब हम किसी भी धार्मिक आयोजन में श्रद्धालुओं को इकट्ठा करते हैं तो उस समय श्रद्धालुओं और आयोजकों के बीच में एक जो कम्यूनिकेशन गैप हो जाता है वह हमेशा दर्द का कारण बनता है प्रशासन आयोजन और श्रद्धालु तीन चीजें होती है इन तीन चीजों के बीच में एक सामंजस्य की आवश्यकता होती है और जब सामंजस्य स्थापित करने के लिए चलते हैं तो निश्चित तौर पर एक सबसे बड़ी बात ये होती है कि श्रद्धालुओं में भी अनुशासन होना चाहिए आयोजकों में अपने आयोजन करने के प्रति पूरा समर्पण होना चाहिये और प्रशासन का सहयोग होना चाहिये।

अभी जो दो घटनाएँ हमारे सामने आई हैं महाकुंभ में भगदड़ होना और इसके उपरांत उत्तरप्रदेश के बागपत जिले के बड़ौत के अंदर मानस्तंभ के ऊपर चल रहे भगवान ऋषभदेव के अभिषेक के अंतर्गत सीढ़ी का टूट जाना और उसमें भी सात व्यक्तियों कि मृत्यु हो जाना महाकुंभ में तीस व्यक्तियों की मृत्यु हो जाना ये सब एक दुखद घटना तो है लेकिन इससे सब अंतर में सोचा जाए तो थोड़े से अनुशासन की भी एक बहुत बड़ी आवश्यकता होती है पुण्य के लाभ के लिये या धर्म के लाभ के लिये सबसे पहले धर्मलाभ मैं लू या पुण्यलाभ मैं लूं इस भावना से उत्प्रेरित होकर जो लोग भगदड़ मचा देते हैं वे अनुशासनहीन होते हैं। भीड़ और पानी के संदर्भ में एक बात कही जा सकती है कि भीड़ और पानी यदि चलता रहे तो कोई दुर्घटना नहीं होती है यदि मान लीजिए उस सीढ़ी पर सब श्रद्धालु अभिषेक करके उतरते चले जाते, चढ़ते चले जाते तो सीढ़ी नहीं टूटती लेकिन अगर वहाँ पर रूक गये जो सीढ़ी टूटी इसके लिये जिम्मेदार वो अपने को कभी नहीं मानते है। जो पुण्यलाभ या धर्मलाभ कि लालसा में धार्मिक आयोजन में उपस्थित होते हैं उन सबसे मेरा यही कहना है कि इस घटना से यही शिक्षा लेना चाहिये कि हमें कभी भी अधिक पुण्यलाभ या स्वयं के पुण्यलाभ के लिये ही सब कुछ नहीं करना चाहिये धर्मलाभ के लिये सबको लाभ मिले इस पवित्र भावना के साथ हमें आयोजनों में श्रद्धा के साथ जाना चाहिए और व्यवस्था के अनुकूल चलकर के हमें धर्म को आगे बढ़ाना चाहिये ताकि धर्म कि भी अवमानना ना हो और हमारे अंदर का अनुशासन भी बना रहे और इसी कारण से सभी इन दोनों घटना से सारे लोग सबक लेंगे और सबक लेकर समाज एक परिवर्तन की ओर बढ़ेगा। यही परिवर्तन आगे होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों को शोक में नहीं अपितु प्रसन्नता ओर आनंद को सवंर्धन करने वाला बनायेगा।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 2024-25 का पुरुस्कार वितरण

शिरपुर (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री शीतलसागर जी, मुनि श्री वृषभसागर, मुनि श्री अभिनंदनसागरजी, मुनि श्री सुपार्श्वसागर, एलक श्री सिद्धांतसागर जी, एलक श्री तीर्थसागरजी, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, ब्र. तात्या भैया के सान्निध्य में जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 2024-25 का पुरूस्कार वितरण श्री दिगम्बर जैन अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर जैन निकलंक निकेतन में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रथम समाधि दिवस के अवसर पर 18फरवरी 2025 को दिया गया। प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश से 290 प्रतियोगियों ने भाग लिया जिसमें पठारी से-32, जबलपुर-24, कटंगी-2, शहपुरा-1, कटनी-1, शाहगढ़-17, देवरी-1, नरसिंहपुर 11, गाडरवारा-4, सिरोंज-17, बड़ामलहरा-29, गेरतगंज-1, अशोकनगर-18, मंदसौर-1, बांसा तारखेड़ा-1, बांदकपुर-1, सिवनी-1, बहौरीबंद-4, अभाना-13, दलपतपुर-21, बंडा-2, केसली-12, डिण्डोरी-8, इंदौर-7, जबेरा-11, सानौधा-3, मंडीबामौरा-14, रहली-10, विदिशा-2, सागर-4, दमोह-1, पथरिया-1, बुढ़ार-1, भोपाल-1, महाराष्ट्र-45 जिसमें वाशिम-22, शिरपुर-11, कोपरगांव-5, मालेगांव-2, पूना-2, नागपुर-1, नंदूरवार-1, करमाला सोलापुर-1, उत्तरप्रदेश में ललितपुर-10, गाजियाबाद-1, दिल्ली-1, राजस्थान-1, गुजरात-10 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें **प्रथम स्थान श्रीमति समता जैन इंदौर** को **एक लाख रूपये** के साथ शील्ड देकर- श्रीमति माया गजेन्द्र जैन (गिन्नी ग्रुप) इंदौर की और से, **द्वितीय स्थान अमित जैन कटनी इक्वान हजार रूपये** शील्ड देकर- श्रीमती मणि आजाद जी मोदी (मोदी प्रिंटर्स) इंदौर की और से, **तृतीय स्थान, श्रीमती अनीता जैन ललितपुर इक्तीस हजार रूपये** शील्ड देकर कु. पलक जैन नीरज जैन (स्वाती इंटरप्राइजेस) दिल्ली की और से दिया गया। तथा सभी को सान्त्वना पुरुस्कार दिया गया।

इसी अवसर पर जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 2025-26 का लोकार्पण किया गया जिसमें इस वर्ष श्री दिगम्बर जैन युवक संघ पंचबालयति मंदिर इंदौर ने **श्री श्रेणिक चरित्र** (आचार्य शुभचन्द्राचार्य जी कृत), **वरांग चारित्र** (भट्टारक वर्द्धमान कवि विरचित), **संस्कार मंजूषा** (आर्यिका श्री विज्ञानमति माताजी), **युग निर्माता महापुरुष** (पंडित मूलचंद वत्सल दमोह), **विद्यावाणी भाग-1** (आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा मुखरित प्रवचनों का संग्रह), **विराट स्वरूप विद्यासागर** (आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के संयम स्वर्ण महोत्सव पर श्रवणबेलगोला ब्रह्मचारी संगोष्ठी 2018), **श्रमणत्व के क्षितिज्** आचार्य शांतिसागर जी के 100वें आचार्य पदारोहण वर्ष के उपलक्ष्य में (ब्र. सुनील सांधेलीय) **परमार्थ देशना आचार्य विद्यासागर महाराज जी प्रवचनांश की सूक्ति संग्रह** (मुनि श्री कुंथुसागर जी महाराज द्वारा संकलित), **जैन ज्योतिष विद्या पंचाग, मुमुक्षू कहानी संग्रह** (एलक सिद्धांतसागर जी द्वारा रचित), **संस्कार सागर अप्रैल 2024 से फरवरी 2025 तक,** से 1000 प्रश्न पूछे जा रहे हैं जो आपके ज्ञान वर्धन के लिये सहकारी बनेगें। एवं आपको सम्मान प्राप्त होगा। एक पंथ दो काज प्रतिस्पर्धा में भाग लें और ज्ञानवर्धन करें।

यह प्रश्न पत्र संस्कार सागर कार्यालय इंदौर अथवा जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंत्र 2025-26 के व्हाट्सअप ग्रुप पर तथा www.sanskarsagar.org बेवसाईट पर जाकर प्रश्नपत्र एवं पुस्तकें प्राप्त की जा सकती है। यदि आपको कोई समस्या आती है तो ब्र. जिनेश मलैया 8989505108 पर सम्पर्क करें।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच -2024-25

संस्कार सागर, श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागरनगर, इन्दौर-10

परीक्षा देने वालों के नाम की सूची

प्रतियोगी का नाम	स्थान	प्राप्तांक 1000 प्रश्न	प्राप्तांक 500 प्रश्न	योग
श्रीमति नीता अजय जैन	पठारी (म.प्र.)	824		824
श्रीमति दीपिका रविन्द्र जैन	पठारी (म.प्र.)	823	325	1148
श्रीमति रागिनी सोहित जैन	पठारी (म.प्र.)	831		831
रत्ना मनोज जैन	पठारी (म.प्र.)	854		854
श्रीमति अलका नीतेश जैन	पठारी (म.प्र.)	808	346	1154
श्रीमति रूचि रूपेश जैन	पठारी (म.प्र.)	834		834
श्रीमति मंजू जैन	पठारी (म.प्र.)	858		858
श्रीमति नमिता जैन	पठारी (म.प्र.)	871	398	1269
श्रीमति सुभि दीपेश जैन	पठारी (म.प्र.)	818	332	1150
श्रीमति संगीता प्रदीप जैन	पठारी (म.प्र.)	843	313	1156
श्रीमति प्रतिभा अतिशय जैन	पठारी (म.प्र.)	805	486	1291
श्रीमति सुरक्षा सर्वेश जैन	पठारी (म.प्र.)	849		849
श्रीमति रूही अनुज जैन	पठारी (म.प्र.)	861	322	1183
श्रीमति पिंकी जैन	पठारी (म.प्र.)	851		851
श्रीमति किरण जैन	पठारी (म.प्र.)	836	322	1158
श्रीमति आशिका जैन	पठारी (म.प्र.)	861		861
श्रीमति सरिता कैलाश जैन	पठारी (म.प्र.)	842	327	1159
श्रीमति रीना जैन	पठारी (म.प्र.)	856		856
श्रीमति संध्या जैन	पठारी (म.प्र.)	871	403	1274
श्रीमति रजनी जैन	पठारी (म.प्र.)	863	398	1261
श्रीमति सोनम शैलेन्द्र जैन	पठारी (म.प्र.)	865		865
कु. आयुषी जैन	पठारी (म.प्र.)	556	481	1037
श्रीमति खुशी जैन	पठारी (म.प्र.)	828	332	1160
श्रीमति शालिनी जैन	पठारी (म.प्र.)	853		853
श्रीमति रंजना जैन	पठारी (म.प्र.)	556	486	1042
मनीषा अंकित जैन	पठारी (म.प्र.)	865		865
श्रीमति शशि सिंघई	पठारी (म.प्र.)	873	235	1108
श्रीमति सारिका राहुल जैन	पठारी (म.प्र.)	875	235	1110
श्रीमति मीना सिंघई	पठारी (म.प्र.)	860		860
श्रीमति सुरभि अंशुल जैन	पठारी (म.प्र.)	828	240	1068
समर्थ जैन	पठारी (म.प्र.)	842		842
सुचिता जैन	पठारी (म.प्र.)	845		845
श्रीमति अंजु रजनीकांत जैन	जबलपुर (म.प्र.)	891	458	1349

श्रीमति प्रमिला राजकुमार जैन	जबलपुर (म.प्र.)	877	458	1335
श्रीमति प्रमिला अनिल जैन	जबलपुर (म.प्र.)	902	465	1367
श्रीमति मीना सतीश जैन	जबलपुर (म.प्र.)	905	479	1384
कु. अमिता जैन	जबलपुर (म.प्र.)	907	493	1300
श्रीमति विमला जैन	जबलपुर (म.प्र.)	796		796
श्रीमति स्वीटी जैन	जबलपुर (म.प्र.)	377		377
श्रीमति सुनीता जैन	जबलपुर (म.प्र.)	905	458	1363
श्रीमति दीपा रंजन जैन	जबलपुर (म.प्र.)	900	493	1393
कु. प्रिन्सी जैन	जबलपुर (म.प्र.)	881		881
श्रीमति अनामिका जैन	जबलपुर (म.प्र.)	902	458	1260
श्रीमति रजनी जैन	जबलपुर (म.प्र.)	905	329	1234
श्रीमति चंदा जैन	जबलपुर (म.प्र.)	902	486	1388
श्रीमति नीलम जैन	जबलपुर (म.प्र.)	900	486	1386
श्रीमति सुशील कुमारी जैन	जबलपुर (म.प्र.)	810	196	1006
पुष्पा जैन	जबलपुर	920	458	1378
श्रीमति अर्चना राजेश जैन	जबलपुर (म.प्र.)	905	493	1398
श्रीमति अनिता समय जैन	जबलपुर (म.प्र.)	881	451	1332
श्रीमति सरला जैन	जबलपुर (म.प्र.)	887		887
श्रीमति वीणा नीलेश समैया	जबलपुर (म.प्र.)	905		905
श्रीमति सुलभा रजनीश जैन	जबलपुर (म.प्र.)	907		907
श्रीमति बसंती जैन	जबलपुर (म.प्र.)	901	346	1247
श्रीमति साधना जैन	जबलपुर (म.प्र.)	910	350	1260
अंजली शैलेन्द्र जैन	जबलपुर	900	458	1358
अमित जैन	कटनी	999	500	1499
श्रीमति दीपिका स्वर्णिम जैन	कटंगी (म.प्र.)	897		897
मधु जैन	कटनी (म.प्र.)	901		901
कु. आशिका जैन	शहपुरा भिटोनी	910		910
श्रीमति ममता जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	905	375	1280
प्राची जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	893		893
ब्र. साक्षी जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	950	455	1305
श्रीमति शशि प्रभा जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	907	493	1300
श्रीमति सुरभि सुदीप जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	904	295	1199
श्रीमति सीमा अजित जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	902	315	1217
कु. सुरभि जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	904	225	1129
श्रीमति रेखा जिनेन्द्र सिंघई	शाहगढ़ (म.प्र.)	945	457	1402
श्रीमति संतोष राकेश जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	930	280	1210
श्रीमति आरती जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	920		920
कु. आरोही जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	940	486	1426
दर्शन जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	877		877

श्रीमति राजकुमारी जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	905		905
श्रीमति सपना सुबोध जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	907	225	1132
श्रीमति जयंती राजकुमार जैन	शाहगढ़ (म.प्र.)	651		651
श्रीमति इन्द्रा सेठ	शाहगढ़ (म.प्र.)	885	144	1029
श्रीमति प्रीति जैन	शाहगढ़(म.प्र.)	891		891
आदीश जैन	देवरीकलां (म.प्र.)	944	467	1411
श्रीमति अर्चना सुधीर सिंघई	नरसिंहपुर (म.प्र.)	905		905
श्रीमति साधना जितेन्द्र जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	907		907
सिन्धु जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	902		902
श्रीमति सौभाग्यवती संजना जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	898		898
श्रीमति मनीशा अशीष जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	895		895
श्रीमति अरूणा जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	789		789
श्रीमति प्रतिभा जैन	नरसिंहपुरा (म.प्र.)	902		902
श्रीमति कोकिला ऋषभ जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	878		878
श्रीमति अनुराधा कमलेश जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	900		900
श्रीमति सीमा जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	886		886
श्रीमति पूजा जैन	नरसिंहपुर (म.प्र.)	900		900
श्रीमति पुष्पलता जैन	गाडरवाडा (म.प्र.)	905	423	1328
श्रीमति वर्षा सिंघई	गाडरवाडा (म.प्र.)	907	479	1386
श्रीमति मालती जैन	गाडरवाडा (म.प्र.)	906	479	1386
श्रीमति संध्या जैन	गाडरवाडा (म.प्र.)	905		905
श्रीमति शोभा धर्मेन्द्र जैन	सिरोंज (म.प्र.)	898		898
श्रीमति अनीता राजेन्द्र जैन	सिरोंज (म.प्र.)	901	479	1380
श्रीमति प्रीति दीपक जैन	सिरोंज (म.प्र.)	908	467	1375
श्रीमति नीतू संदीप जैन	सिरोंज (म.प्र.)	900	472	1372
श्रीमति माधुरी विकास जैन	सिरोंज (म.प्र.)	919	481	1400
श्रीमति प्रीति प्रवीण जैन	सिरोंज (म.प्र.)	903	460	1363
श्रीमति रिम्पी मनीष जैन	सिरोंज (म.प्र.)	879	479	1358
श्रीमति मोना राहुल जैन	सिरोंज (म.प्र.)	851	460	1311
श्रीमति स्वाति आयुष जैन	सिरोंज (म.प्र.)	474	867	1341
श्रीमति ज्योति राजेश जैन	सिरोंज (म.प्र.)	460	822	1282
श्रीमति संध्या शैलेन्द्र गोहिल	सिरोंज (म.प्र.)	910	469	1379
श्रीमति मोनिका अमित जैन	सिरोंज (म.प्र.)	909	465	1374
श्रीमति अंतरा संजय जैन	सिरोंज (म.प्र.)	909	462	1371
श्रीमति ज्योति राजकुमार जैन	सिरोंज (म.प्र.)	912	479	1391
श्रीमति रानी राजू जैन	सिरोंज (म.प्र.)	907	474	1381
श्रीमति विकास लहरी	सिरोंज (म.प्र.)	909	327	1236
श्रीमति नीतू मनोज जैन	सिरोंज (म.प्र.)	866	430	1296
केशरबाई जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	902		902

रानी जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	905		905
श्रीमति सुनीता जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	921	200	1121
कु. दर्शना जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	836		836
श्रीमति पूर्वी जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	915		915
कु. आयुषी जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	919	215	1134
कु. पवित्रा जैन (फौजदार)	बड़ामलहरा (म.प्र.)	908		908
कु. माही जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	911		911
कु. रोशनी जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	918	422	1340
ममता जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	863		863
श्रीमति मीना जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	897	150	1047
श्रीमति अंकिता दीपेश जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	954	493	1447
श्रीमति सविता जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	885	98	983
अरविन्द कुमार जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	950	362	1312
श्रीमति योग्यता जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	897	373	1270
कु. प्राची जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	893	446	1339
श्रीमति निधी जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	875	344	1219
आकांक्षा जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	951	478	1429
श्रीमति सुशीला जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	883		883
नितिन जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	874	458	1332
श्रीमति प्रीति नितिन जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	902	465	1367
शिखरचंद जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	845	465	1310
श्रीचंद जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	747		747
प्रकाशंचद जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	902		902
रितिक जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	900		900
श्रीमति सीमा सेठ	बड़ामलहरा (म.प्र.)	908	338	1246
ब्र. पिंकी दीदी	बड़ामलहरा (म.प्र.)	980	479	1459
स्वेच्छा जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	905	411	1316
गजरा जैन	बड़ामलहरा (म.प्र.)	955	478	1433
सोना जैन	गेरतगंज (म.प्र.)	950	349	1299
श्रीमति मीता राहुल जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	952	479	1431
श्रीमति दीपिका जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	942	472	1414
श्रीमति किरण राजकुमार जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	910	472	1382
श्रीमति संगीता महावीर जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	917	493	1410
श्रीमति जूली जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	833	472	1305
श्रीमति नीतू जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	926	465	1391
श्रीमति सविता जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	938	460	1398
श्रीमति अनुपमा सचिन जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	907	334	1241
श्रीमति प्रभावना राजीव जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	903	467	1370
श्रीमति ज्योति नरेश जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	884		884

श्रीमति सविता नीरज जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	900	493	1393
श्रीमति अनीता पदमचंद जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	882	472	1354
श्रीमति स्मिता रीतेश जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	908	488	1396
श्रीमति सविता संतोष जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	916	493	1409
सुरभि जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	896	458	1354
याशि जैन, सुनील कुमार	अशोकनगर (म.प्र.)	913	297	1210
श्रीमति वर्षा जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	909	444	1353
श्री सुनीता ललित जैन	अशोकनगर (म.प्र.)	937	493	1430
श्रीमति वर्षा विकास जैन	मंदसौर (म.प्र.)	894		894
श्रीमति शिल्पी जैन	बांसा तारखेड़ा(म.प्र.)	850		850
अनाया जैन	बांदकपुर (म.प्र.)	888		888
श्रीमति अभिलाषा दीपक जैन	सिवनी (म.प्र.)	904	444	1348
श्रीमति नीता जैन	बहोरीबंद (म.प्र.)	502	349	851
काव्या जैन	बहोरीबंद (म.प्र.)	902		902
रश्मि जैन	बहोरीबंद (म.प्र.)	905		905
श्रीमती माधुरी जैन	बहोरीबंद (म.प्र.)	822	237	1089
श्रीमति सोनाली जैन	अभाना (म.प्र.)	915		915
ब्र. आयुषी जैन	अभाना (म.प्र.)	916		916
रितु जैन	अभाना (म.प्र.)	904		904
दीपिका जैन	अभाना (म.प्र.)	914		914
श्रीमति अनीता जैन	अभाना (म.प्र.)	905		905
श्रीमति निशिल जैन	अभाना (म.प्र.)	905		905
आकांक्षा मोदी	अभाना (म.प्र.)	905		905
वैशाली जैन	अभाना (म.प्र.)	895		895
ब्र. स्वाति जैन	अभाना (म.प्र.)	913	465	1378
नैन्सी जैन	अभाना (म.प्र.)	910		910
कु. दिव्या जैन अजय जैन	अभाना (म.प्र.)	925		925
अनुश्री जैन	अभाना (म.प्र.)	929		929
श्रीमति निधि जैन	अभाना (म.प्र.)	899		899
ब्र. अंकिता जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	825		825
श्रीमति कमलाबाई जेन	दलपतपुर (म.प्र.)	860		860
नैन्सी जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	620		620
प्रीति जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	854		854
उपेन्द्र जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	848		848
श्रीमति सुधा जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	839	361	1200
श्रीमति सोना जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	745		745
श्रीमति भारती लोहिया	दलपतपुर (म.प्र.)	848		848
श्रीमति अभिलाषा जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	846		846
श्रीमति अर्चना जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	845	377	1222

श्रीमति अनीता जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	844		844
श्रीमति रीना जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	848	412	1260
श्रीमति विमलादेवी जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	864	395	1259
अनिकेत जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	821	371	1152
श्रीमति अंजली जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	839		839
श्रीमति सरिता जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	834	402	1236
यश जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	844		844
नयनसी जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	846		846
श्रीमति रूचि जैन सिंघई	दलपतपुर (म.प्र.)	846	367	1213
श्रेया जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	850	405	1255
पं. अजयकुमार जैन	दलपतपुर (म.प्र.)	824		824
शोभना जैन	बण्डाबेलई (म.प्र.)	845		845
विशुद्धि जैन	केसली (म.प्र.)	851	46	897
कु. हितेषी जैन	केसली (म.प्र.)	659		659
कु. विधि जैन	केसली (म.प्र.)	860	113	973
श्रीमति यशवंती जैन	केसली (म.प्र.)	180		180
मोनिका जैन	केसली (म.प्र.)	905		905
श्रीमति रजनी जैन	केसली (म.प्र.)	900	261	1161
श्रेया जैन	केसली (म.प्र.)	910		910
वीरेन्द्र सुनीता जैन	केसली (म.प्र.)	220		220
श्रीमति सीमा बड़कुल	केसली (म.प्र.	536		536
ऋषिभा जैन	केसली (म.प्र.)	183		183
रन्नो दीदी	केसली (म.प्र.)	895		895
ब्र. संध्या रानू जैन	केसली (म.प्र.)	816		816
श्रीमति पलक जैन	डिण्डोरी (म.प्र.)	879	479	1358
श्रीमति साधना जैन	डिण्डोरी (म.प्र.)	955		955
श्रीमति कविता जैन	डिण्डोरी (म.प्र.)	947	472	1419
श्रीमति वैशाली जैन	डिण्डोरी (म.प्र.)	892	479	1371
श्रीमति सरोज जैन	डिण्डौरी (म.प्र.)	902	465	1367
श्रीमति हनी आशीष जैन	डिण्डौरी (म.प्र.)	896	395	1291
श्रीमति प्रगति जैन	डिण्डौरी (म.प्र.)	932	479	1311
श्रीमति माया जैन	डिण्डौरी (म.प्र.)	892	472	1364
श्रीमति समता राजकुमार जैन	इंदौर (म.प्र.)	1000	500	1500
राजकुमार जैन	इंदौर (म.प्र.)	1000		1000
अभिषेक जैन	इंदौर (म.प्र.)	1000		1000
एकता जैन	इंदौर (म.प्र.)	1000		1000
श्रीमति अनीता जितेन्द्र जैन	इंदौर (म.प्र.)	917		917
डी.के. जैन	इंदौर (म.प्र.)	651		651
प्रतिक जैन	इंदौर (म.प्र.)	950		950

श्रीमति सुधा नवीन जैन	जबेरा (म.प्र.)	884		887
श्रीमति उषा जैन	जबेरा (म.प्र.)	896	270	1166
श्रीमति ममता जैन	जबेरा (म.प्र.)	607		607
श्रीमति सुनीता मलैया	जबेरा (म.प्र.)	871		871
श्रीमति मनीषा जैन	जबेरा (म.प्र.)	891	275	1166
श्रीमति रश्मि जैन	जबेरा (म.प्र.)	905		905
श्रीमति संगीता जैन	जबेरा (म.प्र.)	938		938
श्रीमति संध्या जैन	जबेरा (म.प्र.)	925		925
श्रीमति संध्या सिंघई	जबेरा (म.प्र.)	952		952
श्रीमति ममता चक्रेश बजाज जैन	जबेरा (म.प्र.)	796		796
ब्र. प्रेमलता दीदी	जबेरा (म.प्र.)	945	261	1206
कु. पलक जैन	सानौधा (म.प्र.)	758	472	1230
चक्रेश जैन	सानौधा (म.प्र.)	899	472	1371
श्रीमति कल्पना जैन	सानौधा (म.प्र.)	900	472	1372
श्रीमति शशि रमेश सिंघई	मंडीबामौरा (म.प्र.)	923		923
श्रीमति सुजाता आशीष जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	947	493	1440
श्रीमति मीना चंद्रकुमार जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	942		942
श्रीमति पायल सचेन्द्र जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	951	479	1430
श्रीमति राखी मनोज जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	928		928
श्रीमति अंजली महेन्द्र जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	941		941
श्रीमति कल्पना हेमंत जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	927		927
श्रीमति प्रिंसी जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	909	216	1125
श्रीमति रेखा जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	942		942
श्रीमति संध्या जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	941		941
श्रीमति सरला जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	910		910
श्रीमति अंजना दिनेशचंद जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	959		959
श्रीमति सरिता जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	927		927
श्रीमति रानू जैन	मंडीबामौरा (म.प्र.)	930		930
श्रीमति कल्पना जैन	रहली (म.प्र.)	332		332
श्रीमति मेघा जैन	रहली (म.प्र.)	877	467	1344
श्रीमति अमिता योगेश जैन	रहली (म.प्र.)	550		550
श्रीमति रिंकी विपिन जैन	रहली (म.प्र.)	545	145	690
श्रीमति सृष्टि जैन	रहली (म.प्र.)	550	148	698
श्रीमति अनीता सिंघई	रहली (म.प्र.)	549	175	724
श्रीमति रूचि विकास जैन	रहली (म.प्र.)	723	165	888
श्रीमति कल्पना राजेश मलैया	रहली (म.प्र.)	910		910
श्रीमति सविता भागचंद जैन	रहली (म.प्र.)	581	101	602
श्रीमति प्राची मनीष मलैया	रहली (म.प्र.)	754		754
श्रीमति अनीता विमल जैन	दमोह (म.प्र.)	895		895

श्रीमति मयूरी नीरज जैन	सागर (म.प्र.)	905	467	1372
श्रीमति रैना रूपक जैन	सागर (म.प्र.)	906	472	1378
रत्नेश जैन	सागर (म.प्र.)	210		210
श्रीमति शिवाली जैन	सागर (म.प्र.)	850		850
कु. आयुषी जैन	बण्डा सागर (म.प्र.)	920	320	1240
श्रीमति राखी जैन	पथरिया (म.प्र.)	900		900
श्रीमति सरिता जैन	विदिशा (म.प्र.)	902		902
श्रीमति सुनीता जैन	विदिशा (म.प्र.)	910		910
श्रीमति संध्या जैन	बुढार (म.प्र.)	875		875
श्रीमति सुरभि जैन	बुढ़ार (म.प्र.)	875	170	1025
नितिका जैन	भोपाल(म.प्र.)	876		876
श्रीमति रंजना मनीष बाकलीवाल	अजमेर (राजस्थान)	939	500	1439
श्रीमति बीना विपुल भाई	गांधीनगर गुजरात	920		920
श्रीमति दिपिका संजय शाह	गांधीनगर गुजरात	840		840
स्मिता शाह	गांधीनगर गुजरात	929		929
सुधाबहन एन शाह	गांधीनगर गुजरात	905		905
जागृति कमलेश जी शाह	गांधीनगर गुजरात	859	77	936
जसुमति चिरंजीवलाल जैन	सूरत गुजरात	905		905
श्रीमति कुसुम सोहनलाल मेहता	गांधीनगर गुजरात	818		818
श्रीमति शिल्पा प्रदीप मेहता	गांधीनगर गुजरात	850		850
श्रीमति साधना रश्मिकांत शाह	गांधीनगर गुजरात	855		855
श्रीमति साधना सुरेशकुमार	गांधीनगर गुजरात	839		839
पायल जैन	नागपुर महाराष्ट्र	886		886
अम्बर जैन	पूना महाराष्ट्र	1000		1000
श्रीमति रूचि जैन	पूना महाराष्ट्र	1000		1000
श्रीमति सोनल राजेश गंगवाल	कोपरगांव महाराष्ट्र	890	458	1348
श्रीमति विशाखा विकास शाह	कोपरगांव महाराष्ट्र	895	458	1353
श्रीमति संगीता सुधीर जैन	कोपरगांव महाराष्ट्र	891		891
श्रीमति साधना प्रवीण जैन	कोपरगांव महाराष्ट्र	898	322	1220
श्रीमति विशाला जैन	कोपरगांव महाराष्ट्र	902		902
श्रीमति अंजु जैन	नंदूरवार महाराष्ट्र	906		906
श्रीमति शिल्पा विपिन दोशी	करमाला सोलापुर	900		900
श्रीमति मालिनी जैन	दिल्ली	938	325	1263
श्रीमति अंजु राकेश जैन	गाजियाबाद (उ.प्र.)	937		937
कु. सौम्या जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	997	500	1497
श्रीमति अनीता जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	998	500	1498
श्रीमति सविता जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	950	462	1412
श्रीमति नीता जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	910	479	1389
श्रीमति पिंकी जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	910	465	1375
श्रीमति सुमन जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	902	405	1307

चन्द्रकुमार जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	906		906
गुलाबचंद जैन (शिक्षक)	ललितपुर (उ.प्र.)	866		866
आंशी अशोक जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	900	467	1367
प्रियल जैन	ललितपुर (उ.प्र.)	920	385	1305
सौरूपाली पवन महाजन	शिरपुर महाराष्ट्र	876		876
शीतल आकाश महाजन	शिरपुर महाराष्ट्र	904		904
सौधरती रोकडे	मालेगांव महाराष्ट्र	900		900
ज्योति राजेन्द्र	मालेगांव महाराष्ट्र	905		905
पूजा बज	वाशिम महाराष्ट्र	902		902
निर्मला गोधा	वाशिम महाराष्ट्र	890		890
रीना सचिन जैन	वाशिम महाराष्ट्र	903	481	1384
राखी देवेन्द्र बज	वाशिम महाराष्ट्र	902	467	1369
पायल हेमंत बज	वाशिम महाराष्ट्र	903	481	1384
मनीष अशोक काला	वाशिम महाराष्ट्र	875		875
सरिता सोनल छाबड़ा	वाशिम महाराष्ट्र	874		874
सीमा बज	वाशिम महाराष्ट्र	879		879
वैशाली सुधीर बज	वाशिम महाराष्ट्र	902		902
पुष्पा कैलाशचंद गोधा	वाशिम महाराष्ट्र	905		905
खुशबु देवेन्द्र जैन	वाशिम महाराष्ट्र	904	481	1385
गुणमाला जी पाटनी	वाशिम महाराष्ट्र	905		905
निलय अमित पाटनी	वाशिम महाराष्ट्र	903	479	1382
रवि बज	वाशिम महाराष्ट्र	909		909
सुनिता रवि बज	वाशिम महाराष्ट्र	910	479	1389
दिया ललित बज	वाशिम महाराष्ट्र	905	472	1377
रानी दीपक छाबडा	वाशिम महाराष्ट्र	908	146	1054
सोनल विमल छाबडा	वाशिम महाराष्ट्र	902		902
वंदना विजय बज	वाशिम महाराष्ट्र	905	486	1391
वैशाली विजय बज	वाशिम महाराष्ट्र	901		901
अल्पना विजय	वाशिम महाराष्ट्र	904		904
वर्षा अजय	वाशिम महाराष्ट्र	901		901
शोभा बज	वाशिम महाराष्ट्र	900	486	1386
अनिता वैभव	शिरपुर महाराष्ट्र	904		904
रेखाबाई महाजन	शिरपुर महाराष्ट्र	908		908
रोहिणी कैलाश	शिरपुर महाराष्ट्र	900	454	1354
अमृता वैभव विश्मवर	शिरपुर महाराष्ट्र	908		908
प्राचिता कैलाश विश्मवर	शिरपुर महाराष्ट्र	910	479	1389
चैमाली कपिल	शिरपुर महाराष्ट्र	902		902
विमल सुभाष	शिरपुर महाराष्ट्र	903	126	1029
छाया महावीर विश्मबर	शिरपुर महाराष्ट्र	905	197	1102
मोहनी आकाश आहाले	शिरपुर महाराष्ट्र	905	233	1138

सेहत का खजाना पपीता

लेटिन नामः कोरिका पपाया

होम्योपैथी में पपीता से बनी औषधि केरिका पपाया नाम से प्रयोग की जाती है। पपीता भोजन के पहले खाना चाहिए। पाचन संस्थान के रोगों में पपीता खाना उपयोगी है।

पपीता खाने का समय- प्रातः पपीता खाना अधिक लाभदायक है। इससे भूख अच्छी लगती है, कब्ज दूर होती है। दोपहर में खाना खाने के बाद पपीता खाने से भोजन का पाचन अच्छा होता है। शाम को भी भूख लगी हो तो पपीता खायें। पपीता नित्य खाने से स्वस्थ अच्छा रहता है। पपीते का सेवन बुढ़ापे में शक्ति बनाये रखता है। शरीर की दुर्बलताओं को रोकता है।

पोषक तत्वों की दृष्टि से पपीते में 0.6% प्रोटीन तथा 0.5% खनिज पाये जाते हैं। पपीते में विटामिन ए की मात्रा सेव, अंगूर, लीची, अनार आदि से 20 गुना से भी अधिक होती है। इसके अलावा नियासिन, थायोमिन, राइबोफ्लोविन, तथा विटामिन भी इसमें पाये जाते हैं। इसके फलों में एक प्रकार एन्जाइम पाया जाता है जिसे पपेन कहते हैं, जो प्रोटीन के पाचन में सहायक होता है। पपेन का उपयोग दवा के रूप में किया जाता है।

ओषधियों के दुष्प्रभाव, जो अत्याधिक औषधियों के खाने से, निरन्तर दवाइयाँ लेते रहने से उत्पन्न होते हैं, पपीता खाने से दूर हो जाते हैं। डिप्थीरियाँ (Diptheria) टेप वर्म होने पर पका हुआ पपीता खाना लाभदायक है। कैंसर व टी.वी रोग में पपीता खाना लाभदायक है।

मूत्रल- पपीता खाने से पेशाब अधिक आता है। जहां पेशाब अधिक लाना हो, पपीता खिलायें।

उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure)- नित्य प्रातः भूखे पेट चार फाँक (250 ग्राम) पका हुआ पपीता दो-तीन महीने खाते रहें। उच्च रक्त चाप ठीक हो जायेगा।

वात- जोड़ों के दर्द के रोगी पपीता नित्य खायें यह बात दर्द का शमन करता है।

मुँहासे बबासीर (Eiles)- हर प्रकार के बबासीर और मुँहासों में पका हुआ पपीता नित्य प्रातः भूखे पेट एक माह तक खाने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त दम घुटना, पुत्रोत्पत्ति, मासिक धर्म, गर्भपात, अपच, अम्लपित्त, प्लीहा गर्मी दूर करने, दूध-वृद्धि, तिल्ली व पीलिया, लकवा आदि रोगों से विधि अनुसार असर कारक है।

द्रव्य और पर्याय की व्यवस्था

❊ ब्र. अंजना शास्त्री ❊

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम् ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये॥

भारतीय दर्शनों में जैन दर्शन एवं वैशेषिक दर्शन इन दो दर्शनों में द्रव्य गुण- पर्याय की व्याख्या की गई है शेष किसी भी दर्शन ने द्रव्य-गुण पर्याय की व्याख्या नहीं की क्योंकि इनके पास मूल ज्ञान सर्वज्ञ का ज्ञान नहीं था आप स्थूल पर्याय को देख लेते हो परन्तु द्रव्यगुणशीलता को कहां देख पाते हैं।

उदा. भोजन में खीर खाना पसंद है परन्तु चावल बटलोई के अंदर होता है तो कितने बार नीचे से ऊपर-ऊपर से नीचे हुआ है तब कहीं खीर रूप में परिवर्तित होता है। उसी प्रकार ध्यान और तपस्या के संयोग से आत्मा भी ऊपर से नीचे नीचे से ऊपर परिणामों की धारा से परमात्मा बन सकती है यही द्रव्य है।

तत्त्वार्थसूत्र में द्रव्य का लक्षण हैं **-सूत्र सद् द्रव्यलक्षणम्॥29॥**

सूत्रार्थ- द्रव्य का लक्षण सत् है द्रव्य पर्याय की एकता है क्योंकि दोनों में व्यतिरेक (भिन्नता) नहीं है इसलिए द्रव्य पर्याय की एकता है उन दोनों का अस्तित्व पृथक नहीं पाया जाता है। द्रव्य शक्तिमान और पर्यायवाची शक्ति है दोनों के भिन्न-भिन्न द्रव्य और पर्याय में अन्यत्व भिन्नत्व होता है। पृथक-पृथक पदार्थों में भिन्नत्व होता है। पृथक-पृथक पदार्थों में भिन्नत्व होता है इसमें नहीं इनका अस्तित्व एक ही है इन दोनों का द्रव्य, क्षेत्र, काल, भान भिन्न नहीं है। जहाँ द्रव्य है वहीं पर्याय! क्षेत्र में द्रव्य उसमें पर्याय एक ही हैं। दोनों के प्रदेश भिन्न नहीं हैं। द्रव्य की द्रव्य संज्ञा पर्याय की पर्याय संज्ञा है। संज्ञा में अंतर जो उसका ज्ञान है वह पर्याय के द्वारा ही होता है।

सत् का लक्षण-उत्पाद व्यय ध्रोव्य युक्त सत्॥30॥

सूत्रार्थ- जो उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य से युक्त हैं उसका नाम सत् है। द्रव्य एक है पर्याय अनेक है उदा. समुद्र में लहरें होती हैं। लहरों का समूह ही पर्याय है पर्याय का वास्तविक अर्थ वस्तु का अंश है वह भी पर्याय है। अन्वयी को गुण और व्यक्तिरेकी को पर्याय कहते हैं। संज्ञा और संख्या की अन्य अन्य विशेषताएँ अन्य अन्य लक्षण हैं प्रयोजन की वजह से भिन्नता है विषय क्षणिक और प्रयोजन से नाना रूप है एक समय में एक ही पर्याय होती है। मैं जीव हूँ उसमें ही तन्मय हूँ उदा. कपड़ा कपड़ा के वस्त्र तन्मय है अलग नहीं है कपड़ा से ही वस्त्र बने हैं कपड़ा को अलग नहीं कर सकते हैं। वह तन्मय है।

द्रव्य का लक्षण-गुण पर्याय वद् द्रव्यम्॥38॥

सूत्रार्थ- जो गुण और पर्यायों से युक्त है उसका नाम द्रव्य है द्रव्य में गुण होते हैं गुणों में पर्याय होती है द्रव्य उसका आधार है।

शंका- सोनगढ़पंथ गुणों के समूह को द्रव्य कहते है? नहीं गुण और पर्याय के समूह को द्रव्य कहते है। गुण ही द्रव्य का निर्माण करने वाले है। द्रव्य के प्रदेश होते है। गुण के प्रदेश नहीं जो

द्रवणशील है परिणमनशील है उनका नाम द्रव्य है जो द्रव्यत्व का भाव है वह द्रव्य है द्रव्य अपने गुण पर्याय से युक्त वही द्रव्य है उदा. पानी का झरना द्रव्य है।

आचार्य विशुद्धसागर जी ने तत्त्वार्थ सूत्र में कहा है। **अन्वयिनोगुणाः** गुण अन्वयी होते हैं द्रव्य में भेद करने वाले लक्षण को गुण कहते है जिससे एक द्रव्य दूसरे से भिन्न किया जाता है उसी पहचान को गुण कहते है। एक द्रव्य में क्रम से होने वाले परिणामों को पर्याय कहते है।

व्यतिरेकिणः पर्यायाः व्यतिरेकी पर्याय होती है द्रव्य के विकार को पर्याय कहते हैं पर्यायवाची शब्द अंश, पर्याय, भाग, हार, विध, प्रकार, भेद, भंग, गुण पर्यायवाची शब्द शक्ति, लक्ष्य, विशेष, धर्म, रूप, गुण, स्वभाव, प्रकृति, शील आदि ये पर्यायवाची नाम हैं। द्रव्य कभी गुण-पर्याय से रहित नहीं होता है। क्रमवर्ती होती है तथा गुण सहभागी होते है गुण अन्वयी होते है पर्याय व्यतिरेकी होती है आगम में पर्याय की यही व्याख्या है कमबद्ध हमारे मूल आगम में कोई शब्द ही नहीं है। अक्रम का भी 263 समयसागर ग्रंथ के श्लोक कलश में उसका वर्णन है।

नियम सारग्रंथ-आचार्य कुन्द कुंदाचार्य जी

चक्खु अचक्खु ओही तिण्णि विभणिदं विभावदिच्छिति
पज्जाओ दुवियपने सपरा वेक्खो य णिरवेक्खो

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन और अवधिदर्शन ये तीनों विभाव दर्शन हैं। आदि के दो दर्शन मिथ्यात्व से लेकर क्षीण कषाय नामक बारहवें गुण स्थान तक होते हैं और अवधि दर्शन चौथे गुणस्थान से बारहवें तक रहता है। जो परि-सब तरफ से एति भेद को प्राप्त होता है वह पर्याय है।

संस्कृत परिसमन्तात भेदमेति गच्छतीति पर्यायः जिसमें स्व और पर इन दोनों की अपेक्षा रहती है वह स्वपरोक्ष विभाव पर्याय है और जिसमें पर की अपेक्षा नहीं है वह निरपेक्ष स्वभाव पर्याय है। अनंतर, स्वभाव, गुण पर्याय में परिणत जीव द्रव्य ही उपादेय है विभाव गुण पर्यायों से परिणत हेय ऐसा मानकर जिन शुद्ध स्वभाव गुण पर्याय से परिणत हुए सिद्ध परमात्मा का ही चिंतवन करना चाहिए।

आलाप पद्धति-द्रव्य का लक्षण

उत्पाद व्यय ध्रौवय युक्तं सत् ।।7।।

जो उत्पाद व्यय और ध्रौव्य से युक्त है वह सत् है।

उत्पाद अन्तरंग और बहिरंग निमित्त के वश से जो नवीन अवस्था उत्पन्न होती है उसे उत्पाद कहते हैं। जैसे मिट्टी के पिण्ड की घट पर्याया व्यय-पूर्व अवस्था के नाश को व्यय कहते हैं।

जैसे- घर की उत्पत्ति होने पर पिण्ड आकृति का द्रव्य ध्रौव्य अनादि कालीन परिणामिक स्वभाव है उसका व्यय और उत्पाद नहीं होता। किन्तु ध्रुव से स्थिर रहना इसलिए उसे ध्रौव्य कहते हैं।

उदा. पिण्ड और घट अवस्था में मिट्टी का अन्वय बना रहना

द्रव्य के सामान्य गुण 10 दश हैं। इन गुणों में से प्रत्येक द्रव्य में आठ-आठ गुण हैं।

जीव- अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरूलघुत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व, और अमूर्तत्य ये आठ गुण होते हैं।

प्रवचनसार ग्रंथ

सम्भावो कि सहारो गुणेहिंसह एज्जएहिं चित्तेहिं ।।4।।

द्रव्यस्य सव्वकालं, उत्पाद व्यय ध्रुवत्तेहिं ।।

निश्चय करके अस्तित्व ही द्रव्य का स्वभाव है क्योंकि अस्तित्व किसी अन्य निमित्त से उत्पन्न नहीं हुआ।

अनादि अनंत एव रूप प्रवृत्ति से अविनाशी है। विभाव का नहीं किन्तु स्वाभाविक भाव है और गुण गुणी के भेद से यथापि द्रव्य का अस्तित्व पृथक कहा है प्रदेश के बिना द्रव्य से एक रूप है यद्यपि एक द्रव्य से अस्तित्व गुण पृथक है।

दृष्टांत- पीतादि गुण तथा कुंडलादिपर्याय जो कि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा सोना से पृथक नही है। कर्त्ता, साधन और आधार सोना है। यदि सोना नहीं तो कुण्डलादि पर्यायें भी नहीं ये सब स्वभाव है। द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा गुण है मैं जीव हूँ इसमें ही तनमय है।

उत्पाद दिठदिमंगा, विज्जंते पण्जएसु पण्जया दव्वं
हि संति णियदं तम्हा दव्वं सव्वं ।।9।।

उत्पाद व्यय ध्रौव्यभाव पर्याय के आश्रित है और वे पर्याय द्रव्य के आधार हैं पृथक नहीं है क्योंकि द्रव्य पर्यायात्मक है जैसे वृक्ष स्कंध पिंड शाखा और मूलादि रूप हैं परन्तु ये स्कंध मूल शाखा की वृक्ष से जुड़ा पदार्थ नहीं है इसी प्रकार उत्पादादिक में द्रव्य पृथक नहीं है एक ही है द्रव्य अंशी है और उत्पाद व्यय ध्रौव्य अंश है जैसे वृक्ष अंशी है बीज, अंकुर का उत्पाद और वृक्षत्व अंश है। द्रव्य का लक्षण सत् है धर्म परिणत आत्मा धर्म ही है द्रव्य में गुण होते हैं गुणों में पर्याय होती है द्रव्य आधार है पर्याय गुणों में ही होती है सभी का आधार द्रव्य ही है।

गुण आदेय और द्रव्य है आधार है इससे पर्याय भिन्न नही है जो द्रव्यार्थिक निश्चय को ही मानते हैं जो पर्यायार्थिक व्यवहार को मानते हैं जो पर्यायार्थिक व्यवहार को मानते हैं।

शंका- पर्याय भिन्न द्रव्य भिन्न है द्रव्य पर्याय में तनमय है। भिन्न तो तनमय नहीं आत्मा में ही राग द्वेष आदि भाव आत्मा में ही तनमय है जो उत्पाद वही व्यय और धौव्य है। उत्पाद व्यय धौव्य पर्यायों में होते हैं। जो द्रव्य में होते तो सबका ही नाश हो जावे और सब शून्य हो जाने जो द्रव्य का उत्पाद होवे तो समय समय में एक एक द्रव्य उत्पन्न होने से अनन्त द्रव्य हो जावें। और जो द्रव्य धृव होवे तो पर्याय नाश होवे और पर्याय के नाश से द्रव्य का नाश हो जावें इसलिए उत्पादि द्रव्य हो जावे इसलिए उत्पादाकि द्रव्य के आश्रित नहीं हैं। पर्याय के आश्रित है पर्याय उत्पन्न भी होते है नष्ट भी होते हैं। वस्तु की अपेक्षा स्थिर भी होते हैं। इस कारण वे पर्याय में है पर्याय द्रव्य से जुड़े नहीं द्रव्य ही है। पर्याय से रहित द्रव्य एवं द्रव्य से रहित पर्याय नहीं पायी जाती है। क्योंकि द्रव्य एवं पर्याय दोनों अनन्य भूत हैं। विशेष गुण 16 है।

जीव पुदगल में 6-6 गुण पाये जाते हैं।

जीव- जीव में ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, चेतनत्व और अमूर्तत्व ये 6 गुण पाये जाते है।

पुदगल- स्पर्श, रस, गंध, वर्ण मूर्तत्व और अचेतनत्व 6 गुण पाये जाते हैं।

पर्याय- गुण विकाराः पर्यायास्ते द्वेधा

अर्थ व्यंजन पर्याय भेदात् ।।5।।

अर्थ गुणों के विकास को पर्याय कहते है।

1. अर्थ पर्याय 2. व्यंजन पर्याय

अर्थ पर्याय सूक्ष्म होती है क्षण क्षण में नाश होने वाली होती है। और वचनों के अगोचर होती है।

व्यंजन पर्याय स्थूल होती है चिरकाल तक रहने वाली, वचन के अगोचर तथा छद्मस्यों की दृष्टि का विषय भी होती है।

अगुरुलघुगुण का परिणमन स्वाभाविक अर्थ पर्यायें हैं।

ये बारह प्रकार की होती है। 6 हानि रूप एवं 6 वृद्धि रूप

विभाव अर्थ पर्यार्य 6 प्रकार की है।

मिथ्यात्व, कषाय, राग, द्वेष, पुण्य और पाप

व्यंजन पर्याय 2 प्रकार की है।

स्वभाव व्यंजन पर्याय एवं विभावव्यंजन पर्याय

व्यंजन पर्याय के दो भेद है।

द्रव्य व्यंजन पर्याय एवं गुण व्यंजन पर्याय

विभाव द्रव्य व्यंजन पर्यायाश्च चतुर्विधा

नरनारकादिपर्यायाः अथवा चतुर शीतिलक्षयोनया ।।19।।

अर्थ- नर नारक आदि रूप चार प्रकार की अथवा चौरासी लाख योनि रूप जीव की विभाव द्रव्य व्यंजन पर्याय हे।

विभावगुण व्यंजन पर्याय मत्यादयः ।।20।।

मतिज्ञान आदिक जीव की विभाव गुण व्यंजन पर्यायें है।

स्वभावद्रव्य व्यंजन पर्यायाश्चरमशरीरात् किंचिन्नयूनसिद्ध पर्यायाः ।।21।।

अंतिम शरीर से कुछ कम जो सिद्ध पर्याय है वह जीव की स्वभाव द्रव्य व्यंजन पर्याय है।

स्वभाव गुण व्यंजन पर्याया अनंतचतुष्टयरूपा जीवस्य।

अनंतज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्त वीर्य, इन अनन्त चतुष्टय रूप जीव की स्वभाव गुण व्यंजन पर्याय है।

जीव के स्वभाव और विभाव इन गुणों को जानकर पर्यायों को भी जानना चाहिए। अनन्तर स्वभाव गुण पर्यायों से परिणत जीव द्रव्य ही उपादेय है। और विभाव गुण पर्यायों से परिणत हेय है। ऐसा मानकर निज शुद्ध स्वभाव गुण पर्याय से परिणत हुई सिद्ध परमात्मा स्वरूप का ही चिन्तन करना चाहिए।

कोटा शिक्षा के साथ बना आत्महत्या का केन्द्र

✲ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ ✲

राजस्थान के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर कोटा को वर्तमान में देश के प्रमुख शिक्षण नगर के रूप में आज जाना जाता है। सारे देश के छात्र-छात्राएँ यहां एक वर्ष अथवा दो वर्ष रहकर कोचिंग कक्षाओं में अध्ययन कर प्रतियोगी परीक्षाएँ देते हैं। यहां इतने बड़े कोचिंग संस्थान संचालित हैं जिनमें लगभग 1 लाख तक छात्र-छात्राओं को प्रवेश देकर विभिन्न विषयों का कोचिंग दिया जाता है सन् 2015 से आत जक लगभग 9 वर्ष में सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने अकेले कोटा में आत्महत्या की है। वर्ष 2023 में ही पिछले 8 माह में कोचिंग संस्थानों में कोटा में पढ़ने वाले उत्तर प्रदेश, बिहार के 23 बच्चों ने पढ़ाई के बोझ से आत्महत्या कर ली। कोटा पुलिस के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2015 में 17 छात्रों ने आत्महत्या की 2016 में 16, 2017 में 7, 2018 में 20, 2019 में 8 छात्रों ने आत्महत्या की। 2020-21 में कोरोना महामारी के कार ण आत्महत्याओं के आंकड़ों में गिरावट आई क्योंकि छात्र अपने घर चले गए थे। वर्ष 2022 में आंकड़ा फिर 15 पहुंच गया। आत्महत्या की घटनाओं से हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था गंभीर प्रश्नों के घेरे में आ गई है। छात्र-छात्राओं द्वारा निराश, उदास होकर आत्महत्या करने का यह क्रम आज तक जारी है। निरंतर जारी आत्महत्या की घटनाओं से हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था गंभीर प्रश्नों के घेरे आ गई है। कोटा ही नहीं देश के अन्य नगरों में भी हमारे बच्चे जीवन में सफल न होने से दुखी होकर आत्महत्या कर रहे हैं। इन आत्महत्याओं का क्या कारण है, इस देश के कर्णधार राजनेता, बुद्धिजीवी, कलाकार कोई आगे नहीं आए हैं।

क्या वर्तमान परिवेश में हमारी मानवीय संवेदनाएं शून्य हो गई हैं। इससे अधिक संवेदनशील प्रश्न आज कोई दूसरा नहीं है। जब हमारे ही बच्चे जिन्होंने सपने देखे थे, सपने पूरे नहीं होने पर हताश निराश होकर अपने मां-बाप, समाज दोस्तों के ताने तीक्ष्ण व्यंग्य वाणों को सुनकर तंग आकर अपनी जान दे रहे हैं। परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होने पर छात्र द्वारा आत्महत्या कर ली है समाचार कभी-कभी आते थे, मगर पिछले वर्षों में तो आती ही हो गई जब अकेले कोटा नगर में छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या करने का क्रम जारी रखा है। छात्रों द्वारा की जा रही आत्महत्या की घटनाओं की समीक्षा होना चाहिए। इन घटनाओं के लिए हम एक मात्र छात्रों को दोषी नहीं ठहरा सकते। बालक जब किशोर अवस्था में पहुंचता है उस दौरान ही वह कच्ची मिट्टी के घड़े के समान होता है, उस घड़े को जब कुम्हार पकाता है तभी वह पक्का कहलाता है। हम भारत की युवा पीढ़ी का यह दुर्भाग्य ही कहेंगे कि देश के कर्णधार नेता विदेश में जाकर सीना तानकर कहते हैं सारी दुनिया में सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी भारत में है। मगर युवा पीढ़ी के सपनों को साकार रूप देने इन राजनेताओं ने आज तक कोई ठोस कदम नहीं उठाए हैं। जिन छात्रों ने आत्महत्या की है उनमें से कुछ आत्महत्या के पूर्व लिखे पर्चे मिले हैं एक बेटी ने अपनी मां के लिए लिखा है यदि मम्मी सिलेक्शन नहीं हुआ तो किसी से नजरें नहीं मिला पाऊंगी । मैं चाहती थी आप मुझ पर गर्व करें। इसी प्रकार एक और पर्ची मिली जिसमें लिखा है मैं बहुत प्रेशर में था, पापा के पैसे बर्बाद हुए, मैं उनकी अपेक्षा पर खरा नहीं उतर सका। भारत देश प्राचीन संस्कृति को अपने आप में समेटे हुए है। मगर आज मानवीय संवेदनाएं समाप्त हो गई प्रतीत हो रही हैं। छात्रों की लगातार आत्महत्या अगर दुनिया का कोई और

देश होता तो पूरा समाज शहर सड़कों पर उतर आता। भारत में उच्च कोटि के आई.आई.टी, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान है इन संस्थानों में लगभग 10000 सीट हैं, जबकि इन संस्थानों में प्रवेश हर वर्ष लगभग 18 से 20 लाख छात्र-छात्राएं आवेदन देते हैं। 10000 को प्रवेश मिलने के बाद शेष को तो निराशा ही हाथ लगती है। जो छात्र आई.आई.टी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश से वंचित रह जाते हैं, उन्हें प्रायवेट कॉलेजों में प्रवेश लेकर पढ़ाई करनी पड़ती है। हमने यह विचार किया शासकीय एवं निजी कॉलेजों की क्या स्थिति है। भरपूर शुल्क लेने के बाद क्या वहाँ पढ़ाई होती है। इन शिक्षण संस्थानों की दयनीय स्थिति में राज्य सरकारें भी भली भांति परिचित हैं। कोटा में जिन छात्रों ने आत्म हत्यायें की हैं, उनमें अधिकांश बिहार उत्तर प्रदेश आदि हिंदी भाषी राज्यों के बताए गये हैं।

जिनके बेटे ने हायर सेकेण्डरी तक पढ़ाई हिंदी माध्यम से की है उनके मां-बाप कोटा लाकर अंग्रेजी माध्यम की कोचिंग करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। और ऊपर से छात्र-छात्रा पर यह दबाव निरंतर रहता है तेरी कोचिंग पर मेरा पैसा खर्च हो रहा है। परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होना। हिंदी माध्यम से आज तक जिसने शिक्षा प्राप्त की है उसे कोटा जैसे कोचिंग संस्थानों में अपने आप को ढ़ालने में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जो छात्र कोचिंग कक्षाओं में अपना मन नहीं लगा पाते हैं वे उन पुराने छात्रों के मित्र बन जाते हैं। जो पहले से ही असफल हो रहे हैं। उन पुराने छात्रों के साथ रहकर व्यसनों में फंसकर जीवन बर्बाद करने लगते हैं। मां बाप समझते हैं उनका बेटा इंजीनियर या डॉक्टर बनने की तैयारी कर रहा है। इसके विपरीत उनका बेटा गलत मार्ग पर जा रहा है। जब मां बाप को पता चलता है उनका बेटा कोचिंग न करके गलत लाइन पर जा रहा है। बेटे को लाड प्यार अथवा डांट फटकार से समझाने का प्रयास किया जाता है। निराशा भरे इस वातावरण में उस छात्र को आत्महत्या उचित उपाय दिखता है। और वह बिना आगे पीछे की सोच भावावेश में आत्महत्या कर लेता है।

दिगंबर जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी के परम प्रभावक शिष्य क्रांतिकारी संत मुनि प्रमाण सागर जी का कहना है वर्तमान युवा पीढ़ी में संस्कार विहीनता की बढ़ती दुष्प्रवृत्ति का यह घातक परिणाम है। इनमें नकारात्मक सोच विकसित हो रही है और वह जीवन से निराश होकर आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं। मुनिराज का कहना है मां-बाप का यह दायित्व भी है कि वह अपने बच्चों को बचपन से ही संस्कारों की शिक्षा दें। युवा पीढ़ी को नकारात्मक सोच से रोकने सकारात्मक एवं रचनात्मक सोच विकसित करने की आवश्यकता है। हर माता-पिता का यह सोच होता है उसकी संतान अच्छे से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर उच्च पद पर पहुंचकर उनका वहा परिवार का नाम ऊंचा करें। प्रतिस्पर्धा तो होना चाहिए इससे प्रतिभा उभर कर आती है। साथ ही यह भी विचारणीय प्रश्न है कि अंग्रेजों ने लार्ड मेकाले की जो शिक्षा नीति का फार्मूला बनाया था, वह भी आज तक चल रहा हैं। शिक्षा नीति में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। छात्र-छात्राओं में भी हमें इतना आत्मविश्वास जागृत करना होगा कि जीवन में प्रतियोगी परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना यह नहीं मानना होगा कि अब कुछ नहीं बचा सब कुछ नष्ट हो गया। साथ ही माता-पिता, शिक्षक भी बालक को उसकी क्षमता से बड़ी उड़ान के सपने दिखाना बंद करें। मगर बालक परीक्षा में असफल हुआ तो उसे प्रताड़ित करने पर भी रोक लगाना आवश्यक है। युवकों को यह सूत्र बताने की आवश्यकता है कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

पाहुडद्वय टीका और चूर्णिसूत्र

✻ पं. सुरेश जैन मारौरा, इन्दौर ✻

चतुर्दशरत्नानि ॥1/18॥

नवं निधयः ॥1/19॥

जैनागम मूलतः द्वादशाङ्गात्मक है। यह सर्वज्ञ वाणी पर आधारित है। जैन वाङ्मय का चार अनुयोगों के रूप में वर्गीकरण कब से शुरु हुआ यह अन्वेषण का विषय है जैसे द्वादशाङ्ग में दृष्टिवाद अंग के पाँच भेदों में एक प्रथमानुयोग भी है। चारों अनुयोगों के वर्गीकरण का बीज यही प्रतीत होता है। वर्तमान प्रतिक्रमण पाठ गणधर देव द्वारा रचित स्वीकार किया गया है उसमें उल्लिखित **प्रथमं-करणं-चरणं-द्रव्यं नमः** पद चारों अनुयोगों की प्राचीनता सिद्ध करते हैं।

चारों अनुयोगों का क्रमबद्ध विवेचन सर्वप्रथम आचार्य समंतभद्र स्वामी द्वारा रचित रत्नकरण्ड श्रावकाचार में मिलता है। उन्होंने सम्यग्ज्ञान की प्ररूपणा में न केवल चारों अनुयोगों का उल्लेख किया है अपितु उन्हें सम्यग्ज्ञान बताते हुए उनका लक्षण भी निर्दिष्ट किया है। अतः चारों अनुयोगों की परंपरा प्राचीन होने के साथ-साथ द्वादशाङ्ग वाणी का प्रतिनिधित्व भी करती हैं।

प्रस्तुत चूर्णिसूत्र में शास्त्रसार समुच्चय के सूत्रों को ही आधार बनाकर उनका क्रमबद्ध विवेचन संस्कृत भाषा में ही सूत्रों के माध्यम से विरागसागर जी महाराज ने किया है।

शास्त्रसार समुच्चय- शास्त्रसार समुच्चय ग्रंथ आचार्य माघनंदी योगीन्द्र द्वारा 12वीं शताब्दी में लिखा गया ग्रंथ है। यह ग्रंथ शास्त्रों के चारों अनुयोगों के सार का संग्रह है। जैसे प्रकृति विशाल वृक्ष को एक छोटे से बीज में समाविष्ट कर लेती है वैसी ही आचार्य माघनंदी ने चारों अनुयोगों की विशाल ज्ञान संपदा को मात्र 200 सूत्रों में निबद्ध कर दिया है। यह ग्रंथ 4 अध्यायों में विभक्त है। जिसके नाम क्रमशः प्रथमानुयोग वेद, करूणानुयोग वेद, चरणानुयोग वेद, द्रव्यानुयोग वेद है। वेद शब्द ज्ञान का वाचक है। इसके प्रयोग से वैदिक धर्म के ऋग्वेदादि चार धर्म के ग्रंथों का स्मरण हो जाता है और इससे यह ध्वनित होता है कि संपूर्ण जैन तत्त्व, सिद्धांत, आचार-विचार, इतिहास और संस्कृति चार अनुयोगों में अंतर्भूत है। आचार्य विरागसागर जी ने इस पर चूर्णिसूत्रों की रचना करके गागर में सागर की उक्ति को चरितार्थ कर दिया है।

यह ग्रंथ तत्त्वार्थ सूत्र की तरह नित्य पाठ करने योग्य है। ग्रंथ के पाठ करने पर समस्त जैनागम का पाठ हो जाता है। इस अनूठी/अद्वितीय कृति को प्रकाश में लाना अपेक्षित है।

शास्त्रसार समुच्चय ग्रंथ पर दो टीकायें लिखी गई हैं-

1. आचार्य माघनंदी द्वारा रचित कन्नड़ी टीका, 2. आचार्य मणिक्यनंदी द्वारा रचित संस्कृत टीका

वर्तमान में कन्नड़ी टीका का हिंदी रूपांतरण आचार्य देशभूषण महाराज ने किया तथा संस्कृत टीका अनुपलब्ध है।

चूर्णिसूत्र- चूर्णिसूत्र के सृजन में आचार्य विरागसागर जी महाराज ने शास्त्रसार समुच्चय ग्रंथ का अवलंबन किया है। चूर्णिसूत्रों में आचार्य श्री लगभग 3116 सूत्रों का प्रणयन किया है।

1. प्रथम अध्याय प्रथमानुयोग वेद में 22 सूत्रों पर आचार्य विरागसागर जी ने 418 चूणिसूत्र लिखे।

2. द्वितीय अध्याय करूणानुयोग वेद में 44 सूत्रों पर आचार्य विरागसागर जी ने 811 चूर्णिसूत्र लिखे।

3. तृतीय अध्याय चरणानुयोग वेद में 68 सूत्रों पर आचार्य विरागसागर जी ने 1009 चूर्णिसूत्र लिखे।

4. चतुर्थ अध्याय द्रव्यानुयोग वेद में 66 सूत्रों पर आचार्य विरागसागरजी ने 878 चूर्णिसूत्र लिखे।

अतः शास्त्रसार समुच्चय के कुल 200 में से 3116 चूर्णिसूत्रों का प्रणयन किया है।

मेरा विषय इस प्रथमानुयोग वेद का 18वें नंबर का सूत्र-चतुर्दशरत्नानि एवं 19वें नम्बर का सूत्र नव निधयः है। इस ग्रंथ की दो विशेषताएं हैं- संस्कृत सूत्रों में वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण एवं सर्वांगीण विवेचना।

चतुर्दशरत्नानि का अर्थ- चक्रवर्ती के 14 रत्न होते हैं।

नव निधयः का अर्थ- चक्रवर्ती की नौ निधियां होती हैं।

चक्रवर्ती- श्लाका पुरुषों में तीर्थंकरों के बाद चक्रवर्तियों का स्थान है। चक्रवर्ती छह खंड के अधिपति होते हैं। छह खंड के समस्त राजा-महाराजा, विद्याधर और नरेश चक्रवर्तियों के अधीन रहते हैं। समस्त भूमंडल पर इनका अखंड एक छत्र राज रहता है। पृथ्वीतल के श्रेष्ठ वैभव और भोग के स्वामी होने के कारण चक्रवर्तियों को नरेन्द्र भी कहा जाता है।

प्रत्येक कालचक्र के अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल के दुःषमा सुषमा नामक काल में बारह चक्रवर्ती होते हैं। इस काल के बारह चक्रवर्तियों के नाम इस प्रकार हैं -

1. भरत, 2. सगर, 3. मधवा, 4. सनतकुमार, 5. शांति, 6. कुंथु, 7. अर, 8. सुभौम, 9. पद्म, 10. हरिसेन, 11. जयसेन, 12 ब्रह्मदत्त

पूर्वजन्मों में किये गये तप के फलस्वरूप चक्रवर्तियों की आयुधशाला में संपूर्ण लोक को विस्मित करने वाला चक्ररत्न प्रकट होता है। चक्ररत्न होने पर जिनेन्द्र भगवान की पूजा कर चक्रवर्ती दिग्विजय के लिए निकलते हैं। दिग्विजय का उद्देश्य स्वेच्छाचारी राजाओं के कुशासन को कुचलकर पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का रहता है। दिग्विजय यात्रा में चक्रवर्ती की विशाल सेना उसके साथ रहती है। आगे-आगे एक हजार यक्षों से सहित चक्ररत्न रहता है। दिग्विजय द्वारा चक्रवर्ती समस्त राजाओं को अपने अधीन कर उन्हें सही नीति पर चलनेका आदेश देते हैं। इस प्रकार समस्त भरत क्षेत्र के छह खण्डों पर विजय पाकर अपनी दिग्विजय यात्रा पूरी करते हैं।

सभी चक्रवर्ती निकट भव्य और जिन शासन के अनुयायी होते हैं। इनमें से कुछ उसी भव में और कुछ भवान्तर में मोक्ष प्राप्त करते हैं। चक्रवर्ती स्वर्ग से ही आते हैं।

चक्रवर्तियों का वैभव- चक्रवर्तियों का वैभव अतुलनीय होता है। चौदह रत्न और नौ निधियों के स्वामी चक्रवर्ती अपने सात अंगों के साथ दशांग भोगों का सेवन करते हैं।

चक्रवर्ती के सात अंग- स्वामी, राजा, अमात्य, देश, दुर्ग, भण्डार/कोश, वडंगबल और षडंग बल निम्न हैं-

1. चक्रबल, 2. 84 लाख हाथी, 3. 84 लाख रथ, 4. 18 करोड़ उत्तम नस्ल के घोड़े, 5. 84 करोड़ वीरभट 6. असंख्य देव सैन्य, 7. विद्याधर सैन्य

रत्न- रत्न की परिभाषा देते हुए आचार्य विरागसागर ने चूर्णिसूत्र दिया-

अनर्घरत्नम् ।।1/18/273।।

अर्थात् जिसका कोई मूल्य/कीमत न हो (आंकी ना जा सकती हो) वह रत्न है।

चौदह रत्न- चक्रवर्ती के चौदह रत्न होते उनमें सात अचेतन और सात चेतन हैं। चक्र, छत्र, असि/तलवार, दंड, मणि, काकिनी और चर्म ये सात अचेतन रत्न हैं, तथा गृहपति, सेनापति, पुरोहित, स्थपति, स्त्री, हाथी और अश्व ये सात चेतन रत्न हैं। इन चौदह को महारत्न कहते हैं एक-एक हजार यक्ष इनकी रक्षा करते हैं।

चौदह रत्न और उनके कार्य-

1. चक्ररत्न- चक्ररत्न के बारे में आचार्य विरागसागर कहते हैं-

विजयस्य प्रतीकं प्रथमं सुदर्शन चक्ररत्नम् ।।1/18/275।।

अर्थात् विजय का प्रतीक पहला सुदर्शन चक्र रत्न है।

2. छत्ररत्न- वर्षातपधूलिहिमपातादिबाधानिवारकं द्वितीयं सूर्यप्रभछत्ररत्नम् ।।276।।

अर्थात् वर्षा, धूप, धूलि, बर्फ आदि के गिरने संबंधी बाधाओं को दूर करने वाला दूसरा सर्वप्रभ नामक छत्ररत्न है।

3. असिरत्न- प्रसन्नताप्रदायकं तृतीयं भद्रसुखमसिरत्नम् ।।277।।

अर्थात् प्रसन्नता देने वाला तीसरा भद्रसुख नामक असिरत्न है।

4. दण्डरत्न- अष्टचत्वारिंशद्योजनप्रमितं सेनाभूमिसमतलविधायकं चतुर्थ प्रबुद्धवेगदण्डरन्तम् ।।248।।

अथवा

विजयार्द्धगुहयोः द्वारोद्धाटनकारकं चतुर्थ प्रबुद्धवेगदण्डरत्नम् वा ।।279।।

अर्थात् अड़तालीस योजन प्रमाण सेना के रुकने योग्य भूमि को समतल करने वाला चौथ प्रबुद्धवेग नामक दण्डरत्न है।

अथवा

विजयार्द्ध की दोनों गुफाओं के द्वारों को खोलने वाला चौथा प्रबुद्धवेग नामक दण्डरत्न है।

5. मणि/चूड़ामणिरत्न- अभिलाषापूरकं पञ्चम् चूडामणिरत्नम् ।।280।।

अर्थात् चक्रवर्ती की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला चूड़मणि पाँचवां रत्न है।

6. काकिणीरत्न- सूर्यचन्द्रवत् प्रकाशप्रदायकं षष्टं चिन्ताजननी-काकिणीरत्नम् ।।281।।

अर्थात् सूर्य-चन्द्र वत् प्रकाश देने वाला छठवां चिन्ताजननी काकिणीरत्न है।

7. धर्मरत्न- सेनाया नदीनद्युत्तरणकारकं सप्तमं निश्नर्मधर्मरत्नम् ।।282।।

अर्थात् सेना को नदी से पार कराने वाला सातवां निश्चर्म नामक धर्मरत्न है।

8. गृहपतिरत्न- राज्यभवनीसर्वव्यवस्थाकारकमष्टमं भद्रमुखगृहपति-रत्नम् ।।283।।

अर्थात् राज्यभवन की सभी व्यवस्थाओं को करने वाला आठवां भद्रमुख नामक गृहपतिरत्न है।

9. सेनापतिरत्न- पञ्चम्लेच्छखण्डानांविजयकारकः सेनानायकोनवंसेनापतिरत्नम् ।।284।।

अर्थात् पाँच म्लेच्छखण्डों में विजय कराने वाला सेना का नायक नवमां सेनापति नामक रत्न है।

10. हाथीरत्न- समस्तहस्तिविजयकारकं दशमं विजयगिरिहस्तिरत्नम् ।।285।।

अर्थात् सभी हाथियों पर विजय प्राप्त करने वाला दसवां विजयगिरि हस्तिरत्न है।

11 अश्वरत्न- द्वादशयोजनप्रमिताध्वानंशीघ्रगाम्येत्येकादशं पवनञ्जयाश्वरत्नम्।।286।।

अर्थात् बारह योजन प्रमाण मार्ग पर शीघ्र गमन करने वाला ग्यारहवां पवनजय नामक अश्वरत्न है।

12. स्थपतिरत्न- चक्रवर्तिनः इच्छानुकूलगृहनिर्मापकंद्वादशं कामवृष्टिस्थपतिरत्नम्।।287।।

अर्थात् चक्रवर्ती के इच्छानुकूल गृहकार्य करने वाला बारहवां कामवृष्टि नामक स्थपतिरत्न है।

13. स्त्रीरत्न- षण्नवतिसहस्रराज्ञीषु प्रमुख त्रयोदशं सुभद्रापट्टराज्ञी स्त्रीरत्नम्।।288।।

अर्थात् छियानवें हजार रानियों में प्रमुख तेरहवां सुभद्रा पट्टरानी स्त्रीरत्न है।

14. पुरोहितरत्न- धर्मानुष्ठानकारकं चतुर्दशं बुद्धिसागरपुरोहितरत्नम्।।289।।

अर्थात् धर्मानुष्ठानों को कराने वाला चौदहवां बुद्धिसागर पुरोहितरत्न है।

निधियाँ- निधि की परिभाषा देते हुए आचार्य विरागसागर ने चूर्णिसूत्रि दिया।

निधिगृहमिति कोषागारः।।290।।

अर्थात् कोषगृह (भण्डार) को निधि कहते हैं। चक्रवर्ती की नौ निधियाँ होती हैं। नव निधियाँ और उनके कार्य निम्न हैं -

1. कालनिधि- सर्वर्तुपुष्पफलप्रदायकः प्रथमः कालनिधिः।।292।।

अर्थात् सभी ऋतु के फल और पुष्पों को प्रदान करने वाली काल नामक पहली काल निधि है।

2. महाकालनिधि- इच्छानुकूलभोज्यपदार्थप्रदाय को द्वितीयो महाकालनिधिः।।293।।

अर्थात् अनुकूल भोजन सामग्री को देने वाली दूसरी महाकाल निधि है।

3. पांडुकनिधि- सर्वधान्यप्रदायकः तृतीयः पाण्डुनिधिः।।294।।

अर्थात् सभी प्रकार के धान्यों को देने वाली तीसरी पाण्डु निधि है।

4. माणवक निधि- सर्वायुधप्रदायकश्चतुर्थो माणवकनिधिः।।295।।

अर्थात् सभी प्रकार के आयुधों को देने वाली चौथी माणवक निधि है।

5. शंखनिधि- सर्वविधवाद्यप्रदायकः पञ्चम शंखनिधिः।।296।।

अर्थात् सभी प्रकार के बाजों को देने वाली पांचवीं शंख निधि है।

6. नैसर्पनिधि- सर्वविधभवनगृहप्रदायकः षष्ठो नैसर्पनिधिः।।297।।

अर्थात् सभी प्रकार के महल व गृहों को देने वाली छठवीं नैसर्प निधि है।

7. पद्मनिधि- सर्वविधामूल्यवस्त्रादिप्रदायकः सप्तमः पद्मनिधिः।।298।।

अर्थात् सभी प्रकार के अमूल्य वस्त्रादि को देने वाली सातवीं पद्म निधि है।

8. पिंगलनिधि- सर्वाभूषणप्रदायकोऽष्टमः पिङ्गलनिधिः।।299।।

अर्थात् सभी आभूषणों को देने वाली आठवीं पिंगल निधि है।

9. सर्वरत्ननिधि- मणिमाणिक्यादिसर्वरत्नप्रदायको नवमः सर्वरत्ननिधिरिति।।300।।

अर्थात् मणि-माणिक्य आदि सभी रत्नों को देने वाली नौवीं सर्वरत्न नामक निधि है।

आठ अचेतन निधियाँ बैलगाड़ी के समान हैं, शेष यथायोग्य है। सभी रत्न तथा सभी निधियों में प्रत्येक एक-एक हजार देवों से रक्षित है। प्रत्येक निधियां नौ योजन चौड़ी, आठ योजन गहरी तथा बारह योजन लम्बी होती हैं। सभी निधियाँ बैलगाड़ी के आकार वाली होती हैं। वे वक्षार पर्वत के समान कुक्षि से सहित होती हैं । सभी निधियाँ कामवृष्टि नामक (नौवें रत्न) गृहपति के आधीन होती

हैं। ये सभी निधियाँ श्रीपुर अथवा नदीमुख से प्राप्त होती हैं।

चक्रवर्ती इन निधियों का मनचाहा उपयोग करता है, फिर भी ये अटूट बनी रहती हैं।

चक्रवर्ती का अन्य वैभव-

❋ चक्रवर्ती के दशांग भोग होते हैं-1. दिव्य नगर, 2. दिव्य भोजन, 3. दिव्य भाजन, 4. दिव्य शयन, 5. दिव्य नाट्य, 6. दिव्य आसन, 7. दिव्य रत्न, 8. दिव्य निधि, 9. दिव्य सेना और 10. दिव्य वाहन।

❋ चक्रवर्ती 32 हजार मुकुट-बद्ध राजाओं का स्वामी होता है।

❋ चक्रवर्ती की पट्टरानी सहित 96 हजार रानियाँ होती हैं। इनमें 32 हजार आर्यखण्ड की, 32 हजार विद्याधरों की और 32 हजार म्लेच्छ खण्ड की कन्याएँ होती हैं।

❋ चक्रवर्ती अपनी पृथक् विक्रिया की सहायता से अपने शरीर के अनेक रूप धारण कर सकता है।

❋ चक्रवर्ती के तीन करोड़ पचास हजार बन्धु वर्ग, 360 रसोइये, और 360 शरीर वैद्य होते हैं।

❋ चक्रवर्ती पर 32 यक्ष देव 32 चमर दुराते रहते हैं।

❋ 32 हजार नाट्यशालाएँ और 32 हजार संगीत शालाएँ होती हैं। 32 हजार देश और उनके 32 हजार मुकुट-बद्ध राजाओं पर उनका स्वामित्व होता है।

❋ बारह योजन तक सुनाई देने वाले 24 शंख, 23 भेरी (नगाड़ा) और रथ, 24 पटह (वाद्य विशेष) होते हैं।

❋ चक्रवर्ती की इन्द्रियाँ अत्यंत पुष्ट और बलवान् होती हैं। वे स्पर्शन, रसना और घ्राण इन्द्रिय से नौ योजन तक के विषय को जान सकते हैं, चक्षु-इन्द्रिय से 47263 7/20 योजन तक देख सकते हैं तथा कर्ण इन्द्रिय से 12 योजन तक के शब्द को सुन सकते हैं।

इस प्रकार आचार्य श्री विरागसागरजी ने चूर्णिसूत्रों के माध्यम से चौदह रत्न और नव निधियों का विस्तार पूर्वक विवेचन किया है। इस बहुविध सामग्री और वैज्ञानिक प्रतिपादन शैली से सन्नद्ध प्रस्तुत ग्रंथ जैन विद्या के जिज्ञासुओं के लिए परम उपकारी सिद्ध होगा इसमें संदेह नहीं है। केवल इस ग्रंथ के अनुशीलन से चूर्णिसूत्रों की सभी शाखाओं के उच्च स्तरीय ज्ञान में प्रावीण्य प्राप्त किया जा सकता है। इतने लोकोपकारी कृति प्रदान करने वाले आचार्य श्री विरागसागरजी को कोटि-कोटि नमन्।

कविता

विनयप्रमुख

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी

दृष्टि पल्टा दो, तामस समता हो, और कुछ ना हो।
एकता में ही, अनेकांत फले सो, एकान्त टले।
नय नय है, विनय प्रमुख है, मोक्षमार्ग में।
समर्पण ये, कर्त्तव्य की कमी से, संदेह न हो।
ज्ञान की प्यास, सो कहीं अज्ञान से, घृणा तो नहीं।

दक्षिण कोरिया में आयुर्वेद को बढ़ावा दे रही

✻ डॉ. आस्था जैन, सनावद ✻

जैन जगत के वरिष्ठ पत्रकार, ओजस्वी वक्ता, श्री राजेन्द्र जैन जी महावीर की सुपुत्री डॉ. आस्था जैन आयुर्वेद योग एवं भारतीय चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने दक्षिण कोरिया में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। धर्म आयुर्वेद भोपाल व वेलपार्क हॉस्पिटल दक्षिण कोरिया के नॉलेज एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत उनको दक्षिण कोरिया बुलाया गया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक वैद्य प्रशांत तिवारी के मार्गदर्शन में डॉ. आस्था को यह उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है।

पंडित खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय भोपाल से प्राचार्य प्रो. उमेश शुक्ला के कुशल नेतृत्व में बी.ए.एम.एस आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात डॉ. आस्था जैन ने बोन एवं ज्वाइंट पर अपनी उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। अध्ययन के दौरान उन्होंने अपने शोध आलेख लिखे व पीपीटी प्रेजेन्टेशन के माध्यम से अपनी प्रतिभा को सिद्ध किया। विश्व आयुर्वेद कॉंग्रेस 2022 में डॉ. आस्था का शोध अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जनरल में प्रकाशित हुआ था। भारत सरकार में केन्द्रिय आयुष मंत्री सर्वानंद सोनोवाल पर्यटन मंत्री श्री पद नाईक म.प्र. शासन में तत्कालीन केबिनेट मंत्री ओमप्रकाश सकलेचा आदि से भी उसे सराहना प्राप्त हुई थी ?

आयुर्वेद एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है- डॉ. आस्था जैन

डॉ. आस्था जैन ने बताया कि आयुर्वेद को वैश्विक स्तर पर स्थापित करना उनका लक्ष्य है। अपने गुरु वैद्य प्रशांत तिवारी धर्म आयुर्वेद भोपाल के मार्गदर्शन व पंडित खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय भोपाल में उन्होंने भगवान धनवन्तरी की भावना, महर्षि चरक की चिकित्सा पद्धति महर्षि सुश्रुत की शल्य चिकित्सा, महर्षि वागभट्ट का आयुर्वेद आधुनिक स्वरूप उन्होंने समझा है, आयुर्वेद एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है, जिसके माध्यम से गंभीर से गंभीर रोगों से मुक्ति मिल सकती है। दक्षिण कोरिया का वेलसिटी हॉस्पिटल कैंसर रोगियों के लिए प्रसिद्ध है, यहाँ वे डॉ. किम मीयंग के साथ आयुर्वेद के प्रयोग कैंसर रोगियों पर कर रही हैं, जिस पर वे अपना शोध लेख भी तैयार करेंगी। आयुर्वेद के पंचकर्म आहार, विहार, निहार, चिकित्सा से कैंसर मरीजों को ठीक करने का उपक्रम कर रही है।

भारत सरकार व प्रधानमंत्री की सोच आयुर्वेद को बढ़ावा देती है।

डॉ. आस्था ने कहा कि भारतीय संस्कृति, अध्यात्म विद्या व योग विद्या के साथ जीवन जीने की कला सिखाती है आयुर्वेद एक चिकित्सा पद्धति है जिसे भारत सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पहल किये जाने से आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति बेहतर व वैश्विक स्तर पर स्थापित हो रही है। एलोपेथी में एम्स व आयुर्वेद में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान दिल्ली व गोआ में बहुत ही कुशलता से देश-विदेश के नागरिकों को आकर्षित कर रहे है।

ठण्डा व विकसित राष्ट्र है दक्षिण कोरिया: माइनस 8 डिग्री सेंटीग्रेड तामपान के बीच आयुर्वेद को प्रोत्साहित करने नववर्ष 2024 के प्रथम सप्ताह में कोरिया पहुंची डॉ. आस्था ने

बताया कि यह एक प्राकृतिक देश है जहाँ प्रकृति को नजदीकी से महसूस किया जा सकता है। भारतीय मुद्रा सौ रूपये के पन्द्रह सौ वान मिल जाते हैं वान दक्षिण कोरिया की मुद्रा है। वहाँ रहने के लिए घर आदि की व्यवस्था वेल पार्क हॉस्पिटल द्वारा की गई है।

कम समय में उपलब्धि पूर्ण कार्य किये डॉ. आस्था ने वैद्य प्रशांत तिवारी:

धर्म आयुर्वेद भोपाल के प्रमुख व एक दशक से आयुर्वेद चिकित्सा को प्रतिष्ठापित कर रहे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चिकित्सक वैद्य प्रशांत तिवारी ने बताया कि अध्ययन के दौरान ही डॉ. आस्था ने अपने कार्य के प्रति समर्पण व लगन दिखाई, उसका धैर्य, मरीज के प्रति जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार उसे एक अच्छा आयुर्वेद चिकित्सक वैद्य बनाता है। कोरिया जाकर वो और अधिक निखर कर भारतीय आयुर्वेद को वैश्विक परिदृश्य पर स्थापित करने में अपना योगदान देगी। पंडित खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय भोपाल के प्राचार्य प्रो. उमेश शुक्ला ने डॉक्टर आस्था को बधाई देते हुए कहा कि उन्हें गर्व है उनके महाविद्यालय की छात्रा डॉ. आस्था ने भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठापित कर रही हैं।

अपना भोजन स्वयं बनायेगी डॉ. आस्था जैन:

शुद्ध शाकाहारी भोजन के लिए समर्पित डॉ. आस्था ने अपने साक्षात्कार में यही शर्त रखी कि वे वहाँ होने वाले मांसाहारी भोजन नहीं करेगी, न ही वहाँ का बना भोजन ले जायेगी। इस पर डॉ. किम मीयंग ने उन्हें सेप्रेट किचन उपलब्ध कराने को मंजूरी दी। डॉ. आस्था कोरिया में अपना भोजन स्वयं बनाकर अपनी संस्कृति के प्रति समर्पित है व दिन का शुभारंभ णमोकार महामंत्र व सायंकाल भक्तामर स्तोत्र कर करती है। पिता राजेन्द्र जैन महावीर ने कहा कि उन्हें गर्व है कि भारती श्रमण संस्कृति के संस्कारों को बेटी ने जीवित रखा है।

इस उपलब्धि पर अनेक स्नेही जनों ने बधाई एवं शुभकामनायें दी हैं।

कविता

अंतरिक्ष प्रभु पार्श्व निराला

✻ संस्कार फीचर्स ✻

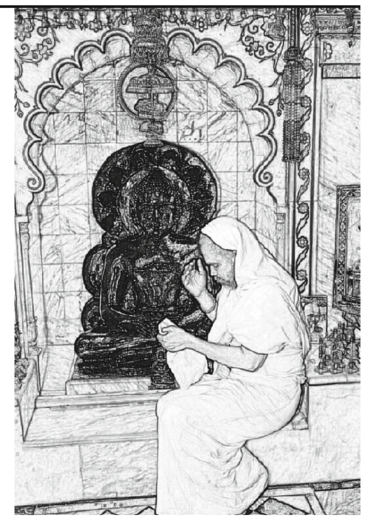

मूल दिगम्बर रूप है प्यारा, अंतरीक्ष प्रभु पार्श्व हमारा
अश्वसेन का राज दुलारा, बामादेवी आँख का तारा
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, सत्य अहिंसा वृष उपदेशी
संकटहर्ता शिरपुर वासी, देखो महिमा इनकी खासी
देवों के भी देव हैं पारस, पतितों के भगवान है तारक
जिनवर भक्ति जो भी करता, पाप नष्ट कर शिवपुर वरता
आओ श्रावक दर्शन कर लो, सुख सम्पत से झोली भर लो
अब कटो भव दुख की कारा, अंतरीक्ष प्रभु पार्श्व निराला

जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि मूकमाटी का 38वाँ स्वर्णिम समापन समारोह

❊ डॉ. चन्दा मोदी, भोपाल ❊

प्रकृति ही हरियाली और आत्मा की खुशहाली से अपूरित 150 करोड़ वर्षों से अधिक प्राचीन विन्ध्याचल की समुन्नत शिखर पर स्थित जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि में आप सबकी अनंत आस्था है। इस आस्था का न आदि है और न अंत। प्राचीनतम शाश्वत षष्ठम निर्वाण सिद्धक्षेत्र पर आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा वर्ष 1987 के अवसर पर जैन संस्थान परिसर में सर्वप्रथम विशाल पाण्डुक शिला का निर्माण किया गया। इसी के समीप **पावन समापन** स्थल पर 11 फरवरी 1987 को आचार्य विद्यासागर जी ने मूकमाटी का मधुर महागान पूर्वक समापन किया। इसके पूर्व 8,9 तथा 10 फरवरी 1987 को संस्थान परिसर से थोड़ी दूरी पर स्थित, वरदत्तादि सिद्धों तथा अर्हंत पार्श्वनाथ को पगलतियों से पवित्र सिद्धशिला, बज्रशिला, और वरदत्त प्रयाग के पावनतम स्थलों पर मूकमाटी को सुप्रसिद्ध पंक्तियों का गुरुदेव ने अपने पावन कण्ठ से मधुर गान किया। इस मधुर गान की गूंज इन **समापन स्थलों** पर अब भी गूंजती रहती हैं तथा जन-जन को प्रभावित करते हुए प्रसन्न करती रहती है।

गुरुदेव ने 1984 में जबलपुर में मूकमाटी लिखना शुरु की और इसका समापन 11 फरवरी 1987 का जैन तीर्थ नैनागिरि में किया। 658 दिनों से यह कृति पूर्ण हुई। आचार्य श्री इन दिनों में से अधिकांश दिन नैनागिरि में ही विराजमान रहें और पार्श्वप्रभु से सतत प्रेरणा प्राप्त कर रचनात्मक लेखन करते रहे।

आचार्य विद्यासागर ने वरदत्तादि सिद्धों तथा अर्हंत पार्श्वनाथ की पावन रज से पवित्र नैनागिरि के रजकणो को अपनी तपस्या से ऊर्जस्वित कर पूरी दुनिया में विकीर्ण किया। नैनागिरि के माटी पुत्रों को अनुपम साधना की सीख देकर सिद्धत्व के पथ पर अग्रसर किया। यह सराहनीय और अनुकरणीय है कि उनके तपोनिष्ठ मनीषी साधक गत शताब्दि में नैनागिरि में हुई आध्यात्मिक क्रांति की अमर कहानियाँ सुना-सुनाकर नैनागिरि की कीर्ति को पूरी दुनिया में फैला रहे हैं। वहाँ जन्में प्रशासक और न्यायाधीश की आध्यात्मिक निष्ठाओं तथा सामाजिक अवदानों के उदाहरण जन-जन को सुनाकर उनमें नैतिक मूल्य संस्थापित कर रहे हे। युवक-युवतियों को उनके सद्‌गुणों को आत्मसात कर अपना चतुर्मुखी विकास करने के लिए सतत प्रेरित कर रहे है।

सेमरा पठारी नदी की मूक बज्रशिला, मूक सिद्धशिला तथा मूक वरदत्त प्रयाग पर बैठकर विद्यासागर जी के मधुरकण्ठ से इस मधुरगान को सुनने के सुरेश जी तथा न्यायमूर्ति विमला जी प्रभृति कुछ विशेष भाग्यशाली लोग अपरिमित पुण्यशाली श्रोता है। हम उन अवसरों पर समुपस्थित रहे सभी सुधी श्रोताओं की ओर से मूकमाटी के आद्य उद्गाता विद्यासागर जी को शत् - शत् प्रणाम करते है। संस्थान परिवार के सभी मानद सदस्यों को साधुवाद प्रदान करते है जो समापन तिथि से नियमित रूप से प्रत्येक वर्ष में विभिन्न अवसरों पर ग्रामीण स्तर के छोटे स्वरूप में ही सही, मूकमाटी का जयगान निष्ठापूर्वक करते रहे हैं।

मूकमाटी के जन्म के 38 वर्ष पूरे होने पर 7,8,9,10 फरवरी, 2025 को नैनागिरि में आयोजित 38वें समापन समारोह में पं. अशोक जी ने मूकमाटी के चुने हुए अंशों का सस्वर पाठ किया। पं. कंछेदीलाल जी ने मूकमाटी के लेखन काल के ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत किए। प्राचार्य

सुमति प्रकाश के नेतृत्व में सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जेन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पूर्व तथा वर्तमान छात्र-छात्राओं ने मूकमाटी के चयनित अंश मधुर संगीत के साथ सुनाएं। इसकी कीर्ति, संकीर्तन ओर अनुकीर्तन किया। मूकमाटी के वादनपूर्वक गायन ने विद्यासागर जी के उद्गान को अपनी ध्वनियों से गुंजायमान कर दिया। किशोर बच्चों की सहज और सरल वाणी में प्रस्तुत मूकमाटी के सुगेय-धार्मिक तथा आध्यात्मिक तत्वों ने श्रोताओं की 38 वर्ष पुरानी स्मृतियों को गुदगुदाकर ताजा कर दिया। उपस्थित महानुभावों ने इस महत्वपूर्ण महाकाव्य की अत्यधिक सराहना कर बच्चों को पारितोषिक प्रदान किए। इस अवसर पर हमें मूकमाटी पर आधारित सर्वोत्कृष्ट ऐनीमेशन फिल्म देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

आचार्य विद्यासागर जी की कालजयी कृति मूकमाटी 50 विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित है। मूकमाटी में देश की तत्कालीन विषम परिस्थितियों का वर्णन हमारे ज्ञान का सतत संवर्द्धन करता है। इसमें वर्णित सूक्तियों की चर्चा विद्वानों द्वारा अपने आलेखों और प्रवचनों में सर्वत्र की जाती है। इसके सर्वोत्तम संस्कृत अनुवाद **मूक मृत्तिका** महाकाव्य के लोकार्पण समारोह के अवसर पर आचार्य समयसागर जी ने बहुत अच्छी सीख दी है मूकमाटी क्या कह रही है ? इसको समझो। मूकमाटी को आत्मसात करने से ही मूकमाटी की सार्थकता सिद्ध होगी। निर्यापक मुनिवर अभयसागर जी ने नैनागिरि में मूकमाटी के लेखन, गायन, प्रकाशन का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया। मुनिवर अभयसागर जी ने मूकमाटी के विश्व की आठ भाषाओं में सुन्दर अनुवाद तथा मूकमाटी के प्रति देश के सुप्रसिद्ध विद्वानों के सम्माजनक अनुपम शब्दों का प्रभावी ढंग से उद्घोष किया। संस्कार सागर फरवरी 2025 तथा जैन संदेश 12 फरवरी 2025 में प्रकाशित डॉ. सुनील संचय ललितपुर की इस समारोह की विस्तृत रिपोर्ट सतत पठनीय और संग्रहणीय है।

यह सराहनीय है कि मूकमाटी का मूकमृत्तिका महाकाव्य के शीर्षक से संस्कृत पद्यानुवाद शिमला के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री अभिराज राजेन्द्र मिश्र, कुलपति, संपूर्णानंद विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा किया गया। मूकमाटी में कन्नड़ मातृभाषी विद्याधर तथा हिन्दी, संस्कृत प्राकृत भाषाओं के प्रयागराज आचार्य विद्यासागर जी का दुर्लभ चारित्र, अगाध वैदुष्य और उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा सर्वत्र प्रगट होती है। मूकमाटी में अथर्ववेद की भांति पृथ्वी का तथा महाकवि की कामायनी की भांति भारतीय दर्शन का सुन्दर वर्णन किया गया है।

देश के कर्मठ और सुप्रसिद्ध युवा विद्वान तथा मूकमृत्तिका के संपादक डॉ. सोनल जैन को नैनागिरि तीर्थ के यशस्वी एवं सुप्रसिद्ध अध्यक्ष श्री सुरेश जैन ने 18 फरवरी 2025 को भोपाल में अपने घर आत्मीय पूर्वक आमंत्रित किया। उनका आतिथ्य किया और उनके उस आसाधारण संपादन कार्य के लिए साधुवाद प्रदान किया। यह उल्लेखनीय है कि सोनल जी ने शीघ्र ही नैनागिरि पहुँचकर मूकमाटी के समापन स्थलों को देखने तथा आद्य उद्गानों की गूंज को स्वयं सुनने की अभिलाषा और जिज्ञासा प्रगट की है।

यह सराहनीय है कि सुरेश जी ने संस्थान परिसर में मूकमाटी के समापन स्थल तथा महागान स्थलों- सिद्धशिला, बज्रशिला और वरदत्त प्रयाग-पर निम्नांकित मूकमाटी पट्टिकाएं लगाई गई हैं। निश्चित ही इस प्रकार की संदेश पट्टिकाएं जन-जन को प्रभावित और आकर्षित करेंगी।

आचार्य विद्यासागर जी द्वारा विरचित - **मूकमाटी समापन स्थल,** जैन तीर्थ नैनागिरि 11 फरवरी 1987

आचार्य विद्यासागर जी के पावन कण्ठ से- **मूकमाटी का,** प्रथम मधुर गान सिद्ध शिला 6 फरवरी 1987

आचार्य विद्यासागर जी के पावन कण्ठ से - **मूकमाठी का,** द्वितीय मधुरगान बज्र शिला 7 फरवरी 1987

आचार्य विद्यासागर जी के पावन कण्ठ से - **मूकमाटी का,** तृतीय मधुर गान वरदत्त प्रयाग 8 फरवरी 1987

अंत में अपने पाठकों का ध्यान इस महत्वपूर्ण तथ्य की ओर आकृष्ट करना चाहते है कि तेरह सौ वर्ष पूर्व देशी पाषाण से नैनागिरि में निर्मित तथा 51वें मंदिर में विराजमान नेमिनाथ, आदिनाथ और अजितनाथ तथा 37वें मंदिर में विराजमान युगल पार्श्वनाथ की पाँच पंचतीर्थी प्राचीनतम प्रतिमाओं के सर्वसिद्धि प्रदायक भव्यतम महामस्तकाभिषेक का विशाल आयोजन 140 वर्षों से निरंतर भर रहे नैनागिरि मेला, रथोत्सव तथा जल विहार के ऐतिहासिक अवसर पर दिसंबर 2024 के मध्य में सम्पन्न हुआ। सहभागियों ने अनुपम आनंद प्राप्त किया। आप अपनी सुविधानुसार नैनागिरि पधारें और इन प्राचीनतम मूर्तियों का अभिषेक करें तथा अपार आनंद और अतिशय पुण्य प्राप्त करें।

कविता

रहम धरम

✻ संस्कार फीचर्स ✻

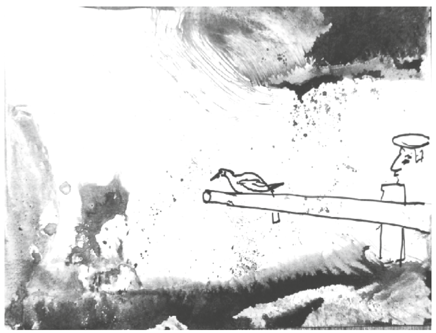

नयन उघाड़े दुनिया देखी श्वान शिशु पर
इंसानों की करतूतों का
क्रूर नजारा सबने देखा
माँ ने जन्म दिया मुश्किल से
पिल्ले चार अभी छोटे थे
अभी नहीं वे कोई खोटे थे
प्यार जताना था जिन पर
दो महिला ने उनको मारा ज्वलनशील
पदार्थ भी छिड़का
करूणा दिल क्यों पिघला
ये भी थे कोई वेचारे
इनके भी कोई सुख दुख था
कोई पीड़ा हम जैसी थी
इनकी आतम हम जैसी थी ममता मूरत
क्रूर बनी क्यों स्वार्थ अहं में
क्यों भूली ये गर उनको कोई
शिशु मारे तो वे रोये मार दहाड़े
कुतिया भी तो रोई होगी
अपनी सुनाती होगी इंसानों को
वो कोसेगी रहम धरम को कहती होगी

चलो देखें यात्रा

ईडर जिले का तीर्थ देरोल-देवपुरी

महत्व एवं दर्शनः हुमड़ समाज की उत्पत्ति स्थान देरोल ग्राम पहिले देवपुरी के नाम से जाना जाता था। यहां 3 मंदिरों में 2 दिगम्बर एक श्वेताम्बर हैं। आदिनाथ भगवान का मंदिर बावन जिनालय के नाम से जाना जाता है। मनोकामना पार्श्वनाथ मंदिर में चतुर्थ कालीन प्रतिमा स्थापित है। प्रतिमा अतिशयकारी है। पूर्णिमा पर वार्षिक मेला लगता है। आर्यिका श्री श्रमणी सूर्यमति माताजी के प्रेरणा से क्षेत्र विकसित हो रहा है।

मार्गदर्शनः आबू रोड़-ईडर रोड पर खेड़ब्रम्हा से (स्टेशन) 7 किमी. है। स्टेशन पर ऑटो उपलब्ध। तारंगा 65, चिंतामणि पार्श्वनाथ-55, ईडर-30, भिलोडा-60 किमी।

नाम एवं पता- श्री पार्श्वनाथ एवं आदिनाथ दिगम्बर जैन देरासर (मंदिर) ट्रस्ट मु.पो. देरोल वाघेला, तह. खेडब्रम्हा, जिला सावरकांठा (गुजरात) फोन 383275, 02775-241136, मो. 09852588328l, प्रबंधकः श्री दीपक भाई रावजी-098258-680551

सुविधायें - अटेच 28, कॉमन- 10 कमरे है। हॉल एक भोजनशाला नियमित सशुल्क।

कविता

भूल जाते

✻ संस्कार फीचर्स ✻

मोदी की चाय, राहुल का पोहा, याद करो अब
रहीम का दोहा, नमन नमन में फेर है
समझ लो बस इसी में खैर है
वोटरों को भ्रमित करने के चक्कर में
मुफ्त के बांटने का दाव खेलते हैं
चुनाव की समय, मतदाता लोभी बन जाते हैं
पांच साल पछताते है राष्ट्र की अस्मिता
देश प्रेम की भावना दाव पर लगा देते हैं
थोड़ी सी लालच में, राष्ट्र की अखंडता भूल जाते हैं।

आगम दर्शन

सवस्त्र में भक्ति निषेध

तदभव मुत्ति निषेध में हेतु सचेलता

सू.पा/मू./22 लिंग इत्थीण हवदि भुंजइ पिउं सुश्यकालम्मि। अज्जिय वि एकवत्था वत्थावरणेण भुंजेइ। स्त्री का लिंग ऐसा है- एक काल भोजन करे, एक वस्त्र धरे और भोजन करते समय भी वस्त्र को न उतारे।

प्र.सा./मू/प्रक्षेपक/225-2/302 णिच्छयदो इत्थीणं सिद्धी ण हि जम्हा दिठ्ठा। तम्हा तप्पडिरूवं वियप्पियं लिंगमित्थीणं (2)= क्योंकि स्त्रियों को निश्चय से उसी जन्म से सिद्ध नहीं कही गयी है, इसलिये स्त्रियों का लिंग सावरण कहा गया है। (2) (यो.सा/अ./8/44)

दे. मो. 4/5- (सग्रन्थ लिंग से मुक्ति सम्भव नहीं)

ध.1/1/1, 63/339/2 अस्मादेवार्पाइ द्रव्यस्त्रीणां निवृत्तिः सिद्धयेदिति चेत्

सवासस्त्वाद् प्रत्याख्यानगुण स्थितानां संयमानुपपत्तेः। भाव संयमस्तासां सवासमाप्यविरूद्ध इति चेत् न तासां भाव संयमोऽस्ति भावासंयमाबिनाभावि वस्त्राद्धयुपादानान्यधानुपपत्तेः। प्रश्न- इसी आगम से (मनुष्यणियों में संयत गुणस्थान के सूत्र नं. 93 से)द्रव्य स्त्रियों का मुक्ति जाना भी सिद्ध हो जायेगा। उत्तर-नहीं क्योंकि वस्त्र सहित होने से उनके संयतासंयत गुणस्थान होता है, अत एव उनके संयम की उत्पत्ति नहीं हो सकती। प्रश्न- वस्त्र सहित होते हुए भी उन द्रव्यस्त्रियों के भाव संयम के होने में कोई विरोध नहीं आना चाहिये ? उत्तर उनके भाव संयम नहीं है, क्योंकि अन्यथा अर्थात् भावसंयम के मानने पर, उनके भाव असंयम का अविनाभावी वस्त्र आदि का ग्रहण करना नहीं बन सकता है।

ध. 11/4,2,6,12/114/11 ण च दव्वत्थीणं णिग्गंत्थत्तमत्थि, चे लादि परिधाएण विणा तासि भावणिग्गंथत्ता भावादो। ण च दव्वत्थित्तमत्थि, चेलादि चागो अत्थि, छेदसुतेण सह विरोहादो- द्रव्य स्त्रियों के निर्गन्थता सम्भव नहीं है। छेदसुत्तेण सह विरोहादा।- द्रव्य स्त्रियों के निर्गन्थता सम्भव नहीं है, क्योंकि वस्त्रादि परित्याग के बिना उनके भावनिर्ग्रन्थता का अभाव है। द्रव्य स्त्रीवेदी व नपुसंक वेदी वस्त्रादि का त्याग करके निर्ग्रन्थ लिंग धारण कर सकते हैं, ऐसी आशंका भी ठीक नहीं है, क्योंकि वैसा स्वीकार करने पर छेद सूत्र के साथ विरोध होता है।

5. आर्यिका को महाव्रती कैसे कहते हो

प्र.सा./ता.वृ./प्रयेपक गाथा/225-8/304/24 अथ मतं- यदि मोक्षो नास्ति तर्हिं भवदीयमते किमर्थमर्जिकानां महाव्रतारोपणम्। परिहारमाह- तदुपचारेण कुलव्यवस्था निमित्तम्। न चोप चारः साक्षाद् भवतुमर्हति...। किंतु यदि तद्भवे मोक्षे भवति स्त्रीणां तर्हिं शतवर्ष दीमिताया अर्जिकाया अद्यदिने दीक्षितः साधोः। प्रश्न- यदि स्त्री को मोक्ष नहीं होता तो आर्यिकाओं को महाव्रतों का आरोप किसलिए किया जाता है। उत्तर साधु संघ की व्यवस्था मात्र के लिए उपचार से महाव्रत कहे जाते हैं और उपचार में साक्षात होने की सामर्थ्य नहीं है। किन्तु यदि तद्भव से स्त्री मोक्ष गयी होती तो 200 वर्ष की दीनता आर्यिका के द्वारा आज का नवदीक्षित साधु वन्द्य कैसे होता। वह आर्यिका ही पहले उस साधु की वन्द्या क्यों न होती। (मो.पा./टी./12/323/18), (ओर दे. आहारक 4/3, वेद/3/4 गो. जी.)

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

फरवरी 2025

नमन वंदन

प्रथम-

जिनके वीतराग सौरभ

जिनके साथ सम्यक गौरव

जिनके चरण का है चंदन

उन संतों को है नमन वंदन

आयुषी जैन, गंजबासौदा

द्वितीय-

लम्हें लम्हें बन जाते पाक्षदाने

आगे बढ़ने के जो दीवाने

गुरु आशीष से मिटता क्रंदन

वीतराग को करें नमन वंदन

अर्चना जैन, सावरमति गुजरात

तृतीय-

अरिहंत सिद्ध आचार्य गणों को

उपाध्याय अरू साधु गणों का

पंच परमेष्ठी काटें बंधन

अतः करें हम नमन वंदन

पल्लवी जैन, सागर

वर्ग पहेली क्र. 303

जनवरी 2025 के विजेता

प्रथम : अनीता जैन, भिलाई

द्वितीय : राजेन्द्र जैन, इंदौर

तृतीय : आकाश जैन, शिरपुर (महाराष्ट्र)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द् अ द्ध् ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :

अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा धरती उगले हीरा मोती

न भुहयति प्राप्तकृतौ कृती हि ।।
कुशल मनुष्य अवसर के अनुसार कार्य करने में कभी नहीं चूकते।

न राज्यलाभोऽभिमतोऽनंपत्यः ।।
यदि पृथ्वी का राज्य भी मिल जावे पर संतान नहीं हो तो वह राज्य अच्छा नहीं लगता

स्फुटवदनविकराल्लक्षितं चित्तदुःखम
मुख पर प्रकट हुए विकार से मानसिक दुःख प्रकट होता है।

क्व पात्रभेदोऽस्ति, धनप्रवर्षिणाम्।
धन की वर्षा करने वालों को पात्र भेद कहाँ होता है।

बहुरत्ना वसुन्धरा
यह पृथ्वी अनेक रत्नों से युक्त है।

अहो प्रमदहेतवोऽपि सुखयन्ति नो दुःखितान ।।
दुःखी मनुष्यों को हर्ष के कारण सुख नहीं पहुँचा सकते।

दैवमेव परं लोके चिक् पौरूपकारणम।
दैव और पुरुषार्थ में दैव की परम बलवान है। संसार में इस अकारण पुरुषार्थ को धिक्कार है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

केरियर

होटल मैनेजमेन्ट से बने धन कुबेर

होटल मैनेजमेन्ट को हिन्दी में होटल प्रबंधन कहते है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ होटल उद्योग से जोड़कर चीज का प्रबंधन किया जाता है। इसमें वित्त, लेखा, ग्राहक सेवा, कर्मचारी प्रबंधन, विपणन, खानपान प्रबंधन, होटल प्रशासन वगैरह शामिल है। इस कोर्स में इन सभी विषयों को बारीकी से सिखाया जाता है। यह कोर्स करने के बाद आप देश विदेश में नौकरी के पात्र बन सकते है।

कोर्सेस- डिप्लोमा इन फूड एंड विवरेज सर्विसेस
डिप्लोमा इन फ्रंट ऑफिस
डिप्लोमा इन बेकरी एंड कन्फेक्शनरी
डिप्लोमा इन हाउस कीपिंग
बेचलर ऑफ होस्पिटैलिटी मैनेजमेंट
बेचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट
बेचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट इन फूड एंड

अवाही- 3 साल से 4 साल तक

फीस- 1 लाख रूपये से लेकर 6 लाख रूपये तक

नौकरी- होटल प्रबंधक रेस्सरां प्रबंधक, इव्हेंट समन्वयक, फ्रंट डेस्क प्रबंधक, विक्रि और विपणन प्रबंधक, खाद्य और पेय प्रबंधक

वेतन- 6 से 9 लाख प्रति वर्ष से लेकर, 8 से 12 लाख प्रति वर्ष

इंस्टीटयूट- दिल्ली इंस्टीटयुट ऑफ मेनेजमेंट-दिल्ली
श्रीरूद्र इंस्टीटयुट ऑफ मेनेजमेंट-आरमुर
ए.आय.एम.एस.एम.एम कालेज ऑफ होटल मेनेजमेंट-पुणे
इंस्टीट्युट ऑफ होटल मेनेजमेंट-फरीदाबाद

दुनिया भर की बातें

जनवरी 2025

1 जनवरी

- लखनऊ : अरशद ने अपनी 4 बहिनों एवं माँ की हत्या कर दी।

- कार्टूनिस्ट हरीशचंद शुक्ला उर्फ काका का निधन हुआ वे 85 वर्ष के थे।

- गढ़चिरोलीः 1 करोड़ के इनामी 11 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया।

2 जनवरी

- अनु भाकर (निशानेबाज), डी. मुकेश (शतरंज), हरमनप्रीत सिंह (हॉकी), प्रवीण कुमार (पैराएथ लीट) खिलाड़ियों को खेल रत्न से सम्मानित किया गया।

- ढाकाः बांग्लादेश की अदालत ने हिंदू संत चिन्मय कृष्णादास को जमानत देने का इंकार किया।

- अमेरिका में चार हमले 24 घंटे में हुए 1 मृत, 10 घायल हुए।

3 जनवरी

- इंफालः मणिपुर के काकचिंग जिले से कांगली पाक प्रतिबंधित संगठन का एक उग्रवादी गिरफ्तार हुआ।

- पीथमपुरः 337 टन यूनियन कार्बाईड कचरे के खिलाफ प्रदर्शनकारियों ने आत्मदाह किया।

- अशोक कजपंथी, मुद्‌गल और निर्मला जैन को शलाका सम्मान की घोषणा हुई।

4 जनवरी

- परमाणु वैज्ञानिक राजगोपाल चिदंबरम का निधन हो गया वे 88 वर्ष के थे।

- विरूधुनगर (तमिल)ः एक पटाखे फैक्ट्री में विस्फोट हुआ 4 कर्मियों को मौत हुई।

- बांदीपोराः जिले में सेना का वाहन खाई में गिरा 3 सैन्यकर्मी शहीद हुए।

5 जनवरी

- पोरबंदरः तट रक्षक बल का हैलीकॉप्टर क्रैश हुआ 3 लोगों की मौत हुई।

- दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़)ः अबूझमाड़ में पुलिस मुठभेड़ में 4 नक्सली ढेर हुए।

- इजरायल ने गाजा पट्टी पर हमला किया 15 लोग मरे।

6 जनवरी

- बीजापुरः नक्सलियों ने जवानों की गाड़ी आई ई डी से उड़ाई 9 जवान शहीद हुए।

- कनाड़ा के प्रधानमंत्री जस्टिस टूडे ने इस्तीफा दिया।

- चेन्नई- विधानसभा में राष्ट्रगान का अपमान होने पर राज्यपाल आर एन रवि ने भाषण नहीं दिया।

7 जनवरी

- तिब्बात में 6.8 तीव्रता का भूकम्प आया 126 लोगों की मौत हुई। 188 घायल हुए।

- दुष्कर्म आरोप में 2013 में बंद कथावाचक आशाराम को सुप्रीम कोर्ट ने सशर्त जमानत दी । कोर्ट ने अनुयायिओं से मिलने पर रोक लगाई।

- बठिंडा (पंजाब)- जिले के बल्ली गांव की ग्राम पंचायत ने बिना शराब डी.जे. की शादी पर 21000 रूपये ईनाम घोषित किया।

8 जनवरी

- दिमा हसाओ जिले के 3 किलो खदान में 100 फीट पानी भरा 8 जिंदगी मुश्किल में फंसी 1 शव मिला।

- जाने माने फिल्म निर्माता, कवि, लेखक प्रीतीश नंदी का निधन हुआ वे 73 वर्ष के थे।

- लॉस एंजिलस (अमेरिका) 28000 एकड़ जंगल में आग लगी 30 हजार लोगों को विस्थापित किया गया।

9 जनवरी

- पाक आर्मी चौकियों पर तालिबान का हमला हुआ एटमी प्लांट के 16 बर्कर अगवा।

- तिरूपति बालाजी में भगदड़ मचने पर 6 श्रद्धालुओं की मौत हुई 40 अन्य घायल हुए।

- खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के चारों आरोपियों को जमानत मिली।

10 जनवरी

-कनाड़ा के पी.एम. पद के चंद्र आर्य ने दावेदारी पेश की।

- पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले में पशु तस्कारों के साथ बी.एस.एफ के जवानों की मुठभेड़ हुई। 10 बैल बरामद।

- एक अदालत ने हशमनी मामले में अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को दोषी करार दिया।

11 जनवरी

- बैतूल (म.प्र.) काला आखर स्टेशन के पास केबल टूटने से इटारसी बैतूल सेक्शन 7 घंटे बंद रहा।

- अभिनेता अल्लू अर्जुन को एक अदालत ने भगदड़ मामले में जमानत में ढील दी।

- दमोहः जिले में नाबालिक के साथ सामूहिक बलात्कार हुआ 3 लोगों ने कार में अगवा किया।

12 जनवरी

- देहरादूनः उत्तराखंड पोंडी जिले में बस खाई में गिरी 5 यात्री मरे 17 घायल हुए।

- नोएडाः एक केमिकल फैक्ट्री में आग लगी करोड़ों की सम्पत्ति खाक हुई।

- प्रोफेसर मो. अजदर धेरिवाला को लड़की का पीछा करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

13 जनवरी

- प्रयागराजः महाकुंभ मेले की शुरुआत हुई।

- श्रीनगरः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चीन सीमा से जोड़ने वाली जेड़ मोड़ की सुरंग का उद्‌घाटन किया।

- दिल्लीः धन कुहरे की चपेट में पूरा शहर आया।

14 जनवरी

- प्रयागराजः त्रिवेणी तट पर 3.5 करोड़ श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई।

-इस्लामाबादः पूर्व आई एस पी आर डी जी आसिफ गफ्फर को नजरबंद किया सम्पत्ति जब्त की।

- अंतरीक्ष मिशन में जल फूकने वाले बी. नारायवान इसरो के प्रमुख अध्यक्ष बने।

15 जनवरी

-दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक योल के देश द्रोह मामले में गिरफ्तार किया गया।

- ढाकाः बांग्लादेश के सुप्रीम कोर्ट ने खालिदाजिया को भ्रष्टाचार मामले में बरी किया।

दिल्लीः विधानसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवार प्रवेश वर्मा पर प्राथमिकी आचार संहिता उल्लंघन मामले में दर्ज हुई।

■ **16 जनवरी**

- फिल्मी अभिनेता सेफ अलिखान पर रात 2.30 पर चोर ने हमला किया उन्हें 6 चोटेंआई।

- बीजापुर (छत्तीसगढ़) मुठभेड़ में 12 नक्सली मारे गये।

- दक्षिण अफ्रीका की स्टिल फोंटेन में सोने की प्रतिबंधित खदान में फंसे 246 मजदूरों को बचाया गया 87 शव निकले।

■ **17 जनवरी**

- अलकादिर ट्रस्ट भ्रष्टाचार मामले में पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को एक अदालत ने 14 वर्ष की सजा सुनाई।

- पूणा-नासिक हाईवे पर खड़ी बस मिनी वैन टकराई 9 की मौत हुई।

- येरुशलमः इजरायल और हमास के बीच बंधक समझौते पर सहमति बनी।

■ **18 जनवरी**

- फिल्म अभिनेता सैफ अलि खान का संदिग्ध हमलावर आकाश कन्नौजिया को हिरासत में लिया।

-कोलकाता की एक अदालत ने ट्रेनी डॉक्टर से दुष्कर्म हत्या मामले में संजय राय को दोषी करार दिया।

- केरल की एक अदालत ने संरक्षित वन क्षेत्र में शिकार करने वाले हाथी के 3 शिकारियों को तीन साल की सजा सुनाई।

■ **19 जनवरी**

- फिल्म अभिनेता सैफ अली खान पर हमला करने वाला बांग्लादेशी मो. शरीफुल इस्लाम शहजाद को गिरफ्तार किया गया दुर्ग से पकड़ा गया आकाश को छोड़ा।

- ज्ञानेन्द्र सिंह को सी.आर.पी. एफ का महानिदेशक बनाया।

-शिलेन्द्र विस्फोट से महाकुंभ मेला प्रयागराज में आग लगी 18 शिविर जले कोई हताहत नहीं हुआ।

■ **20 जनवरी**

- डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप शपथ ली।

- कोलकाताः आर .जी. कर मेडीकल कॉलेज के ट्रेनी डॉक्टर से दुष्कर्म हत्या मामले में कोर्ट ने संजय रॉय से मरते दम तक कैद की सजा सुनाई।

- तिरूवनंतपुरमः ग्रीष्मा को बॉयफ्रेंड को जहर देकर मारने के आरोप में मौत की सजा सुनाई गई।

■ **21 जनवरी**

- गरियाबंद (छत्तीसगढ़) सुरक्षाबलों ने मुठभेड में 14 नक्सलियों को मार गिराया।

- शामली (उ.प्र.) एस.टी.एफ के बीच चली मुठभेड़ में 42 मिनट गोलीबारी चली इनामी बदमाश सहित 4 बदमाश मारे गये।

- अंकारी (तुर्की) एक होटल में आग लगने से 66 लोगों की मृत्यु हुई 55 लोग घायल हुए।

■ **22 जनवरी**

- जलगांवः पारघड़े स्टेशन के पास आग की अपवाह से यात्री ट्रेन से कूंदे 12 की मौत 22 घायल।

- अम्लोड़ा (उत्तराखंड) जंगल में आग लगने से 1 किमी. का जंगल खाक हुआ।

- सोना के 10 ग्राम का भाव 80000 हुआ।

■ **23 जनवरी**

- चेक बाउंस मामले में फिल्म निर्देशक राम गोपाल वर्मा को 3 माह की सजा एक अदालत ने सुनाई।

- बीजापुर (छत्तीसगढ़): नक्सल प्रभावित क्षेत्र से सुरक्षाबल ने 50 किलो

आई.ई.डी. बरामद की।

- पटनाः पूर्व विधायक अनंत सिंह पर हमला हुआ हमलावरों ने 50-60 गोलियाँ चलाई।

■ **24 जनवरी**

- भंडाराः आयुध निर्माण की एल.टी.पी में विस्फोट हुआ 8 कर्मियों की मौत 10 घायल हुए।

- शिलांगः मेघालय में 2 बांग्लादेशी घुसपैठियों गिरफ्तार हुए।

- भोपालः मध्यप्रदेश मंत्रीमंडल ने 17 धार्मिक शहरों में शराबबंदी का फैसला लिया।

■ **25 जनवरी**

- केन्द्र सरकार ने लोक गायिक शारदा सिन्हा सहित 139 पद्मश्री पुरस्कारों की घोषणा की।

- राष्ट्रीय स्कूल बेंड प्रतियोगिता में झारखंड के श्री कस्तूरवा गाँधी बालिका विद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

- अभिनेत्री ममता कुलकर्णी महामंडलेश्वर यामाई ममता बंद गिरी बनी।

■ **26 जनवरी**

- नई दिल्ली- कर्तव्य पथ पर देश के 5000 कलाकार जयतिमय भारत पर थिरके।

- समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कुंभ मेला में जाकर आस्था की डुबकी लगाई।

- जबलपुरः पटाखा दुकानों में भीषण आग लगी अफरा तफरी मची एवं आस्ट्रेलिया के लिथियम खदान में आग लगी।

■ **27 जनवरी**

- उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता लागू हुई।

- केरल हाईकोर्ट ने झूठे आरोपों के लिए संसद का कानून बदलने के लिए कहा।

- वक्फ संशोधन विधेयक को संयुक्त संसदीय समिति ने स्वीकृति प्रदान की।

■ **28 जनवरी**

- बड़ौतः (उ.प्र.) आदिनाथ निर्वाण दिवस पर मानस्तंभ की सीढी टूटने से 7 श्रद्धालुओं की मृत्यु हुई 75 घायल हुए।

- सर्बियाई के पी.एम. बुसेबिक ने इस्तीफा दिया । उनके विरूद्ध छात्रों ने उग्र प्रदर्शन किया।

- जयपुरः चिड़िया कबूतर सट्टे के लेन देन में एक युवक की मृत्यु हुई एक अन्य गंभीर हुआ।

■ **29 जनवरी**

- प्रयागराजः महाकुंभ मेला में भगदड़ मचने से 30 लोगों की मृत्यु हुई तथा 60 जन घायल हुए।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कम सोडियम वाले नमक खाने का सुझावदिया।

- मणिपुर पुलिस ने मादक पदार्थ तस्कारों को पकड़ा 37 नशीली दवाओं के पैकेट बरामद किये।

■ **30 जनवरी**

- अमेरिका में सेना का हैलीकॉप्टर 300 फीट ऊपर यात्री विमान से टकराया 67 की मौत हुई 30 शव मिले।

- सीतापुर (उ.प्र.): दुष्कर्म के आरोप में सांसद कांग्रेस राकेश राठौर को गिरफ्तार किया गया।

- पन्ना (म.प्र.) जे.के. सीमेन्ट फेक्ट्री की छत ढही 3 मजदूरों की मौत हुई 16 घायल हुए।

■ **31 जनवरी**

- राष्ट्रपति द्रौपदि मुर्मू ने ससंद के संयुक्त बजट सत्र को संबोधित किया।

- दिल्लीः चुनाव से पहले आप के 8 विधायकों ने पार्टी से इस्तीफा दिया।

- काँकेरः छत्तीसगढ़ 17 इनामी नक्सलियों ने समर्पण किया।

इसे भी जानिये

भारत के राष्ट्रपति

01	राजेन्द्र प्रसाद	1950-1962
02	सर्वपल्ली राधाकृष्णन	1962-1967
03	जाकीर हुसैन	1967-1979
04	व्ही व्ही गिरी	1969-1974
05	फकरूद्दीन अली अहमद	1974-1977
06	नीलम संजीवा रेड्डी	1977-1982
07	ज्ञानी जैल सिंह	1982-1987
08	आर व्यंकटरामन	1987-1992
09	शंकरदायल शर्मा	1992-1997
10	के. आर नारायणन	1997-2002
11	ए. पी. जे. अब्दुल कलाम	2002-2007
12	प्रतिभा पाटील	2007-2012
13	प्रणव मुखर्जी	2012-2017
14	रामनाथ कोविंद	2017-2022
15	द्रौपरी मुर्मु	2023- अभी जारी

कविता

नई दुनिया रचेंगे

❊ संस्कार फीचर्स ❊

नई दुनिया रचेंगे नया वर्ष का पहला दिन
नई ज्योति नया सबेरा दुनिया ने ली करवट
आई नई आहट हम बदलेंगे युग बदलेगा
छोटा सोच अब बड़ा सोच बनेगा सबके विकास की
दिशा बदलेगी, विश्व शांति विश्व मैत्री की बात होगी
हिंसा क्रूरता का होगा अंत शांति की बात करेंगे संत
धर्म जाति की बात को छोड़ दानवता को मानवता में मोड़
करूणा प्रेम का होगा उदय युद्ध नहीं,
चाहेंगे महावीर बुद्ध संकीर्ण नहीं हम खुले में सोचे
मानवता का सम्मान कर नई दुनिया रचेंगे।

दिशा बोध

कीर्ति

1. गरीबों को दान दो और कीर्ति कमाओ, मनुष्य के लिए इससे बढ़कर लाभ और किसी में नहीं हैं।
2. प्रशंसा करने वालों के मुख पर सदा उन लोगों का नाम रहता है, जो गरीबों को दान देते हैं।
3. जगत् में सब वस्तुएँ नश्वर हैं, परन्तु मनुष्य की एक अतुल कीर्ति ही नश्वर नहीं हैं।
4. देखो, जिस मनुष्य ने दिगन्तव्यापी स्थायी कीर्ति पायी है, स्वर्ग में देवता लोग उसे साधु-सन्तों से बढ़कर मानते हैं।
5. वह विनाश जिससे कीर्ति में वृद्धि हो और वह मृत्यु जिससे लोकोत्तर यश की प्राप्ति हो-ये दोनों चीजें महान् आत्मबलशाली पुरुषों के मार्ग में ही आती हैं।
6. यदि मनुष्य को इस जगत् में पैदा ही होना है, तो उसको चाहिए कि वह सुयश उपार्जन करे। जो ऐसा नहीं करता, उसके लिए तो यही अच्छा था कि वह जन्म ही न लेता।
7. जो लोग दोषों से सर्वथा रहित नहीं हैं, वे स्वयं निज पर तो नहीं बिगड़ते; फिर वे अपनी निन्दा करने वालों पर क्यों क्रुद्ध होते हैं? अर्थात् स्वयं को ही दोषों से मुक्त होना चाहिये, किसी पर क्रोध नहीं करना चाहिए।
8. निःसन्देह यह मनुष्यों के लिए बड़ी लज्जा की बात है कि वे उस चिरस्मृति का सम्पादन नहीं करते, जिसे लोग 'कीर्ति कहते' हैं।
9. बदनाम लोगों के बोझ से दबे हुए देश को देखो; उसकी समृद्धि भूतकाल में चाहे कितनी ही बढ़ी-चढ़ी क्यों न हो, धीरे-धीरे नष्ट हो जायेगी।
10. वही लोग जीते हैं, जो निष्कलंक जीवन व्यतीत करते हैं, और जिनका जीवन कीर्तिविहीन है, वास्तव में वे मुर्दे हैं।

आगमानुरूप अनुशासित चर्या के धनीः पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प

❊ डॉ. मनोज जैन, निर्लिप्त, (अलीगढ़) ❊

आज से लगभग 100 वर्ष पूर्ण आषाढ़ शुक्ल अष्टमी सं. 1981 अर्थात् 10 जुलाई सन् 1924 ई. को तत्कालीन ओरछा रियासत के ककरवाहा गाँव में जन्में पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प आगमानुरुप जीवन-चर्या के धनी थे। इनके पिता श्री मन्नूलाल जी जैन भी माननीय प्रतिष्ठाचार्य तो थे ही, सुप्रसिद्ध वैद्यराज भी थे तथा इनकी माताजी श्रीमती हरबाई जी धार्मिक आस्थावान सुगृहिणी थी। 17 वर्ष की वय में इनका विवाह निकटवर्ती ग्राम लार निवासी श्री भूरेलाल जी की बेटी आयुष्मती रामवती जी के साथ हुआ।

निष्ठा, निस्पृहता के साथ-साथ संयम व चरित्र के धनी पं. श्री गुलाबचन्द्र जी पुष्प अपने पिता श्री से सत्प्रेरणा लेकर आगमनिष्ठ सम्माननीय सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य बने, साथ ही अपने सुपुत्र श्री जयकुमार जी निशान्त को भी कुशल एवं निष्णात प्रतिष्ठाचार्य बनाया। यहाँ बात पं. जी के सुपुत्र निशांत भैया जी की भी चल पड़ी है तो यह सुस्पष्ट करना प्रासांगिक होगा कि निशांत भैया जी ने तो संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर रखा है एवं इस प्रकार संयम पथ पर अग्रसरित हैं।

तीर्थ-संरक्षण, समाज सेवा एवं शिक्षा के क्षेत्र में पंडित जी सदा अग्रणी रहे। ये पौराणिक, ऐतिहासिक विरासत के धनी अतिशय क्षेत्र श्री नवागढ़ जी (जिला ललितपुर उ.प्र.) के संरक्षक बनकर रहे, श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र आहार जी स्थित शांतिनाथ दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय के सम्माननीय अधिष्ठाता होने के साथ-साथ ये श्री दिगम्बर जैन आदिनाथ नया मंदिर टीकमगढ़ के संरक्षक रहे आये। पुनश्चः, इन्होंने शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, मुरैना के कुलपति पद का गुरुतर भार अपने जीवन-काल में सँभाला, विद्यासागर विद्यानिधि ट्रस्ट, सागर के ट्रस्टी बनकर छात्रों को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करते रहे एवं विद्वत परिषद को अपनी महती सेवायें देते हुए उसकी कार्यकारिणी में समाहित रहे आये। इन्होंने पंडित मन्नूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट के संयोजकत्व का भार सँभाले रखा तथा अकलंक औषधालय, ककरवाहा के भी संचालक माननीय पंडित जी बने रहे।

आगमानुकूल चर्या के अंतर्गत प्रतिमाधारी होने के कारण शुद्ध मर्यादित भोजन ही ग्रहण करने वाले पंडित जी की विशेषता यहभी बनी रही कि ये जहाँ कहीं भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा या विधान कराने जाया करते थे, वहाँ इनकी अपनी भोजनशाला इनके साथ चलती थी, जिसके माध्यम से ये आतिथ्य-सत्कार का भी वात्सल्यपूर्ण लाभ उठाते रहे, क्योंकि इनकी भोजनशाला में व्रती-साधकों को शुद्ध भोजन सहजता से उपलब्ध रहा करता था। विविध विद्वत संगोष्ठियों का लाभ तो इनके पांडित्य में विद्वान - मनीषियों, चिन्तकों, विचारकों को मिलता ही रहा।

इनके पिता श्री मन्नूलाल जी से इन्हें अपने जीवन-काल में यम-नियम धारण करने की प्रेरणा सदा मिलती रही तथा इनको दिनचर्या से प्रेरित करने में पंडित श्री शीलचन्द्र जी न्यायतीर्थ साढूमल एवं पंडित श्री प्रभुदयाल जी शास्त्री साढूमल का भी महत्वपूर्ण विशेष योगदान रहा। इन्होंने सन् 1981 में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलगिरि (कोनीजी), पाटन (जबलपुर) में 16 मार्च 1981 को श्रावक की दो प्रतिमा-व्रत धारण किए तथा

सन् 1993 में महाराज श्री (आचार्य श्री विद्यासागर जी) के अमरकंटक क्षेत्र प्रवास के मध्य उनसे अपने लिए दिन में एक बार भोजन सायं को पेय पदार्थ का प्रतिदिवसीय नियम ग्रहण किया, जिसे वे अनवरत आजीवन निभाते रहे। इन्होंने टमाटर, पपीता, ऊनी वस्त्र, विदेश-गमन का आजीवन परित्याग कर रखा था।

पंडित जी की दिनचर्या व्यवस्थित थी एवं ये प्रेरणास्पद अनुशासित जीवन-शैली के पक्षधर एवं परिपालक सदा बने रहे। परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों, इनकी श्रावकाचार सम्बंधी षट् आवश्यक क्रियाओं में कोई न्यूनता या शिथिलता नहीं आने पाऐं एतदर्थ ये सदा सजग रहा करते थे। एक बार इनकी सुपुत्री कु. चन्दन सांधेलीय नेशनल हॉस्पिटल जबलपुर मैं मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित होकर जीवन संघर्ष कर रही थी। पंडित जी उन्हें देखने चिकित्सालय गए। वहाँ इनके रूके रहने के दौरान, जब सूर्यास्त हो गया, तो ये वहीं चिकित्सालय/हॉस्पिटल की बैंच पर बैठकर सामायिक क्रिया में संलग्न हो गए। एक अन्य घटना इस प्रकार है कि 13-14 अगस्त 199 ई. को द्रोणगिरि जी में दो दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन था। प्रतिदिवसीय दिनचर्यानुसार पंडित जी 14 अगस्त को प्रातः 4 बजे उठकर सामायिक में बैठे हुए थे, तभी बिजली चली गई। सामायिक पश्चात् पंडित जी ने टॉर्च निकाली और नित्य पढ़े जाने वाले स्तोत्रों का पाठ टॉर्च के प्रकाश में ही प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार, विषम परिस्थितियोंजन्य प्रतिकूलताओं को भी सहज अनुकूलताओं में परिवर्तित कर देने का श्लाघनीय एवं विलक्षण गुण पंडित जी में विद्यमान था।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के निरन्तर सम्पर्क में रहने वाले पंडित जी अपनी चर्या में प्रमादवश लगे दोषों की आलोचना करते रहकर, समय-समय पर उनसे समुचित प्रायश्चित लेते रहते थे। अपने जीवन की अतिंम बेला में इन्होंने गृह-त्याग कर दिया और इन्दौर के श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में ठहरे रहे। वहाँ प्रातः काल, मध्यकाल एवं सायंकाल, इस प्रकार तीनों कालावधि में भरपूर धर्म-लाभ प्रदान करते रहे।

13 दिसम्बर 2014 को पंडित जी ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर के साथ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शनाथ श्री नेमावर सिद्धक्षेत्र पहुँचे। वहाँ आचार्य श्री से चर्चा करके विगतकालीन चर्या में लगे अतिचारों/दोषों का इन्होंने, आचार्य श्री से प्रायश्चित लिया, साथ ही निज-समाधि की भावना व्यक्त की। आचार्य श्री ने पंडित जी की शारीरिक स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए इन्हें आवश्यक निर्देश दिए तथा अष्टमी, चतुर्दशी को उपवास का नियम देकर समाधि-भावना का आशीर्वाद प्रदान किया। तदोपरान्त 5 जनवरी 2015 की घटना है कि दो दिन से उपवासी रहने के बावजूद पंडित जी ने श्री जिनाभिषेक करते हुए प्रातः कालीन स्वाध्याय करने-कराने के साथ-साथ ब्रह्मचारी भैया-बहिनों एवं श्रावक-श्राविकाओं की शंकाओं का समाधान किया। फिर सायंकालीन जल-ग्रहण के पश्चात् जब ये कायोत्सर्ग- प्रक्रिया में संलग्न थे, तभी इन्हें देह-विसर्जन का आभास हुआ। इन्होंने अबिलम्ब अपने वस्त्रों के त्याग का संकेत दिया तथा कायोत्सर्ग करते हुए देहावसान करके अग्रिम शुभ गति में प्रयाण किया।

इस प्रकार मानव पर्याय को सार्थक कैसे किया जाए इस प्रश्न के जीवन्त उत्तर-स्वरूप रहा आदरणीय पंडित श्री पुष्प जी का समग्र जीवन। हम सभी उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर अपने-अपने आगामी भव को सुधारकर, यथाशीघ्र सत्सुखदायी मुक्ति-लाभ की ओर अग्रसरित हों , यही पंडित जी के जीवन से सत्प्रेरणा ग्रहण किया जाना कहलायेगा एवं यही आदरणीय पंडित जी के प्रति अंतरंग भावभीनी श्रद्धांजलि कहलायेगी।

जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी पर सौ रुपये का सिक्का जारी

भारत सरकार के वित्त मंत्रालयगत आर्थिक कार्य विभाग, नई दिल्ली के द्वारा भारत का राजपत्र (सी.जी.-डी.एल.ई-31012025-260665), असाधारण (भाग-2 खण्ड 3-उप खण्ड (1) में नं. 62 पर 31 जनवरी 2025 को जी.एस.आर 95 (ई) क्रमांक पर अधिसूचना प्रकाशित कराई गई है। उसके अनुसार केन्द्रीय सरकार ने संत शिरोमणि दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के माघ शुक्ल अष्टमी की रात्रि (दिन में प्रातः 8.15 बजे तक अष्टमी, तदुपरान्त नवमी प्रारंभ हो जाने के कारण) माघ शुक्ल नवमी, वीर निर्वाण संवत् 2550, विक्रम संवत् 2080, शक संवत् 1945 (17 फरवरी 2024, शनिवार की रात्रि में 2.35 पर) तदनुसार 18 फरवरी 2024, रविवार की पूर्व रात्रि में पंजिका योग, अमृत योग, अमृतकाल, सर्वार्थसिद्धि योग, अमृतसिद्धि योग, रवि योग, रोहिणी नक्षत्र के तृतीय पाद में समाधिमरण होने के उपरान्त आचार्य श्री जी के प्रथम समाधि दिवस के प्रसंग पर टकसाल में एक सौ रूपये मूल्यवर्ग का सिक्का ढालने का निर्णय किया था। इस सिक्के का लोकार्पण श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र चन्द्रगिरि, डोंगरगढ़ जिला- राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ में आयोजित समारोह में आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज के प्रथम समाधि दिवस 06 फरवरी 2025 गुरुवार को देश के गृहमंत्री श्री अमित शाह के द्वारा किया गया।

44 किलोमीटर वाले वृत्ताकार बाह्य व्यास वाला उपर्युक्त सिक्का 35 ग्राम मानक वजन वाला है। इसमें 200 दांतों वाले किनारों की संख्या है तथा 50% चाँदी, 40% तांबा, 05% निकिल एवं 05% जस्ता रूप चतुर्थक मिश्रधातु की संरचना है। इस सिक्के अग्रभाग के मध्यम में अशोक स्तम्भ का सिंह स्तम्भ शीर्ष पर है, जिसके नीचे **सत्यमेव जयते** लेख उत्कीर्णित है। उसकी बाई परिधि पर देवनागरी लिपि में **भारत** शब्द और दाई परिधि पर अंग्रेजी में INDIA MAHAMUNIRAJ शब्द लिखा है। सिंह स्तम्भ के नीचे रूपये का प्रतीक ₹ और अंतराष्ट्रीय अंकों में 100 मूल्य अंकित है।

उपर्युक्त सिक्के के पृष्ठभाग के मध्य में सन्त शिरोमणि जैनाचार्य विद्यासागर महामुनिराज का चित्र है। इस चित्र की बाई कमण्डल (भारत की सन्तपरम्परागत जलपात्र रूप शौचोपकरण) तथा दाई तरफ पिच्छी (दिगम्बर जैन साधुओं के द्वारा जीवदया के परिपालनार्थ प्रयुक्त किये जाने वाला संयमोपकरण) का चित्र है। इसकी ऊपरी परिधि पर देवनागरी लिपि में संत शिरोमणि दिगम्बर जैनाचार्य विद्यासागर महामुनिराज तथा अंग्रेजी में SANT SHIROMANI DIGAMBER JAINACHARYA VIDHYASAGAR MAHAMUNIRAJ वर्णित है। साथ ही आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के चित्र के नीचे अंतर्राष्ट्रीय अंकों में वर्ष 1946-2024 (जन्म वर्ष-समाधिमरण वर्ष) का उल्लेख है।

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल (जी 88 सी+7QF) तरतला, डायमण्ड हर्बर रोड, अलीपोर मिंट कॉलोनी, अलीपोर, कोलकाता-700053, पश्चिमबंगाल, फोन- 033-24010132 https//www.igmkolkata.spmcil.com, www.spmcil.com, Email-Calmint@spmcil.com स्थित इस भारत सरकार की टकसाल से आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज का एक सौ रूपयो मूल्य वाला सिक्का ढाला गया है। इस सिक्के की प्राप्ति हेतु कोलकाता टकसाल के उपरिलिखित पते, बेवसाइट, ई-मेल फोन पर संपर्क करके प्राप्त किया जाना निकट भविष्य में संभव हो सकेगा। भले ही उक्त सिक्के का मूल्य एक सौ रूपये है किन्तु वास्तविक रूप में इसकी प्राप्ति हेतु अनुमानतः चार से ग्यारह हजार रूपयों के बीच में राशि टकसाल के द्वारा निर्धारित होने का अनुमान है। अतः जिन संस्थाओं, संगठनों, व्यक्तियों, धर्मश्रद्धालुओं या आचार्य

श्री विद्यासागर जी के प्रति आस्थावान् महानुभावों को उक्त सिक्का को प्राप्त करने की अभिलाषा हो, उसके लिए टकसाल द्वारा निर्धारित मूल्य तथा सिक्का को प्रेषित किये जाने हेतु डाक व्यय भी अतिरिक्त रूप में अग्रिम जमा करके इच्छित संख्या में सिक्कों को आरक्षित करवाना है। इस कार्य को सम्पादित करवाने के लिए भारत सरकार की कोलकाता आदि टकसालों में स्थित निम्नलिखित व्यक्तियों से संपर्क किया जा सकता है -

कोलकाता-

1. श्री सागर हेमंत आत्राम, एएम-मार्केटिंग, मो. 80877-78809
Email-sagar.atram@spmcil.com
2. श्री विवेक कुमार सिंह एएम-मार्केटिंग, मो. 63854-71488
Email-singh.vivek@spmcil.com

हैदराबाद-

1. श्री दुर्गेश देशमुख सहायक प्रबन्धक-मार्केटिंग, फोन 040-27268300 Extn-110
Email-durgesh.deshmukh@spmcil.com

मुम्बई-

1. सुश्री हिमांशी, एएम-मार्केटिंग, फोन-022-22600250
Email-Himansshi@spmcil.com
2. श्री मनीष कुमार, प्रबंधक मार्केटिंग, Email-Manish.Kumar@spmcil.com

सेक्युरिटी प्रिंटिंग एण्ड मिंटिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड SPMCIL के अंतर्गत भारत सरकार की कोलकाता, हैदराबाद तथा मुम्बई नगरों में टकसालें स्थित हैं जहाँ से सिक्कों का निर्माण एवं विक्रय किया जाता है। अतः किसी भी प्रकार की बुकिंग/ईकॉमर्स से संबंधित समस्या के संबंध में ग्राहक देखभाल के लिए सार्वजनिक अवकाश के दिनों को छोड़कर सोमवार से शुक्रवार तक के दिनों में प्रातः 10 से शाम 5 बजे तक फोन- 011-43582259, Email-support@spmcil.com पर भी संपर्क किया जा सकता है। कोलकाता के उपर्युक्त पते के अतिरिक्त भारत सरकार टकसाल, शहीद भगत सिंह मार्ग, फोर्ट, मुम्बई, महाराष्ट्र 400001, फोन- 022-22663199, 222662555 Extn.132, फैक्स 022-22661450 https//igmmumbai.spmcil.com, Email:igm.mumbai@spmcil.com तथा भारत सरकार टकसाल, आईडीए चरण-2 चेरलापल्ली, आर.आर. जिला, हैदराबाद-500051, तेलंगाना फोन- 040-27268300, फैक्स-040-27268300, https://igmhyderabad.spmcil.com, Email-igm.hyderabad@spmcil.com पर भी संपर्क करके सिक्के की बुकिंग सुनिर्धारित की जा सकती है।

इनके अतिरिक्त श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र चन्द्रगिरि डोंगरगढ़ जिला राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ में निर्मित हो रहे आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की समाधिस्थली के कार्यकर्त्ता श्री विनोद बडजात्या, रायपुर (छत्तीसगढ़) मो. 94252-52525 एवं श्री मनीष जैन, जो. 9425531401 से संपर्क कर सिक्कों हेतु

(सिक्का का अग्र भाग)

यह सिक्का 4100/-

रूपये न्यूनतम राशि समाधि स्मारक के खाता
Name: Shri DJCTKT VIDHYASAGAR SAMADHI STHALI
Ac No: 99911008108105
IFSC Code: HDFC0000919
Bank Name: RAJNANDGAON

(सिक्का का पृष्ठ भाग)

कहानी

कहानी पर सवाल

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

शाम के छः बज रहे थे कल्पना और कहानी दोनों ड्राइंग रूम में बैठी टीवी को देख रही थी चैनल पर एक कहानी चल रही थी चूंकि कल्पना एक पुराने विचारों की और अपनें साधुओं में पूरा विश्वास रखने वाली धर्मात्मा महिला थी कल्पना की शादी जब से हुई, तब से ही कल्पना ने अपने गुरुजनों का सम्मान किया, गुरुओं को आहार दिया गुरुओं के पास बैठी और गुरुओं की गोचरी में भी हमेशा साथ में जाया करती थी लेकिन उसके बेटे नकुल कि जब से शादी हुई पहली चीज तो नकुल की शादी बहुत दिनों बाद हुई और नकुल की शादी एक जैन लड़की से तो हुई। वह जैन लड़की कहानी जिसका नाम था वह बहुत दूर मध्यप्रदेश से मुंबई में उसकी शादी हुई। कहानी बहुत खुश थी उसको एक अच्छा पति संपन्न परिवार और कहानी के लिए हमेशा सपोर्ट करने वाली कल्पना एक सास भी थी। कल्पना और कहानी की खूब पटरी बैठा करती थी कभी भी कहानी कल्पना की किसी भी बात को काटा नहीं करती थी। कहानी ने इतिहास से एम.ए. किया था और वह भी अंशीऐन्ट हिस्ट्री से कहानी का इतिहास में बहुत बड़ा लगाव था कहानी जब भी कुछ किया करती थी तो निश्चित तौर पर कहानी के लिए यह बात पता लगती थी कि मैं जो कुछ भी कर रही हूं वह अपने अच्छे कार्य के लिए कर रही हूं और वह हमेशा कल्पना को खुश रखने में ही अपने जीवन की सफलता मानती थी प्रकाश भाई झवेरी उसके ससुर थे वे भी कल्पना की तरह कहानी को अपनी बेटी माना करते थे। कहानी के साथ सदैव अच्छा व्यवहार करते थे कहानी के पहनने खाने और हर चीज का खूब ध्यान रखते थे। कहानी को कभी कभी उन्होंने साड़ी पहनने के लिए बाध्य नहीं किया। कहानी जब भी कल्पना के साथ संघ में जाया करती थी तो वे साधु हमेशा एक बात कहते थे कल्पना तुम तो साड़ी पहनती हो सिर भी ढकती हो लेकिन तुम्हारी जो बहू है यह न सिर ढकती है न साड़ी पहनती है सलवार सूट में रहती है इसको तो साड़ी पहनने की बात क्यों नहीं कहती। तो कल्पना कहती है कि महाराज साहब हमारी बहुत जो है समय समय पर साड़ी अवश्य पहनती है दीपावली के समय में भी पर्युषण के समय में भी और ये कहानी अट्ठारह दिन के पर्युषण मनाया करती है क्योंकि हमारी बहू दिगंबर से आई है इसलिये यह दिगंबर के भी पर्यूषण दस दिन के मानती है

और श्वेताम्बर के आठ दिन के भी मनाती है। मेरे साथ यह भी आठ दिन तप करती है।

कहानी की कहानी आगे बढ़ती गई जब कहानी और कल्पना दोनों एक साथ बैठती कहानी एक बात कहती मम्मी आप आज प्रवचन सुनने गई थी तो प्रवचन में आपने क्या सुना कहानी ने कहा कि आपने जो प्रवचन सुना वह क्या आप हमें बता सकती है तो कल्पना ने कहा आज बहुत अच्छी कहानी हमारे महाराज साहब ने सुनाई और उनकी कहानी सुनकर के मैं एक अलग दृष्टि रखने लगी हूँ मुझे ऐसा लग रहा है कि प्राचीन तो हमारा श्वेताम्बर धर्म ही है कल्पना की बात सुनकर के कल्पना और कहानी दोनों के बीच में नोक झोक अवश्य होने लगी कहानी ने कहा मम्मी में अंशीऐन्ट हिस्ट्री की विद्यार्थी हूँ मुझे कुछ एक बात पता है कि श्वेतांबर और दिगंबर की उत्पत्ति कब और कैसे हुई कल्पना की बात यह गले नहीं उतरी। क्योंकि उसे यह पता था कि हमारे महाराज साहब जो भी कहते हैं वो बिल्कुल सही कहते हैं लेकिन कहानी का कहना यह था कि मैंने जो इतिहास में पढ़ा है वह गलत नहीं हो सकता है सबसे पहले कहानी ने कहा मम्मी बताओ आज अपने प्रवचन में क्या सुना तो कल्पना ने कहा कि हमारे आज महाराज साहब आवश्यक वियुक्ति से हमे प्रवचन सुना रहे थे।

उन्होंने प्रवचन में आज सुनाया कि एक शिवभूति नाम का पाटलिपुत्र में युवक रहता था वह पाटलिपुत्र में युवक जो है वह सेना में था और सेना में होने के कारण से वह वीर था बहादुर था लेकिन उसकी सब अच्छाईयाँ होने के बावजूद भी एक बात थी कि वह देर रात घर आता था और देर रात घर आने के कारण से उसकी पत्नी बहुत परेशान हो चुकी थी एक दिन उसकी पत्नी ने अपनी सास से कहा माँ साहब आपका बेटा जो है बहुत देर से रात में आता है और मैं जागती रहती हूँ मैं परेशान हो जाती हूँ। तो उसकी मां ने कहा बेटा तुम आज सो जाओ जब वह घर आएगा तो मैं शिवभूति से बात करूंगी शिवभूति जब घर आया तो उसकी मां ने कहा कि तुम इतनी रात तक कहा रहे शिवभूति ने कोई जबाब नहीं दिया तो माँ चिढ़ गई और माँ ने चिढ़ करके बोला तो ठीक है यदि तुम्हें ऐसा कही करना है तो एक काम करो तुम्हारे लिए इस घर में कोई जगह नहीं है तुम जाओ जहां तुम्हें घर मिले जिसका भी घर मिले उसके यहाँ सो जाओ। इस घर में कोई जगह नहीं। मां के द्वारा की गई भर्त्सना से पीड़ित होकर के शिवभूति ने एक उपाश्रय में जाकर सो गया। जब सुबह हुआ तो शिवभूति ने गुरु महाराज से अपनी व्यथा कथा कही और यह कहा महाराज साहब हम आपसे दीक्षा लेना चाहते हैं और करूणा करके गुरु महाराज साहब ने शिवभूति का दीक्षा दे दी शिवभूति दीक्षा लेकर कि वहां से रथनपुर से आगे बढ़ गया और बिहार करते करते सहज एक दिन फिर शिवभूति बहुत कालान्तर बाद रथनपुर आया तो रथनपुर के राजा सहस्त्रमल्ल ने उसे एक रत्न का कंबल सम्मान में भेंट दिया जिसे शिवभूति ने ग्रहण कर लिया है शिवभूति के कंबल ग्रहण करने के बाद उनके गुरु महाराज को वह कंबल रत्न जड़ित था पसंद नहीं आया क्योंकि इतना बड़ा परिग्रह रखना उनके लिए उचित नहीं लगा। इसलिए उन्होंने शिवभूति से कहा कि तुम ये रत्न का कंबल छोड़ दो परंतु शिवभूति वह रत्न का कंबल छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। एक दिन उनके गुरु ने उस कंबल के टुकड़े टुकड़े तब किये जब शिवमूर्ति गोचरी के

लिए गया था लौटकर के उसने देखा रत्न के कंबल के टुकड़े-टुकड़े हो गए और वो टुकड़े जो है उधर सब साधको में बट चुके थे उसे बहुत दुख हुआ और वह अपने स्थविर कल्पी के पास गया और स्थविर कल्पी के पास जाने के बाद उसने कहा महाराज साहब हमारे कंबल को काट दिया गया सबको वाट दिया गया ये क्या उचित है। तो स्थविर कल्पी ने कहा कि शिवभूति तुम बिल्कुल भी खेद मत करो और ना ही तुम कंबल से मोह करो क्यों कि कंबल जो है तुम्हारा गुरु महाराज ने काटा है परन्तु इसके पहले जिनकल्पी हुआ करते थे वो जिनकल्पी जो होते थे वो जिनकल्पी हमेशा नग्न रूप में ही रहा करते थे और नग्न रूप में रहने के कारण से जिनकल्पी मुनि हमेशा अपने लिए वस्त्र का त्याग करके नग्न रहते थे तो शिवभूति ने जब इस बात को सुना तो वह भी नग्न होकर के दिगंबर रूप में साधना करने लगा और उसी ने बोटिक दिगंबर मत की स्थापना की और यही से दिगंबर मत प्रारंभ हो गया।

कल्पना के मुंह से इस कहानी को सुनकर के कहानी भी चुप नहीं रह पाई कहानी ने कहा मम्मी आप अगर मुझे आज्ञा दे तो मैं आपकी इस कथा और इस कहानी पर कुछ सवाल कर सकती हूं क्या कल्पना ने कहा कहानी मैंने तुम्हें कभी किसी चीज पर रोका है क्या कहानी ने कल्पना की गोदी में अपने सिर रखकर के कहाँ माँ तुम मेरी सच्ची मां हो और मैं तुमसे आशीर्वाद लेती रही हूं और आशीर्वाद लेकर के मैंने सदैव अपने जीवन को बहुत अच्छा बनाया है और मैं आपके आशीर्वाद से ही आपकी बेटे नकुल की प्रिय पात्र बनी हुई हूँ इसलिये मैं आपसे हमेशा आशीष की ही उम्मीद रखती हूँ कल्पना ने कहा लेकिन बेटा ये कहानी मैं नहीं कह रही हुँ यह कहानी आवश्यक निरयुक्ति में लिखी हुई है जिसे पढ़कर के गुरु महाराज साहब ने मुझे सुनाई है कहानी ने कहा कि माँ आपको मालूम है कि मैं इतिहास की विद्यार्थी रही हूँ मैने इतिहास को बहुत अच्छे से पढ़ा है कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया को भी मैंने पड़ा है जिसमें विन्सेंट स्मिथ ने ये बताया है कि जब भारत के उत्तर भारत में एक महामंडलेश्वर के नाम से महामंडलिक राजा हुए जिसका नाम चन्द्रगुप्त मौर्य था जिस चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में आचार्य भद्रबाहु मुनि हुए और भद्रबाहु स्वामी जब पाटलिपुत्र में थे चन्द्रगुप्त उनसे प्रभावित हो गया इसके बाद बारह साल का अकाल का अनुमान जब भद्रबाहु स्वामी को पता लगा तो उन्होंने अपने बारह हजार शिष्यों के साथ दक्षिण भारत की ओर विहार कर दिया और विन्सेंट स्मिथ इस पर लिखते हैं इसके साथ यह जब वो बिहार करके दक्षिण भारत पहुंच गए तो दक्षिण भारत से उनका बारह वर्ष में वही पर श्रवणबेलगोला में समाधि हुई जिनका समाधि स्थल मैंने भी देखा है शायद आपने भी देखा होगा चंद्रागिरी गुफा के अंदर उनका समाधि स्थल है।

हाँ बेटी मैंने भी समाधि स्थल देखा है जब तुम्हारे श्रवणबेलगोला में बारह वर्ष के बाद महामस्तकाभिषेक हुआ था और जैनों का कुंभ लगा था उसमें बेटी एक बार में भी होकर के आई हुँ मैं दिगम्बर श्वेताम्बर में भेद नहीं करती हूँ मैं तो जैन और तू भी जैन है तो जैन ही रहना तब कहानी ने कहा मम्मी अब यह बात अगर आप कह रही है तो अर्वाचीन और प्राचीन की बात जब आप कहेंगी आपके गुरु महाराज कहेंगे तो हमारे और आपके प्रेम के बीच में थोड़ा ना थोड़ा तो अंतर अवश्य आयेगा। क्योंकि मैं गढ़ाकोटा की रहने वाली हूँ

गढ़ाकोटा में मेरा जन्म हुआ मैं अपनी उमर के पच्चीस वर्ष तक दिगंबर के मंदिर में रही और आज भी मैं दिगंबर रूप को ही ज्यादा श्रेष्ठ मानती हूं। ये मेरी मान्यता है लेकिन जब अर्वाचीन और प्राचीन की आप बात करेंगे मम्मी तो निश्चित तौर पर आपके और हमारे बीच में कुछ ना कुछ भेद अवश्य आएगा लेकिन रिश्ते नहीं टूटेंगे रिश्ते तो ज्यों के त्यों रहेंगे आप मेरी सास रहेगी मैं आपकी बहू रहूंगी लेकिन सवाल इस बात का है जब बारह वर्ष का अकाल खत्म हो गया विशाखाचार्य लौटकर के आए तो यहां पर उत्तर भारत में जो घटना घटी उस आधार पर कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया में लिखा है कि वहां पर सबसे पहले नंबर बारह वर्ष के अकाल के बाद विशाखाचार्य ने देखा कि साधु सफेद कपड़े में आ चुके हैं उन्होंने समझाया तो स्थूल भद्र तो मान गए लेकिन उनके संघ के साथी नहीं माने और उनमें झगड़ा होने के बाद दिगंबर और श्वेताम्बर दो मतों का यहीं से ही आरंभ हो गया इसके साथ साथ जब मैं ऐसी अंशीएंट हिस्ट्री ऑफ इंडिया पढ़ रही थी आर सी मजूमदार ने भी अपनी पुस्तक में उन्होंने भी लिखा है मुझे पेज नंबर याद नहीं आ रहा है मम्मी लेकिन में आपके लिए ये बता सकती हूं कि उसमें भी उन्होंने इंग्लिश में लिखा है और यही के यही कहानी भी लिखी इसके साथ साथ प्राचीन भारत के राजवंश एक पुस्तक और भी मैंने पढ़ी जिसमें विश्वेश्वरनाथ रेऊ जी ने ये लिखा है कि बारह वर्ष के अकाल के बाद तथा भद्रबाहु स्वामी के अंतिम श्रुत केवली के बाद में यह भारत में जैनों के दो पंथ बन गए एक दिगंबर और एक श्वेताम्बर इसके बाद साथ में यह भी एक हार्ट ऑफ जैनिज्म पुस्तक में भी मिलता है और जैन लिटरेचर हिस्ट्री ऑफ जैन लिटरेचर मे भी यही के यही कहानी मिलती है जितने भी इतिहासकारों को मैंने पढा हैं वह सारे के सारे इतिहासकार एक बात कहते हैं कि भद्रबाहु स्वामी दक्षिण भारत गए अकाल पड़ा बारह वर्ष के अकाल के बाद और उन्होंने जब अपनी समाधि के बाद उनके शिष्य विशाखाचार्य यहा आए तो उन्होंने श्वेताम्बर और दिगंबर कपड़ों को सफेद वस्त्र में देखा साधुओं का और साधुओं को कपड़े में वस्त्र में देखकर के उन्होंने समझाया भी तो कुछ तो समझ गए और कुछ नहीं समझे यहीं से श्वेताम्बर मत का प्रारंभ हुआ यह इतिहासकार कहते हैं अब माँ जी एक बात आती है कि आप श्वेताम्बर मत का प्रारंभ हुआ यह इतिहासकार कहते हैं अब माँ जी एक बात आती है कि आप श्वेताम्बर और मैं दिगम्बर मैं अपने दिगंबर पंथ नही छोड़ पाउंगी और आप श्वेताम्बर पंथ भी नहीं छोड़ पायेंगी अब हम दोनों को एक ही जगह तो रहना है अब जब हम लोगों को एक ही जगह रहने है मम्मी तो आप और हम लड़ तो नहीं सकते कल्पना ने कहा बेटी अपन लड़ करके अपना रिश्ता क्यों तोड़ेगे। लेकिन यह बात तुमने तो कही है यह बात आज तक मैंने दोनों चीजें नहीं सुनी पर ये जो इतिहास की तो चार पांच किताबें मुझे बता रही हो तो इस पर तो मुझे यकीन आ रहा है। कल्पना ने कहा कि यह बात तो सही है मुझे भी कहानी में ऐसा लग रहा है कि यह कहानी अगर सही होती तो कोई इतिहासकर इस कहानी को भी तो अपनी इतिहास की पुस्तकों में स्वीकार करता।

कहानी ने कहा कि माँ जी एक सवाल और पैदा होता है कि जब स्थविर कल्पी के

पास शिवभूति गया तो स्थविर कल्पियों ने यह कहा कि पहले नग्न दिगंबर जिनकल्पी साधु हुआ करते थे तो जिनकल्पी जब पहले दिगंबर हुआ करते थे तो यह बात तो सिद्ध हो गई कि श्वेताम्बर के पहले दिगंबर पंथ था तब वो कपड़े में आए आपके ही कहानी इस बात के लिए कह रही है अब इससे बात सिद्ध हो रही है माँ साहबा कि पहले दिगंबर थे जिनकल्पनी थे और वो रहे हैं जब कल्पना ने एक बात कही एक बात और मैंने सुनी है जंबूस्वामी के बाद कोई भी जिनकल्पनी नहीं हुआ। क्योंकि जिनकल्पनी का विच्छिन्न हो गया ऐसे हमारे जिन भद्रगणी आचार्य ने लिखा है मैं बहुत सहज भाव से पढ़ती हुँ बेटी कहानी और श्वेताम्बर के पूरे शास्त्र पढ़ने के बाद मैं यह बात कह रही हूँ लेकिन एक बात है कहानी ने कहा माँ साहब कि भगवान तीर्थंकर की वाणी प्रमाणित होती है या किसी आचार्य की वाणी मगर जब भगवान महावीर स्वामी ने जिनकल्प छेद की बात नहीं कही तो मां साहब एक बात मेरे दिमाग में नहीं आ रही है कि वो कौन से पच्चीसवें तीर्थंकर हो गये जिसने यह घोषणा कर दी हो कि जिनकल्पी का उच्छेद हो जाएगा अब जिनकल्पी के संबंध में भी मम्मी मैं तुम्हारे शास्त्र पढ़ती रहती हूं उसमें भी लिखा है कि जिनकल्पी नग्न दिगंबर रहते थे फिर जिनकल्पी के भी दो भेद कर दिए पाणी पात्र और दिगंबर रहने वाले और एक पाणी पात्र के बिना वस्त्र और पात्र रखने वाले तो ये जिनकल्पी कहां से आ गये इसका मतलब होता है अचेलक शब्द का ही अर्थ और नग्न शब्द का अर्थ ही आपकी यहाँ कहीं भ्रमित हो चुका होगा। श्वेताम्बर पंथ में जिसका अर्थ बदलने की बहुत ज्यादा कोशिश की और सुविधा का मम्मी थोड़े ऐसा जैसे किसी को अगर मान लीजिए बिना सीढ़ी के ऊपर चढ़े बिना फल नीचे ही मिल जाए तो ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो वृक्ष पर चढ़कर के फल को ग्रहण करेगा। इसलिए मुझे ऐसा लगता है मम्मी कि जब कपड़े की सुविधा मिल गई हो जिन साधनों को तो वो छोड़ने वाले नहीं थे आपकी कहानी पर जो सवाल पैदा हुए इतिहास की जो हमें घटना प्राप्त हुई उससे ऐसा लगता है कि मम्मी ! निश्चित तौर पर दिगंबर पंथ प्राचीन है और श्वेताम्बर पंथ बाद में आया। कहानी की बात सुनकर के बहुत गहरे चिंतन में कल्पना डूब गई जब कल्पना डूब गई तो उसके चेहरे पर बार बार कहानी देखती रही और कहानी में चेहरा देखकर के कहा मम्मी मम्मी क्या हुआ कुछ तो बोलो ना नहीं बेटा अब मैं कुछ बोल नहीं सकती हूँ क्योंकि तुम्हारे तर्क और जो प्रमाण दिए हैं वो तर्क और प्रमाण दोनों चीजों को सुनकर के मैं अवाक हो गई हूँ मुझे भी यह लगने लगा है आज मेरा निर्णय हो गया कि सचमुच मैं दिगंबर प्राचीन है और श्वेताम्बर अर्वाचीन है क्योंकि वेद में भी नग्नता कि बात मिलती है उपनिषदों में मिलती है पुराणों में मिलती है कि नग्न रूप से साधु साधना करते हैं और लज्जा को ढ़कने के लिए ही कपड़े पहने जाते हैं कपड़े ठंड बाधा आदि रोकने के लिए पहने जाते हैं ऐसा आचार अंग में भी हमने सुना है इसलिए मैं यह कह सकती हूं कि सचमुच में कहानी पर उठे तेरे सवाल पर मैं नाजवाब हूँ मैं जबाव नहीं दे सकती हूँ अब हम अपने गुरु महाराज से समझेंगे फिर अपन बैठकर चर्चा करेंगे।

हमारे गौरव

जैनेन्द्र सिद्धांतकोष के कर्त्ता क्षुल्लक सिद्धांतसागर

जैनेन्द्र सिद्धांतकोश, शांति पथ प्रदर्शन एवं नयदर्पण आदि अमरकृतियों के रचनाकार के रूप में जैन जगत में सुविख्यात हैं श्री जिनेन्द्र वर्णी जी। इनका जन्म पानीपत के सुप्रसिद्ध विधि-विद्वान् श्री जय भगवान जैन एडवोकेट के यहां 14 मई 1922 को हुआ। ये अत्यंत कुशाग्र बुद्धि के धनी थे।

लगन और विघन: जिनेन्द्र कुमार ने पानीपत में ही सन् 1937 में मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपनी जन्मभूमि में उच्च शिक्षा का उचित प्रबंध न होने से अध्ययन हेतु दिल्ली चले गये। किन्तु वहां की जलवायु अनुकुल न होने से क्षयरोग ने स्वागतकर दिया। सन् 1938 में चिकित्सार्थ मिरज गये। यद्यपि रोग का प्रकोप तीव्र होने से बचने की आशा नहीं के बराबर ही थी, पर दृढ़ संकल्प शक्ति से स्वयं को रोगामुक्त कर लिया, मात्र 20 माह में 4 ऑपरेशन कराये गये और एक फेफड़ा निकाल दिया गया। इससे शरीर सदा के लिए क्षीण अवश्य हो गया। तब भी चिकित्सकों के आग्रह को ठुकराते हुए न तो मांस-अण्डे को सेवन किया और न ही सेनेटोरियन औषधि का। पूर्ण स्वस्थ न होने के कारण आपको घर पर ही रहकर आगे का अध्ययन करना पड़ा। अतः घर पर ही इलेक्ट्रिकल और रेडियो इंजीनियरिंग के पूरे कोर्स का गहन अध्ययन किया।

आजीविका: स्वाध्यायी विद्यार्थी के रूप में अध्ययन के उपरान्त पानीपत को ही आजीविका का केन्द्र बनाया। कलकत्ता के एम.ई.एस में इलेक्ट्रिक और रेडियो इंजीनियरिंग के बड़े जटिल कार्यों के ठेके लेकर वहां के इंजीनियरों को चकित कर दिया।

धार्मिक रूचि: अगस्त सन् 1947 में पर्युषण पर्व में अपने पिता श्री का प्रवचन सुना तो आपकी रूचि धर्म की ओर मुड़ गयी। पानीपत के ही प्रसिद्ध विधि-वेत्ता एवं धर्मज्ञाता श्री रूपचंद्र गार्गीय की प्रेरणा और सहयोग से स्वाध्याय आरंभ किया। सन् 1958 तक सकल जैन वाङ्मय तथा षट्दर्शन का गहन अध्ययन कर आवश्यक संदर्भों को रजिस्टरों में लिखा। धार्मिक रूचि के कारण अध्ययन काल में ही साधु समभाग करते रहे सन् 1952 में चार माह तक सत्संगति के उपरान्त घर आये तो घर में न रहकर मंदिर में रहने लगे। छोटे भाइयों का व्यापार डगमगाने लगा। अपने अनुजों के प्रति उत्तरदायित्व निर्वाह करने हेतु सन् 1954 में पुनः कलकत्ता गये और निःस्वार्थ भाव से सहयोग कर व्यापार में उनके विचलित होते कदमों को स्थायित्व प्रदान किया।

विरक्ति की ओर: निरंतर वृद्धिंगत धार्मिक रूचि तथा वैराग्य के परिणाम स्वरूप सन् 1957 में ईसरी में रहते हुए पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी का 3 माह का सान्निध्य पाया तभी ब्रह्मचर्य प्रतिभा ग्रहण कर ली।

आचार्य श्री विमलसागर जी से सन् 1961 में ईसरी में ही क्षुल्लक दीक्षा अंगीकार कर उत्कृष्ट श्रावक बन गये।

धर्म प्रभावना: क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी जी बाल्यकाल से ही एकान्तप्रिय और अन्तर्मुखी थे। आत्मसाधना का एक लक्ष्य होने से वे अपनी योग्यताओं के प्रदर्शन को बाधक समझते थे। उनका विश्वास था कि गुप्त व गूढ़ साधना ही कल्याणमार्ग पर अग्रसर करती है। सुगंध इतनी फैली कि भक्त भ्रमर उनके निकट मडंराने लगे। उनके प्रेम पूर्ण आग्रह को वे ठुकरा न सके। फलस्वरूप आपने

मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, ईसरी, इंदौर, नसीराबाद, अजमेर, बनारस, रोहतक तथा अन्य अनेक नगरों पर रहकर धर्मोपदेश द्वारा जनता को सुसंस्कारित किया। कुछ समय उपरांत उन्होंने बलपूर्वक अपनी इस भ्रमणवृत्ति पर प्रतिबंध लगाकर एकान्त साधना को ही अपना लक्ष्य बना लिया। अब वे पानीपत या रोहतक में रहते हुए भी अधिकतर ध्यान निमग्न रहने लगे।

साहित्य-साधना: क्षुल्लक जैनागम के गहन अध्येता, मौलिक चिन्तक और विचारक थे। उन्होंने साम्प्रदायिकता से परे अत्यंत गूढ तात्त्विक रहस्यों की अत्यंत सरल सुबोध शैली में आधुनिक युग के वैज्ञानिक दृष्टांतों से उद्धरित किया। उनके द्वारा रचित प्रकाशित ग्रंथ हैं।

1. शांति पथ प्रदर्शन- यह आध्यात्मिक ग्रंथ है। इसमें विभिन्न स्थानों पर दिये गये उनके विद्वत्तापूर्ण एवं रहस्यात्मक प्रवचनों का संकलन है।

2. नयदर्पण- यह स्याद्वाद या नय विषयक ग्रंथ है। इसमें 750 पृष्ठ हैं।

3. पदार्थ विज्ञान- 280 पृष्ठीय जैन दर्शन का विशिष्ट ग्रंथ।

4. कर्म रहस्य- कर्मों का रहस्य की विशद किन्तु सरल विवेचना।

5. कर्म सिद्धांत- जैन दर्शन के अनुसार 150 पृष्ठों में परिसाम्सप्य कर्म सिद्धांत का विवेचन।

6. कुन्द कुन्द दर्शन- इसमें अध्यात्म का उपदेश है

7. सत्यदर्शन- वेदांत का परिचयात्मक ग्रंथ अथवा जैन दर्शन की वस्तु व्यवस्था की प्रतिकृति।

8. सर्वधर्म समभाव- साम्प्रदायिक समभाव पर मौलिक चिन्तनपूर्ण आलेख।

9. प्रभुवाणी- जीवन विकास में महनीय योगदान करने वाली सूक्तियों का संग्रह।

10. अध्यात्म लेखमाला- जैन धर्म विषयक लेखों का संग्रह।

11. महायात्रा- क्षणिकवाद की जैन दर्शन के अनुकूल व्याख्या।

12. श्रद्धाबिन्दु- समाज शास्त्र पर आधारित यह कृति अप्रकाशित है।

13. जैन सिद्धांत शिक्षण- जैन तत्व ज्ञान के लिये प्रवेशिका स्वरूप।

14. उपासना- पूजाओं का संग्रह।

15. वर्णी दर्शन- वर्णी जीवन गाथा का संक्षिप्त संस्करण।

16. समणसुत्तं- आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा से जैन धर्म की सर्वमान्य पुस्तक, जिसमें 756 गाथाओं में जैन धर्म का सार समाहित है।

17. जैनेन्द्र सिद्धांत कोश- जैन वाङ्मय का वर्णानुक्रम से संयोजित अनुपम कोश। जिसे भारतीय ज्ञानपीठ ने प्रकाशित किया। क्षीणकाया से ज्ञानाराधना और लगन का चमत्कारिक परिणाम।

असाताकर्म के तीव्रोदय से इन्हें क्षुल्लक पद का परित्याग करना पड़ा तब आप सामान्य श्रावक के रूप में रहते हुए भी अपने व्रतों को परिपूर्ण रीति में पालन करते रहे।

अंत की साधना: सन् 1973 में आपके मन में पुनः वैराग्य भाव उदित हुआ। संयोग से उस समय आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ ईसरी में विराजमान थे। तब आपने 21 अप्रैल 1973 को आचार्य श्री से क्षुल्लक दीक्षा ली। अब आप क्षुल्लक सिद्धांतसागर के नाम से अभिहित हुए। इन्हीं के सान्निध्य में आप अंतिम समय की साधना में रत रहे। जिससे क्रमिक सल्लेखना को करते हुए 24 मई 1973 को आपने इस विनश्वर शरीर का विसर्जन जीर्ण तृणवत् कर दिया।

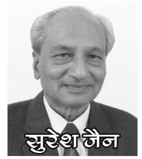

क्रमांक-48 वरिष्ठ नागरिक

वर्तमान का आनंद लें और खुश रहें

भविष्य की उधेड़ बुन में बुजुर्ग उस चीज का आनंद नहीं उठा पाते जो वे वर्तमान में कर रहे होते हैं। बुजुर्ग होने का मतलब यह नहीं कि सब कुछ राम भरोसे छोड़ दो। आज का दिन उस व्यक्ति के लिए बना है, जो सृजनात्मक रवैया अपना लेता है। आशावादी विचार दिन को महान बना देते हैं। मत सोचो आप बूढ़े हो गये हैं।

कल किसने देखा है: शिक्षा, शक्ति व धन जीवन को सफल बनाने में सहायक अवश्य हैं, पर सबसे महत्वपूर्ण समय का मूल्य है। संस्कृत में एक कहावत है **शुभस्य शीघ्रम्** यानी अच्छा कार्य शीघ्र कर डालो। कल किसने देखा है। संसार का प्रत्येक मनुष्य स्वभाव से कोई न काई अच्छा कार्य करना चाहता है, परंतु काम को कल तक टालने की वृत्ति उसे ऐसा नहीं करने देती। यही टालू वृत्ति सर्वत्र पाई जाती है, चाहे घर हो या दफ्तर। यही वाक्य सब जगह सुनने को मिलता है **कर लेंगे बहुत टाइम है कर लूंगा** आप तो मेरे पीछे पड़ गये हैं। टालने की वृत्ति से कई बार व्यक्ति सुअवसर खो देता है। परिणाम स्वरूप मन में ग्लीन उत्पन्न होती है। इसलिए जो भी अच्छा काम करना है आज ही कर लीजिए, कल किसने देखा है। जिसने यह सीख लिया उसने जीने की कला सीख ली।

प्रातः उठकर यह शब्द कहेः- यह वह दिन है जिसे प्रभु ने मेरे लिए बनाया है, हम इसमें आनंद लेंगे। प्रसन्न रहेंगे। आज का दिन पकड़ लेना चाहिए, केवल 24 घंटे है जो शीघ्र ही गायब हो जायेंगे। प्रत्येक दिन आपकी आयु का एक छोटा सा भाग है, जो परमात्मा ने शुभ कर्म करने के लिए आप को उपहार स्वरूप दिया है। इसलिये प्रत्येक पल का सदुपयोग करें।

परमात्मा से आज माँगो और सौभाग्य से जब आपको दे तो उस दिन का पूरा कार्यक्रम बनाओ। संकल्प कर लो कि चाहे कोई झटका लगे, चाहे हमारी कितनी भी आयु हो गई है, हम वर्तमान का आनंद लेंगे।

आज का दिन आपका और मेरा है, हमें इसे संभालना है और प्रयत्न करना है कि प्रत्येक घटना से सर्वोत्तम परिणाम हासिल किया जाये। हताशा में आशा और पराजय से विश्वास पैदा करें। प्रत्येक के पीछे कोई लाभ अवश्य छिपा होता है।

उत्साही बनने का एक तरीका है- रचनात्मक चिन्हों को देखना। किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना आपको रचनात्मक ढंग से करना होगा और उस पर आगे काम करना होगा।

- कैसी भी परिस्थिति हो, उत्साही बनो।
- रचनात्मक पक्ष देखो।
- सर्वोत्तम की आशा करो।
- अपने पर विश्वास करो।
- यह विचार रखो कि मैं बदलाव ला सकता हूँ।

कोई नहीं जानता कि आज का दिन अपने साथ क्या लायेगा, परंतु आप यह सोचे कि आपका केवल एक ही दिन है। कोई अन्य दिन इसके समान नहीं हो सकता, परंतु इस दिन में सुनहरा अवसर छिपा हो सकता है। शायद हमारे जीवन का सबसे बड़ा अवसर जो पूरे शेष जीवन को प्रभावित कर सकता है। सजग रहें क्योंकि वह सुनहरा अवसर कभी भी आ सकता है। हर नये दिन के अनमोल मूल्य को पहचाने, हो सकता है अगले ही पल आपके भीतर छिपी शक्तियाँ सक्रिय हो जायें।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की प्रथम समाधि दिवस पर सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं चरण प्रतिष्ठा सम्पन्न

चंद्रगिरि डोंगरगढ़-आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के आशीर्वाद से निर्यापक मुनि श्री समतासागर जी महाराज, मुनि श्री आगमसागर जी महाराज, मुनि श्री पुनीतसागर जी महाराज, आर्यिका श्री गुरुमति माताजी, आर्यिका श्री दृढमति माताजी आदि 80 माताजी, एलक श्री निश्चयसागरजी, एलक निजानंद सागर जी, एलक श्री धैर्यसागरजी तथा सैकड़ों ब्रह्मचारी भाई एवं बहनों के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 2 फरवरी से 6 फरवरी तक सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के चरणों की प्रतिष्ठा की गई। जिसमें छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव शाह तथा गृहमंत्री अमित शाह के साथ-साथ अनेक राजनेताओं ने कार्यक्रम उपस्थिती प्रदान की।

आचार्य गुरुवर विद्यासागर महाराज जी के चरण निम्न स्थानों पर हुए मध्यप्रदेश में- पंचबालयति मंदिर इंदौर में- उदयनगर, स्मृतिनगर, प्रतिभास्थली, क्लर्क कॉलोनी,

जबलपुर में- दयोदय, प्रतिभास्थली, रांझी, संगम कॉलोनी, पुरवा, बजनामठ, शास्त्रीनगर, गुरुकुल, लाडगंज।

सागर में- नेहानगर, भाग्योदय, अंकुर कॉलोनी, दीनदयाल नगर, वर्णीकॉलोनी, सागर जेल, अमरपाटन, पिण्डरई, मंडीबामौरा, राहतगढ़, बुढ़ार, कटनी, केवलारी, धनौरा, खनियाधाना, शहडोल, परसोरिया, देवरी, बेगमगंज, चंदेरी, शुजालपुर, आष्टा, गौरझामर, नैनागिर जी, गनेशगंज शाहपुर, पथरिया, तेंदूखेडा (नरसिंहपुर), शाहगढ़, खातेगांव, नेमावर (गौशाला), समदलपुर, जामनेर, करेली, केसली, बांद्री, शहपुरा भिटौनी।

भोपाल में -अयोध्यानगर , मुनिसुव्रतनाथ मंदिर , पंचशीलनगर , बीना, आमगांव करेली, डिण्डोरी।

गुना में-बड़ा मंदिर, त्रिमूर्ति कॉलोनी, विद्यासागर नगर, हनुमान गली, झलोन, नसिया दमोह, गंजमंदिर अशोकनगर, तेंदूखेडा (दमोह), प्राचीन मंदिर खुरई, जबेरा, चरगांव, कंदेली नरसिंहपुर, सहजपुर, द्रोणगिरि, बम्हौरी, लखनादौन, पिपरिया, कोतमा, गढी, तारादेही, मालथौन, चंदेरी, सिलवानी, इटारसी, बरेली, घनसौर, सिवनी, सारंगपुर, पठारी, छपारा, बालाघाट, मंडला, बंडा, छतरपुर, रहली पटनागंज, बंधाजी, जखौरा, स्टेशन मंदिर दमोह, धनौरा, अकोदिया, शीतलधाम विदिशा, पंचायत मंदिर शाहगढ़, पथरिया, गौशाला डिण्डोरी, जामनेर, विद्यासागर स्कूल बंडा, साधिका आश्रम बंडा।

छत्तीसगढ़ में- चन्द्रगिरि डोंगरगढ़, प्रतिभास्थली, चलचरखा, नेहरू नगर भिलाई, रूआ बांधा भिलाई, भिलाई, अकलतरा, लाभाण्डी रायपुर, टैगोरनगर रायपुर,

बिलासपुर में- आदिनाथ मंदिर, सरखण्डा, संतविहार, गीदम, जगदलपुर, कोरवा, तिल्दा नेवरा, मनेन्द्रगढ़, पद्मनाभपुर, वैकंठपुर, अंबिकापुर, चिरमिरी, पैंड्रा, दुर्ग, छुईखदान।

महाराष्ट्र में- परवारपुरा नागपुर, चन्द्रप्रभ मंदिर नागपुर, सूर्यनगर नागपुर, रामटेक, सांगली, संभाजी नगर में- सिडको, शिवाजीनगर, सैतवाल मंदिर, कोपरगांव, पूणे, माडगांव,

नाद्रे, अमरावती, मुक्तागिरि, पारोला, गोदियां, मैहशाल, पारसिवनी, हराल, शिरूर लातुल, परभणी, संस्कारधाम मुंबई।

राजस्थान में - रामगंज मंडी, बोराव, आदिनाथ मंदिर किशनगढ़, केकड़ी, कलेंजरा, बडोदिया, नौगामा, घाटोल, बागीदौरा, आंजना, अरथूना, सोनी जी नसिया अजमेर, पार्श्वनाथ मंदिर अजमेर, कुली सिकर किशनगढ़, दादिया ग्राम,किशनगढ़, ब्यावर, कुन्हाडी, आदिनाथ मंदिर कोटा।

उत्तरप्रदेश में -प्रतिभास्थली ललितपुर, बड़ा मंदिर ललितपुर, आदिनाथ मंदिर, ललितपुर, झांसी, बनारस, गाजियाबाद, मेरठ, मंडावरा, बरेली, सहारनपुर-2, हस्तिनापुर, लखनऊ, मुरादाबाद।

दिल्ली में- शांतिनाथ मंदिर, महासभा कार्यालय, आदिनाथ मंदिर।

झारखंड में- ईसरी, तेलंगाना हैदराबाद, तमिल- चेन्नई,

कर्नाटक में- बेंगलोर, सदलगा-2

गुजरात में- निर्णयनगर अहमदाबाद, शाहपुर अहमदाबाद, नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सूरत, संभवनाथ दिगम्बर जैन मंदिर तारंगा, विघ्नहर पार्श्वनाथ मंदिर, महुवा

हरियाणा में- रेवाड़ी, यमुनानगर, चंडीगढ़ के साथ-साथ विदेश लंदन में भी चरण स्थापित किये गये।

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी, णमोकार तीर्थ, चैतन्वयवन की 3 बसों द्वारा यात्रा सम्पन्न

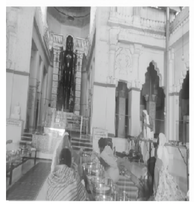

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर के द्वारा ब्र. जिनेश मलैया जी के निर्देशन में 180 लोगों की तीर्थ यात्रा सिद्धक्षेत्र, मांगीतुंगी, णमोकार तीर्थ, श्री चैतन्वय वन के दर्शन पूजन से भक्ति भाव पूर्वक संपन्न हुई, सभी सम्मिलित सदस्यों ने मांगीतुंगी पर्वत की वंदना, ऋषभगिरि पर्वत पर 108 फिट भगवान ऋषभनाथ जी की प्रतिमा के दर्शन एवं तलहटी में स्थित बड़े मंदिर जी में कल्याण मंदिर विधान संपन्न किया। इस तीर्थ यात्रा का पुनीत अवसर पंचबालयति मंदिर के आधार स्तंभ ब्र. सुरेश मलैया जी की 60वें जन्म दिवस के अवसर प्राप्त हुआ, इसी यात्रा में ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. नितिन भैया खुरई, ब्र. रजनीश भैया, ब्र. किरण दीदी, ब्र. पद्मा दीदी, डॉ. मुकेश जैन (विमल), डॉ. सुबोध मारौरा, डॉ. अल्पना शुभि मारौरा, अभिषेक जैन मुंबई, अभिषेक जैन (रिंकू) आदि साधर्मी भाई बहनों ने धर्मलाभ लिया।

एपेन्डेक्स स्वस्थ्य जीवन का तराजू एपेन्डिसाइटिस रोग, रोग कारण व नियंत्रण उपाय

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

एपेन्डिसाइटिस रोग 5 से 40 वर्ष की उम्र के बीच में अधिक होता है लेकिन किसी भी उम्र में हो सकता है। लगभग 10-15% लोगों में किसी समय यह हो सकता व इसका प्रतिशत दिनों दिन वृद्धि बढ़ रहा है। यह रोग महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक होता है।

शरीर में एपेन्डेक्स वर्मी फार्म (रेंगने वाली कीड़े के आकार) जो छोटी अंग के आकार की नली जैसी होती है, जो बड़ी आंत के आखिरी भाग फूली हुई थैली जिये सीकम कहते हैं जहां छोटी आंत जुड़ती है उस विन्दु के पास से निकलती है यह आंत की तरह चार तहों की बनी रहती है जिसमें काफी मात्रा में लिम्फाइड उत्तक कुछ इंजाईम व माइक्रोबाईओम (Microbiome) पाये जाते। यह शरीर का एक अति महत्वपूर्ण अंग है। एपेन्डेक्स के अंदर मल के छोटे कठोर टुकड़ों, फल व सब्जियों के साबुत कड़क बीज, कोई दूषित हानिकारक बाहरी पदार्थ, ट्यूमर व सूक्ष्म हानिकारक जीवों के कारण रूकावट के परिणाम स्वरूप एपेन्डेक्स में सूजन व संक्रमण से रस रक्त इकट्ठा होकर एपेन्डेक्स का मुंह बंद होकर कभी-कभी फूल जाता है ऐसा होने को उसे एपेन्डिसाइटिस कहते है।

कार्य- 1. पाचन तंत्र को मजबूत बनाना- यह शरीर में सुरक्षात्मक रूप से कार्य करते हुए अपच पदार्थों को ग्रहण करके पचाने में सहयोगी होकर कब्ज को रोकता है। यह शरीर के सेल्यूलोज जो एक प्रकार का कार्बोहाड्रेड का पाचन फाइवर के रूप में करते हुए पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है।

2. इम्यूनिटी तंत्र- एपेन्डेक्स में पाये जाने वाले लिम्फाइड उतक इम्यूनिटी तंत्र को मजबूत व शरीर को इंफेक्सन से लड़ने में मदद करता है।

3. वजन प्रबंधन- यह पेट को भरा रखता हुआ मोटापे से बचाता है, रक्त चाप नियंत्रण, सुगर नियंत्रण और हृदय को मजबूती प्रदान करता है। रक्त को शुद्ध करने में सहायक करता है।

4. पाये जाने वाला सेल्यूलोज मसल्स को मजबूत शक्ति शाली व लचीला बनाता है व सूजन को कम करते हुए मसल्स मे होने वाली कमी की पूर्ति करते हुए होने वाले नुकसान से बचाता है। त्वचा पर चमक लाता है इसके अतिरिक्त अनेकों अति महत्वपूर्ण कार्य करता है।

दर्द के लक्षण- 1. एपेन्डिसाइटिस का दर्द पेट के ऊपरी भाग या नाभि के आस पास शुरु होता है जो रूककर-रूककर आता जाता है, कुछ ही घंटो में दर्द पेट के दाहिने निचले में पहुंच जाता है जहां एपेन्डेक्स स्थित होता है और लगातार दर्द गंभीर हो जाता है। पेट के इस हिस्से में दबाव डालने पर तो यह कोमल होता है और दबाव हटा दिया जाता है तो दर्द तेजी से बढ़ जाता है।

2. रोगी चलते समय या सामने की ओर या दाहिनी ओर झुककर चलता है, रोगी चित्त होकर या दाहिनी ओर करवट लेकर सोता है। चलने खासने में दर्द बढ़ जाता है।

3. बहुत बार (कै) नहीं रहती है, अगर होती है दूसरे दिन शुरु होती व कठिन होने पर (कै) के साथ हिचकी चलना, बहुत प्यास लगना, हल्का बुखार, कब्जिकत, मिचली व गैस संबंधित लक्षण होते हैं।

4. पुरुषों में स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास पेट पर दिखाई देती है पर स्त्रियों में श्वास प्रश्वास कलेजे पर अधिक दिखाई देता है।

5. एपेन्डिसाइटिस का समय पर इलाज न कराने व अनदेखी करने से अधिक समय तक सूजन रहने पर एपेन्डेक्स फट सकता है जो अनेक जटिलताओं को जन्म देकर जान लेवा बन सकता है।

उपचार 1. एजेन्डिसाइटिस दो प्रकार का होता है (क) बार बार होने वाला (Relapsing) इसमें प्रदाह एक बार होकर घट जाता है और फिर हो जाता है। इस प्रारंभिक अवस्था में इलाज व सावधानियों से नियंत्रण सभी चिकित्सा पद्धति से हो जाता है।

(ख) स्थानीय (Localised) उपरोक्त पहले प्रकार के एपेन्डिसाइटिस के इलाज में देरी या सही तरह से निश्चित न होने पर प्रदाह पस पड़ना व फूटने की संभावना बन सकती है जो केवल ऐलोपैथी पद्धति से इलाज करके सर्जरी को टाला जा सकता है, पर कुछ ही लोगों में सफलता मिलती है इसलिये चिकित्सक की सलाह से सर्जरी ही एक मात्र प्रभावी नियंत्रण माना जाता है।

2. इसके लिए कोई निश्चित परीक्षण अभी तक नहीं है मात्र चिकित्सक के निर्देशानुसार सोनोग्राफी कराकर निश्चित किया जाता है।

सावधानियाँ- एपेन्डेक्स की सर्जरी के बाद सामान्य जीवन जी सकते है 1. जिसमें कोई भी तेज शारीरिक गतिविधियों से 2-3 सप्ताह तक दूर रहें, मात्र हल्का व्यायाम योगा, स्टेचिंग नियमित दैनिक चर्या अपनायें।

2. हल्का और आसानी से पचने वाले में फाइबर युक्त भोजन, चावल, गेहूँ, हरी पत्तेदार सब्जियाँ, फल अनाज, सूप, ज्यूस, विटामिन ए. सी, युक्त गाजर, नींबू, संतरा, सलाद, आंवला, दूध थोडी सी मात्रा में देशी घी सूखे मेवेआदि।

3. कब्ज रहना ही इस रोग का प्रमुख कारण है इससे बचने के लिए बाजार के डिब्बा बंद भोजन चिप्स, वर्गर, नूडल्स, पिज्जा, कोल्डड्रिंक, पेय पदार्थों से दूरी बनाना है इसके लिए अभिभावक व जननी का कर्त्तव्य है अपने बच्चों को बचपन से ही नियत समय पर मल त्याग का नियमित अभ्यास होने से रोग से बचा जा सकता है।

4. रोगी को पेट साफ रखने हेतु कभी भी जुलाब नहीं देना चाहिए, एनिमा देना चाहिए वर्तमान समय में मानवीय जीवन प्रकृति से दूर होता जा रहा है जिससे भोजन में सेल्युलोज का अभाव कम होने से एपेन्डेक्स की कार्य क्षमता प्रभावित होकर कम हो रही है जिससे समस्या दिनों दिन बढ़ रही है। अपनी जीवन शैली भोजन आदि में परिवर्तन करके स्वस्थ बलशाली सुदृढ़ शरीर को प्राप्त कर इस रोग से बच सकते हैं।

हास्य तरंग

1. पत्नी मायके गई थी कि अचानक जवान पति के सीने में दर्द हुआ डॉक्टरों की सलाह से ऑपरेशन किया गया। पत्नी मायके से सीधे अस्पताल जाकर डॉक्टर से शंका से पूंछा क्या पति के दिल में और कोई महिला थी ? डॉक्टर ने जबाब दिया हाँ उसी का बायपास किया है।

2. जज ने महिला के गले से मंगलसूत्र खीचने वाले को तीन वर्ष की सजा सुनाई। साथ आये महिला के कवि पति ने पूंछा मंगल सूत्र खीं चने वाले को मात्र तीन साल की कैद और मंगल सूत्र पहिनने वाले को जीवन भर की कैद।

3. एक लड़का स्कूल से घर जल्दी वापिस आ गया। मां ने पूछा इतनी जल्दी क्यों आ गये ? लड़का मैंने मच्छर मार दिया था। मां- तो इतनी सजा क्यों ? लड़का- मच्छर स्कूल की मेडम के गाल पर बैठा था।

4. पत्नी- पति से उत्सुकता से सुनो जी डॉक्टर साहब ने मुझे 15 दिन के आराम हेतु किसी हिल स्टेशन पर जाने की सलाह दी है, हम कहाँ चलेंगे। पति किसी दूसरे डॉक्टर के पास।

5. चुन्नू-दादाजी आप बादाम खाते हो, दादाजी नहीं बेटा मेरे दांत नहीं हैं। चुन्नु- तो दादाजी ये मेरी बादाम रख लों मैं थोड़ी देर खेलने के बाद आपसे ले लूंगा।

संकलनः जिनेन्द्रकुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

रसमलाई

सामग्री

गाय का दूध (छेना बनाने) एक किलो

1 किलो फुल क्रीम दूध

शक्कर दो कटोरी लगभग (केसरी दूध में मिलाने के लिये व पानी में पकाने के लिये)

फिटकरी पौना चम्मच

केशर दस पत्तियाँ

विधि- 1 किलो गाय के दूध या टोन्ड दूध को उबाल लीजिये। फिर नींबू रस या फिटकरी से पनीर बना लीजिये। बिल्कुल वही तरीका जो रसगुल्ले का है। उसी तरीके से फाड़ना है। दूध में उबाल आते ही फिटकरी का पानी डाल लीजिये व पनीर फटते ही एक गिलास ठंडा पानी डालिये व छेना की पोटली से निकालकर बिखेर लीजिये मक्खन जैसा हो जायेगा। अब एक तरफ कुकर में तीन कटोरी पानी व एक कटोरी शक्कर डालकर उबाल लीजिये।

एक किलो फुल क्रीम दूध में केशर डालकर पकाये व शक्कर डालिये उसमें 1/2 आधा कटोरी जब पक जाये गैस बंद करिये। उसमें 1/2 कटोरी जब पक जाये गैस बंद करिये। आपका केसरी दूध तैयार है अब इसे ठंडा होने रख दीजिये।

जैसे ही कुकर में पानी उबल जाये, तब उसमें छेना की छोटी-छोटी टिक्की या बॉल्स बना कर डालें व कुकर को बंद करके दो सीटी लगा दे। कुकर में सीटी लगायें और कुकर खुलने पर इन टिक्कियों को केसर वाले दूध में डाल ले। स्वादिष्ट रसमलाई तैयार है। ऊपर से पिस्ता बादाम बुरक कर सजा लीजिये। यदि शक्कर नहीं डालनी है तो मत डालिये फीकी भी चला सकते है।

बाल कहानी

विनम्र मंत्री

ग्वालियर शहर के विनयनगर में जब मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर का दौरा चल रहा था लोग उनके स्वागत मेंमाला लिए खड़े थे और नारे लगाये जा रहे थे हमारा नेता कैसा हो प्रद्युम्न भैया जैसा हो नारे सुनते ही रोड़ पर भीड़ एकत्रित हो गई। भीड़ देखकर सभी कार्यकर्त्ता बहुत खुश हो रहे थे। जगह जगह पर भव्य द्वार लगे हुए थे। मंत्री महोदय विनय नगर की जनता को संबोधित करने वाले थे विनय नगर के पार्षद भी बहुत खुश हो रहे थे और वे सोच रहे थे अबकी महानगर निगम को चुनाव में टिकट हमें ही मिलेगा।

जब यह सब कार्यक्रम की आपाधापी चल रही थी तभी एक महिला बड़े ही जोश में चली आ रही थी वह सीधी मंत्री महोदय की ओर अपने कदम बड़ा रही थी तभी सचिन राजपूत ने एक माला महिला के हाथ में दी और कहा दीदी यह माला लो और आप मंत्री जी के गले में डालकर उनका स्वागत कर दीजिए दामनी प्रजापति के रूप में पहचान रखने वाली महिला ने कहा भैय्या ये माला तो आप रखिये मैं स्वागत करने नहीं आई मैं तो अपनी समस्या पर मंत्री जी से दो बातें करने आई हूँ दामनी की आँखों का तेवर देखकर सचिन डर गया और उसने कहा सब लोग जरा दूर हट जाइये दीदी की मंत्री जी से बात कर लेने दो सचिन की आवाज सुनकर भीड़ ने दामनी रास्ता दे दिया।

दामनी ने मंत्री जी से कहा भैय्या आप सबके काम कर रहे हो हम से आपको ऐसी कौन सी नाराजगी जो आप हमारा फोन तक नहीं उठाते और दामनी ने खरी खोटी सुनाना शुरु कर दिया हमारे इलाके में पानी भर रहा है पूरा मोहल्ला बीमारी की चपेट में आ रहा है और हम लोग पूरी बरसात परेशान हो रहे हैं आप लोग स्वच्छ भारत का ढ़िढोरा पीटते हो हम लोग अपनी समस्या किसके सामने रखें आखिर मुझे बात तो समझा दें। मंत्री जी ने महिला के पैर छुए और कहा दीदी हमसे बहुत बड़ी गलती हुई है जो हम विनयनगर पर ध्यान नहीं दे पाये आप मुझे क्षमा करें आपकी समस्या का समाधान आज ही होगा मंत्री की विनम्रता देख दामनी का क्रोध अपने आप ठंडा पड़ गया।

संस्कार गीत

जीते नहीं विकार

जिसने लज्जा जीत नपाई
जीते नहीं विकार
उसने कपड़े तन पर धारे
धारा शिथलाचार

1.
प्रकृति रूप निर्ग्रथ दिगम्बर नग्न रहे निर्दोष
काम क्रोध मह लोभ जीतकर
जीते राग अरू दोष
ठंडी गर्मी सहन करें सब पालें श्रमणाचार

2.
संत दिगम्बर की चर्या लख
चकित सभी हो जाएं
एक बार जल भोजन लेते निज में ही रम जाते
केशलोंच कर बहुतप करते मेंटे मिथ्याचार

3.
वसन वासना त्यागी जिनने
उनका यश चहुँ ओर
भूख प्यास सर्दी गर्मी सह
करें तपस्या घोर
ख्याति लाभ से दूर रहें गुरु पालें पंचाचार

बाल कविता

मंत्र जाप में खोना है

मोती मोती मिलकर
माला सुंदर बनती है
आठ एक सौ की माला
हाथों में जब फिरती है
ओंठ जीभ से मिलकर होती
णमोकार की जाप है
माला फेरा जब भी तुम तो
तजना मन के पाप है
माला के हर मनका में
मन का पावन होना है
जग की उलझन भूला भैया
मंत्र जाप में खोना है

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

दिल्ली-आचार्य आदित्यसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. राजू भैया को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर गली छोटा बाजार शहदरा दिल्ली में 23 फरवरी 2025 को एलक दीक्षा दी गई जिनका नाम एलक आनंद सागर जी महाराज रखा गया।

समाधिमरण

धुलिया (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री विरागसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री विश्वबंधसागर महाराज का समाधिमरण 23 फरवरी 2025 को दोप. 1.45 बजे गणधर मुनि विवर्धन सागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में धुलिया महाराष्ट्र में हुआ।

धुलिया (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री विरागसागर महाराज जी के शिष्य क्षुल्लक श्री विश्वबंधुसागर महाराज का समाधिमरण 23 फरवरी 2025 को सांय 7.15 बजे गणधर मुनि विवर्धन सागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में धुलिया महाराष्ट्र में हुआ।

बहराईच (उ.प्र.)- गणिनी आर्यिका विध्यश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका सुपर्वश्री माताजी का समाधिमरण 18 फरवरी 2025 को बहराईच (उ.प्र.) में हुआ।

सम्मेदशिखर- मुनि श्री अतुलसागर जी गृहस्थावस्था के पिता श्री धन्नालाल जी मंडीबामौरा वालों का सम्मेदशिखर वंदना करते हुए मुनिसुव्रतनाथ भगवान मोक्ष कल्याणक के दिन 25 फरवरी 2025 को समाधिमरण हुआ।

- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी की आज्ञानुवर्ती शिष्या आर्यिका श्री श्रुतमति माताजी का समाधिमरण 13 फरवरी 2025 को हुआ।

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन उदासीन श्राविका आश्रम समवशरण मंदिर की अधिष्ठात्री ब्र. लीला बहन जी का समाधिमरण 18 फरवरी 2025 को रात्रि 3.10 बजे णमोकार मंत्र पढ़ते पढ़ते हुआ।

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

सागर- केन्द्रिय जेल सागर में निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर महाराज एवं आर्यिका गुणमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में 15 फरवरी से 19 फरवरी 2025 तक सिद्धचक्र महामंडल विधान ब्र.धीरज भैया राहतगढ़ के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

ब्रह्मचारी धीरज भैया को भारत गौरव से सम्मानित

सागर-निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड लंदन द्वारा बाल ब्रह्मचारी धीरज भैया राहतगढ़ को भारत गौरव की उपाधि से सम्मानित किया।

वर्ग पहेली 305

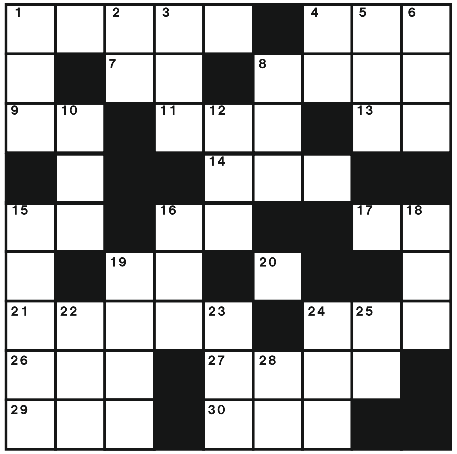

बाये से दाये

1. मुनिचर्या का एक आवश्यक, दोषों की निंदा नहीं -5
4. अच्छी पद्धति, श्रेष्ठ विधि -3
7. घमंड, अहं -2
8. टंकार -4
9. शिशिर ऋतु का पहला माह -2
11. आँख, चक्षु -3
13. धूल -2
14. घर, भवन, आलय -3
15. टुकड़ा, बारीक हिस्सा -2
16. वेद वर्णित एक जाति, मौर्यकालीन मुद्रा -2
17. उषमा, गरमाहर, बुखार -2
19. हाथ, टेक्स -2
20. जो अर्थ रखने वाला संस्कृत शब्द -1
21. राम मंदिर निर्माण के स्वयंसेवक -3
24. लोल कल्लोल तरंग -3
26. मगर घड़ियाल -3
27. नमक प्रधान पकवान -4
29. रमण करने का भाव, लीन होना -3
30. डोली उठाने वाले -3

ऊपर से नीचे

1. मूर्ति, आदर्श, बिम्ब श्रावकाचार के क्रम -3
2. पद, चरण, कदम -2
3. काम, श्री कृष्ण जी का एक नाम -3
4. जल्दी सुनने का भाव -2
5. विजातीय द्रव्य, विशेष कार्य -3
6. धैर्य, धीर -3
8. रूक रूककर लघुशंका का आना -3
10. रगड, घिसना -2
12. खाड़ी का एक देश इजरायल का पड़ौसी -3
15. कान का मैल -5
16. पर्व, पौर, गॉठ -3
18. चार घड़ी का काल खंड, याम -3
19. कचेरन, कॉसे का काम करने वाली -4
22. रूपया, पैसा, धन, गहना -3
23. सोना धतूरा -3
24. रेखा लाईन -3
25. हिंसा का पर्यायवाची मारने का अर्थ -2
28. बड़ा विशाल -2

वर्ग पहेली 304 का हल

1 वि	म	2 ल	3 ना	4 थ		5 व	6 म	7 न
द्या		8 त	ग	मा		9 र	ह	म
10 सा	थ			11 ना	र	द		
12 ग	न		13 स		स			14 प
र		15 म	हा	न		16 ब	17 क	री
18 म	द	न			19 मः		स	
20 हा	र		21 रा	22 का		23 शा	बा	24 श
रा		25 र	त	न		ब		र
26 ज	हा	ज		27 न	ज	र	बं	द

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

हमराही

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

आचार्य गुरुवर विद्यासागर महाराज के चरणों की प्रतिष्ठा करते हुए

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच पुरुस्कार शिरपुर में विराजित संत समूह

डोंगरगढ़ में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी
का प्रथम समाधि दिवस मनाते हुए मुनि आर्यिका संघ

मांगीतुंगी में भगवान की
शांतिधारा करते हुए

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-3193601, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 27/02/2025, पोस्टिंग दिनांक : 03/03/2025